
48 वां 48th
राष्ट्रीय फ़िल्म National Film
पुरस्कार Awards
2001

संपादन

बी.बी. नागपाल

Editor

B.B. Nagpal

समन्वय

मनोज श्रीवास्तव

Co-ordination

Manoj Srivastava

सहयोग

मंजु खन्ना

कौशल्या मेहरा

पवन कुमार कटारिया

गौरी, नूपुर, अंकित

Assistance

Manju Khanna

Kaushalya Mehra

Pawan Kumar Kataria

Gauri, Noopur, Ankit

उत्पादन

जी.पी. धुसिया

वी.के. मीणा

विलास पगारे

Production

G.P. Dhusia

V.K. Meena

Vilas Pagare

फ़िल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित।
मुद्रक : तारा आर्ट प्रिंटेर्स, नई दिल्ली-110002

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Tara Art Printers, New Delhi-110 002

No. 2/4/2001 - PP III

2000 Copies

December, 2001

	Page No.	
निर्णायक मंडल	7	JURY MEMBERS
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	11	DADASAHEB PHALKE AWARD
राष्ट्रीय पुरस्कार - एक याद	14	National Film Awards-Best Feature Down The Years
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	16	Dada Saheb Phalke Awardees
48वां राष्ट्रीय पुरस्कार - संक्षेप में	17	Forty Eighth National Awards-In Brief
कथाचित्र पुरस्कार	21	AWARDS FOR FEATURE FILMS
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	22	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	24	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फीचर फिल्म का	26	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का	28	Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
नर्सिस दत्त पुरस्कार		
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	30	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	32	Best Film on Other Social Issues
पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फीचर फिल्म	34	Best Film on Environment Conservation/Preservation
सर्वोत्तम बाल फिल्म	36	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशन	38	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	40	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	42	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	44	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	46	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	48	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	50	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	52	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	54	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	56	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	58	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	60	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	62	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषाकार	64	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	66	Best Music Direction

सर्वोत्तम गीत	68	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	70	Special Jury Award
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन	72	Best Choreography
सर्वोत्तम बंगला फ़ीचर फ़िल्म	74	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिंदी फ़ीचर फ़िल्म	76	Best Feature Film in Hindi
सर्वोत्तम कन्नड़ फ़ीचर फ़िल्म	78	Best Feature Film in Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फ़ीचर फ़िल्म	80	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मणिपुरी फ़ीचर फ़िल्म	82	Best Feature Film in Manipuri
सर्वोत्तम मराठी फ़ीचर फ़िल्म	84	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम तमिल फ़ीचर फ़िल्म	86	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु फ़ीचर फ़िल्म	88	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेज़ी फ़ीचर फ़िल्म	90	Best Feature Film in English
पुरस्कार जो नहीं दिए गए - फ़ीचर फ़िल्म	92	Awards not given - Feature Films

गैर कथाचित्र पुरस्कार

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	93	NON-FEATURE AWARDS
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	94	Award for the Best Non-Feature Film
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय मानवजातीय फ़िल्म	96	The Award for the Best First Non-Feature Film of A Director
सर्वोत्तम जीवनी फ़िल्म	98	Award for the Best Anthropological/Ethnographic Film
सर्वोत्तम कला संस्कृति फ़िल्म	100	Award for the Best Biographical Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फ़िल्म	102	Award for the Best Art/Cultural Film
सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण फ़िल्म	104	Award for the Best Scientific Film
सर्वोत्तम प्रेरक फ़िल्म	106	Award for the Best Environment/Conservation Film
सर्वोत्तम कृषि फ़िल्म	108	Award for the Best Promotional Film
सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्निर्माण एवं संकलन फ़िल्म	110	Award for the Best Agricultural Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फ़िल्म	112	Award for the Best Historical Reconstruction/Compilation Film
सर्वोत्तम शैक्षिक, शिक्षाप्रद फ़िल्म	114	Award for the Best Film on Social Issues
सर्वोत्तम गवेषणा फ़िल्म	116	Award for the Best Educational/Motivational Film
सर्वोत्तम कार्टून फ़िल्म	118	Award for the Best Investigative Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	120	Award for the Best Animation Film
सर्वोत्तम लघु कल्पित फ़िल्म	122	Special Jury Award
परिवार नियोजन पर सर्वोत्तम फ़िल्म	124	Award for the Best Short Fiction Film
सर्वोत्तम निर्देशन	126	Award for the Best Film on Family Welfare
	128	Award for the Best Direction

सर्वोत्तम छायांकन	130	Award for the Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	132	Award for the Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	134	Award for the Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	136	Award for the Best Music Direction
विशेष उल्लेख	138	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए-गैर कथाचित्र	140	Award not given-Non feature films

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार	141	AWARDS FOR THE BEST WRITING ON CINEMA
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक 2000	142	Award for the Best Book on Cinema, 2000
विशेष उल्लेख	144	Special Mention
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक 2000	146	Award for the Best Film Critic 2000
विशेष उल्लेख	148	Special Mention

फ़ीचर फिल्म सारांश	151	SYNOPSIS - FEATURE FILMS
अस्तित्व	152	Astitva
भारती	153	Bharati
चटलेडो आइडी	154	Chatledo Eidee
दमन	155	Daman
देखा	156	Dekha
घरक्षरंगल	157	Gharaksharangal
कडल पूकल	158	Kadal Pookal
कल का आदमी	159	Kal Ka Aadmi
कंडुकोंडेन कंडुकोंडेन	160	Kandukondain Kandukondain
कोचू कोचू संतोषंगल	161	Kochu Kochu Santoshangal
मतदाना	162	Mathadana
मझा-द रेन	163	Mazha - The Rain
मोक्ष	164	Moksha
मुनुडी	165	Munnudi
निला कालम	166	Nilaa Kalam
नुव्वे कावाली	167	Nuvve Kaavaali
ओरू चेरू पुंचीरी	168	Oru Cheru Panchiri
पांडव	169	Pandavas
पुकार	170	Pukaar

रिफ्यूजी	171	Refugee
सायाहन्म	172	Sayahnam
शयनम	173	Sayanam
शान्तम	174	Shantham
स्निप!	175	Snip!
उत्सव	176	Utsab
वानतईपोला	177	Vanathaippola
वेत्रीकोडि कट्टु	178	Vetrikkodi Kattu
जुबैदा	179	Zubeida

गैर फ़ीचर-फ़िल्म सारांश

ए मेमोरी आफ़ द सी	181	A Memory of the Sea
अजीब घर	182	Ajeeb Ghar
अक्कारेनिनु	182	Akkareninnu
बालगंधर्व	183	Balgandharva
भोर	183	Bhor
देवनर्तकन	184	Devanarathakan
फ़्रोम लैंड ऑफ़ बुद्धिज्म टू लैंड ऑफ़ बुद्ध	184	From the land of Buddhism to the Land of the Buddha
इफिल्ट्रेटर्स	185	Infiltrators
लोकप्रिय	185	Lokpriya
महानंदा	186	Mahananda
मीना झा	186	Meena Jha
पश्मीना रॉयल	187	Pashmina Royale
रसिकप्रिया	187	Rasikpriya
स्क्रिबल्स ऑन अक्का	188	Scribbles on Akka
द लैंडस्कैप	188	The Landscape
द नेस्ट	189	The Nest
ट्राइबल वुमैन आर्टिस्ट्स	189	Tribal Women Artists
तुलसी	190	Tulasi
वैदिक गणित	190	Vedic Mathematics
वर्मी कल्चर	191	Vermi Culture
वियरिंग द फ़ेस	191	Wearing the Face

NON-FEATURE -SYNOPSIS

निर्णायक मण्डल

Jury Members

कथाचित्र निर्णायक मण्डल

JURY FOR FEATURE FILM



श्रीमती चित्रा देसाई
Smt. Chitra Desai



श्रीमती वैजयंतीमाला बाली (अध्यक्षा)
Smt. Vyjayanthimala Bali (Chairperson)



श्री धृतिमान चटर्जी
Shri Dhritiman Chatterji



श्री हरिहरन
Shri Hariharan



श्री कोतंडारमैया
Shri Kothandaramaiah



श्री आर. लक्ष्मण
Shri R. Lakshman



सुश्री मधुमिता राउत
Ms. Madhumita Raut



श्री मैक मोहन
Shri Mac Mohan



श्रीमती निवेदिता प्रधान
Smt. Nibedita Pradhan



श्रीमती पार्वती इन्दुशेखर
Smt. Parvati Indusekhar



श्री पवन कुमार
Shri Pawan Kumar



श्रीमती सोनाली वी. कोटनिस
Smt. Sonali V. Kotnis



श्री शशि रंजन
Shri Shashi Ranjan



श्री सुशांत मिश्रा
Shri Susant Mishra



श्री तरुण विजय
Shri Tarun Vijay

गैर-कथाचित्र निर्णायक मण्डल **JURY FOR NON-FEATURE FILM**



श्री जॉन माल्यू मात्तन (अध्यक्ष)
Shri John Mathew Mattan (Chairman)



श्रीमती दीपा कपूर
Smt. Deepa Kapur



श्री सुधीर नंदगांवकर
Shri Sudhir Nandgaonkar

श्री कोना वेंकटराव
Shri Kona Venkatarao



प्रो. (सुश्री) किरण घई
Prof. (Ms.) Kiran Ghai

सर्वोत्तम सिनेमा लेखन
निर्णायक मण्डल

**JURY FOR BEST WRITING
ON CINEMA**



सुश्री भारती प्रधान (अध्यक्ष)
Ms. Bharati Pradhan (Chairperson)



श्री जयंत घोषाल
Shri Jayant Ghosal



श्री प्रकाश दुबे
Shri Prakash Dubey

दादा साहेब Dada Saheb
फ़ाल्के पुरस्कार Phalke Award
2001

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 2000

आज की तारीख में दोनों भोंसले बहनें अपने जीवनकाल में ही एक किंवदन्ती बन गयी हैं और अगर बड़ी बहन लता मंगेशकर को भारतीय गायिकाओं की रानी कहा जाता है तो छोटी आशा को निर्विवाद रूप से गायिकी में विविधताओं की रानी कहा जा सकता है। कभी-कभी तो यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि जीवन के 68 बसंत देख चुकी यह विलक्षण गायिका एक ओर तो अपने से आधी उम्र की कलाकारों को स्वर देती है वहीं दूसरी ओर अपने से बड़ी कलाकारों की भी आवाज बन जाती है।

आशा भोंसले ने अब तक 18 भाषाओं में लगभग 12000 गाने फिल्मी और गैर-फिल्मी गाए हैं। अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण उन्हें 8 फिल्म फेयर, 6 सुर संगम और महाराष्ट्र सरकार के 17 पुरस्कारों सहित अनेक लोकप्रिय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें 1962 और 1992 में सर्वश्रेष्ठ गायिका घोषित किया था। राज्य सरकार द्वारा दिए गए 17 पुरस्कारों में 8 तो लगातार 8 वर्षों में दिए गए।

सांगली में 8 सितम्बर, 1933 को जन्मी आशा अपने पिता की चार पुत्रियों में दूसरी हैं। उनकी दो छोटी बहनों का नाम उषा और मीना और एकमात्र भाई का नाम हृदयनाथ है।

आशा को पहली बार एक मराठी फिल्म *माझा बाला* में पर्दे पर गाने का मौका मिला, जब वह दस वर्ष की थी। फिर 1948 में फिल्म *चुनरिया* में पार्श्व गायन के क्षेत्र में उनका पदार्पण हुआ। जल्दी ही फिल्म निर्माताओं को उनकी आवाज के जादू का आभास हो गया। लेकिन उनकी गायिकी के रास्ते के मील का पत्थर साबित हुआ वर्ष 1957, जब नय्यर साहब की दो-दो फिल्मों *तुमसा नहीं देखा* और *नया दौर* में नायिका के सारे गाने आशा भोंसले ने ही गाए और फिर..... आशा ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

आशा ने समय के हर ताल पर अपने सुरों का संसार रचा। जब 1990 के दशक में पॉप एल्बमों का युग शुरू हुआ तो उन्होंने भी इसमें प्रवेश किया और इस बिल्कुल नयी विधा के साथ भी अपने को एकाकार कर लिया। उस्ताद अली अकबर खान के साथ आशा के एल्बम *लीगेसी* को प्रेमी सम्मान दिया गया। बाद में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकार ब्याय जार्ज के साथ मिलकर उन्होंने *बाउ डाउन मिस्टर* एल्बम के लिए काम किया। पर विलक्षण कलाकारों की कला भावनाएं उपलब्धियों की सीमाएं कहां जानती हैं। अपने पहले एकल एल्बम *आप की आशा* में आशा ने पहली बार संगीत की रचना भी स्वयं की। इसके अलावा उन्होंने *राहुल एंड आई*, *आशा वंस मोर*, *जानम समझा करो* और हाल ही में अदनाम सामी के साथ *कभी तो नजर मिलाओ* जैसे एल्बम बनाए जो आधुनिक संगीत श्रृंखला में अपनी कर्णप्रियता और लोकप्रियता के हिसाब से एक मानक बने हैं।

DADA SAHEB PHALKE AWARD WINNER OF 2000



Both the Mangeshkar sisters are living legends in themselves, and if her sister Lata is known as the Singing Queen of India, Asha Bhosle is easily the Queen of Versatility. It is difficult to believe that this singer, all of 68 years, is able to sing with equal finesse for film artistes who are less than half her age as well as for older heroines. She has sung more than 12000 songs in 18 languages in film and non-film musicals. She has won a large number of popular awards including eight Filmfare, six Sur Sangam, and 17 Maharashtra State award for best singer from 1962 to 1992 of which 8 were in a row.

Born on September 8, 1933 in Sangli, Asha was the second among four sisters (her younger sisters being Usha and Meena) and one brother, Hridaynath. Asha got her chance to sing when she was just ten in the Marathi film 'Majha Bala'. Asha made her playback debut in 1948 with the film Chunariya. Soon, music directors realized the mischievous quality in her voice. Her big break came in 1957 when Nayyar used her to sing the heroine's songs in 'Tumsa Nahin Dekha' and 'Naya Daur'. And she has not looked back since. Asha further widened her horizons in the 1990s by rendering pop albums. Asha's album with Ustad Ali Akbar Khan "Legacy" received a Grammy award. Later, she collaborated with Boy George on the internationally acclaimed single 'Bow down Mister'. She then composed and sung her first solo album 'Aap Ki Asha', and has also recorded other albums like 'Rahul and I', 'Asha Once More', 'Jaanam samjha karo' and recently came out with 'Kabhi To Nazar Milao' with Adnan Sami.

NATIONAL FILM AWARDS

Best Feature Down The Years

Sr. No.	NAME OF THE FILM	Director	LANGUAGE	YEAR
1	Shyamchi-Aai	P.K. Atre	Marathi	1953
2	Mirza Ghalib	Zohrab Modi	Hindi	1954
3	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5	Do Ankhen Barah Haath	V. Shantaram	Hindi	1957
6	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Bengali	1960
9	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11	Shehar aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15	Hatey Bazarey	Tapan Sinha	Bengali	1967
16	Goopy Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18	Samskara	T. Pattabhirama Reddy	Kannada	1970
19	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21	Nirmalayan	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23	Chomana Dudi	B.V.Karant	Kannada	1975

Sr. No.	NAME OF THE FILM	Director	LANGUAGE	YEAR
24	Mrigayaa	Mrinal Sen	Hindi	1976
25	Ghatashraddha	Girish Kasarvali	Kannada	1977
26	No film found suitable for best film award			1978
27	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28	Aakaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31	Adi Shankaracharya	G. V. Iyer	Sanskrit	1983
32	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34	Tabarane Kathe	Girish Kasarvali	Kannada	1986
35	Halodhiya Choraye Baodhan Khaye	Jahnu Barua	Assamese	1987
36	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38	Marupakkam	K.S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40	Bhagvad Gita	G.V. Iyer	Sanskrit	1992
41	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43	Kathapurushan	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1995
44	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45	Thai Saheb	Girish Kasarvali	Kannada	1997
46	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47	Vaanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000

**DADASAHEB PHALKE AWARDS
DOWN THE YEARS**

<i>Sr.no.</i>	<i>NAME OF AWARDEE</i>	<i>VOCATION</i>	<i>YEAR</i>
1.	Ms DEVIKA RANI	ACTRESS-SINGER	1970
2.	B. N. SIRCAR	FILMMAKER	1971
3.	PRITHVIRAJ KAPOOR	ACTOR-FILMMAKER	1972
4.	PANKAJ MULLICK	SINGER-MUSIC DIRECTOR	1973
5.	Mrs SULOCHANA	ACTRESS-SINGER	1974
6.	B. N. REDDY	FILMMAKER	1975
7.	DHIREN GANGULY	FILMMAKER	1976
8.	Mrs KANAN DEVI	ACTRESS-SINGER	1977
9.	NITIN BOSE	FILMMAKER	1978
10.	R. C. BORAL	SINGER-MUSIC DIRECTOR	1979
11.	SOHRAB MODI	ACTOR-FILMMAKER	1980
12.	JAIRAJ	ACTOR	1981
13.	NAUSHAD ALI	MUSIC DIRECTOR	1982
14.	L. V. PRASAD	FILMMAKER	1983
15.	Mrs DURGA KHOTE	ACTRESS-FILMMAKER	1984
16.	SATYAJIT RAY	FILMMAKER	1985
17.	V. SHANTARAM	ACTOR-FILMMAKER	1986
18.	B. NAGI REDDY	FILMMAKER	1987
19.	RAJ KAPOOR	ACTOR-FILMMAKER	1988
20.	ASHOK KUMAR	ACTOR	1989
21.	LATA MANGESHKAR	SINGER	1990
22.	A. NAGESHWARA RAO	ACTOR-FILMMAKER	1991
23.	BHALJI PENDHARKAR	FILMMAKER	1992
24.	BHUPEN HAZARIKA	SINGER-MUSIC DIRECTOR	1993
25.	MAJROOH SULTANPURI	LYRICIST	1994
26.	DILIP KUMAR	ACTOR	1995
26.	RAJ KUMAR	ACTOR	1996
27.	SIVAJI GANESAN	ACTOR	1997
28.	PRADEEP	LYRICIST	1998
29.	B. R. CHOPRA	FILMMAKER	1999

FORTY EIGHTH NATIONAL AWARDS-IN BRIEF

FEATURE FILMS

S.No	Film	Language	Director	Awards Won
1	Astitva	Marathi	Mahesh Manjrekar	Best Feature Film in Marathi
2	Bharati	Tamil	Gnanarajasekharan	1) Best Female Playback Singer (Bhavatharini R.), 2) Best Art Direction (P. Krishnamoorthy), 3) Best Costume Designer (P. Krishnamoorthy), 4) Best Feature Film in Tamil
3	Chatledo Eidee	Manipuri	Makhonmani Mongsaba	Best Feature Film in Manipuri
4	Daman	Hindi	Kalpana Lajmi	Best Actress (Raveena Tandon)
5	Dekha	Bengali	Goutam Ghose	1) Best Feature Film in Bengali, 2) Special Jury Award (Soumitra Chatterjee)
6	Gharaksharangal	Malayalam	Salim Padiyath	Best Children's Film
7	Kadal Pookal	Tamil	Bharathi Raja	Best Screenplay (Bharathi Raja)
8	Kal Ka Aadmi	Hindi	Amol Palekar	Best Film On Family Welfare
9	Kandukonden Kandukonden	Tamil	Rajeev Menon	Best Male Playback Singer (Shankar Mahadevan)
10	Kochu Kochu Santoshangal	Malayalam	Sathyan Anthikkad	1) Best Choreography (G. Kala), 2) Best Feature Film in Malayalam
11	Mathadana	Kannada	T.N. Seetharam	Best Feature Film in Kannada
12	Mazha - The Rain	Malayalam	Lenin Rajendran	Best Lyrics (Yusafali Kechery)
13	Moksha	Hindi	Ashok Mehta	1) Best Cinematography (Ashok Mehta), 2) Best Audiography (Anup Dev)
14	Munnudi	Kannada	P. Sheshadri	1) Best Film on Other Social Issues, 2) Best Supporting Actor (H.G. Dattatreya)
15	Nilaa Kalam	Tamil	A.R. Gandhikrishna	Best Child Artiste (Master Udayaraj)
16	Nuvve Kaavaali	Telugu	K. Vijaya Bhaskar	Best Feature Film in Telugu
17	Oru Cheru Punchiri	Malayalam	M.T. Vasudevan Nair	Best Film on Environment Conservation/ Preservation
18	Pandavas	English	Pentamedia Graphics	Best Feature Film in English

19	Pukaar	Hindi	Raj Kumar Santoshi	1) Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration, 2) Best Actor (Anil Kapoor)
20	Refugee	Hindi	J.P. Dutta	1) Best Music Direction (Anu Malik), 2) Best Lyrics (Javed Akhtar)
21	Sayahnam	Malayalam	R.Sarath	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
22	Sayanam	Malayalam	M.P. Sukumaran Nair	Best Feature Film in Malayalam
23	Shantham	Malayalam	Jayaraj	1) Best Feature Film, 2) Best Supporting Actress (K.P.A.C. Lalitha)
24	Snip!	English	Sunhil Sippy	Best Editing (Suresh Pai & Apurva Asrani)
25	Utsab	Bengali	Rituparno Ghosh	Best Direction
26	Vanathaippola	Tamil	Vikraman	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
27	Vetrikodi Kattu	Tamil	Cheran	Best Film on Other Social Issues
28	Zubeida	Hindi	Shyam Benegal	Best Feature Film in Hindi

NON FEATURE FILMS

S.No	Film	Language	Director	Awards Won
1	A Memory of the Sea	English	Lygia Matthews	1) Special Jury Award 2) Best Audiography (Hari Kumar)
2	Ajeeb Ghar	Hindi	Rajesh Agarwal	Best Music Direction (Usha Khanna)
3	Akkareninnu	Malayalam	T. Sunil Kumar	Best Film on Family Welfare
4	Balgandharva	Marathi	Haimanti Banerjee	Special Mention
5	Bhor	Bengali	Ritubarna Chudgar	Best Short Fiction Film
6	Devanarathakan	Malayalam	Sudish Gopalakrishnan	Best Biographical Film
7	From the land of Buddhism to the land of Buddha	English	Shalini Shah	Best Historical Reconstruction/Compilation Film
8	Infiltrators	English	Urmi Chakraborty	Best Film on Social Issues
9	Lokpriya	English-Hindi	Arun Khopkar	Best Editing (Sankalp Meshram)

10	Mahananda	Bengali	Manik Das	Best Film on Family Welfare
11	Meena Jha	Hindi	Anjalika Sharma	1. Best First Non-feature Film of a Director 2) Special Mention (Cameraman Amal Neerod C.R.)
12	Pashmina Royale	English	Bappa Ray	Best Promotional Film
13	Rasikpriya	English-Hindi	Arun Khopkar	1) Best Non-Feature Film. 2) Best Direction 3) Best Cinematography (Prasann Jain)
14	Scribbles on Akka	Kannada	Madhusree Dutta	Best Anthropological/Ethnographic Film
15	The Landscape	Only Music	Ravi Jadhav	Best Animation Film
16	The Nest	Bengali	Supriyo Sen	Best Environment/Conservation Film
17	Tribal Women Artists	Hindi	Braj Bhushan	Best Arts/Cultural Film
18	Tulasi	English	Rajgopal Rao	Best Educational/Motivational Instructional Film
19	Vedic Mathematics	English	K. Jagjivan Ram	Best Scientific Film
20	Vermi Culture	Hindi	A. R. Sharief	Best Agricultural Film
21	Wearing the Face	English	Joshy Joseph	Best Investigative Film

BEST WRITING ON CINEMA

S.No	Name	Book	Awards Won
1	Anupama Chopra	Sholay	Best book on cinema
2	Niranjan Pal	Such is Life	Special mention
3	Uma Garg	Sangeet ka Soundarya Bodh	Special mention

BEST FILM CRITIC

S.No	Name	Language	Awards Won
1	Vasiraju Prakasam	Telugu	Best film critic
2	Suresh Sharma	Hindi	Best film critic
3	Ratnotama Sen Gupta	English	Special Mention

कथाचित्र **Awards for**
पुरस्कार **Feature Films**

सर्वोत्तम कथा चित्र पुरस्कार

शांतम (मलयालम)

निर्माता : पी वी गंगाधरन को स्वर्ण कमल 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : जयराज को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 की सर्वोत्तम फीचर फिल्म का पुरस्कार मलयालम फिल्म शांतम को दिया गया जिसमें राजनीतिक शत्रुता और समाज में व्याप्त हिंसा के ज्वलंत मुद्दे को बेहद असाधारण कल्पनाशीलता से पेश किया गया है। फिल्म की भाषा परंपरागत किस्सागोई से कहीं आगे निकलकर अमन और विवेक की अपील करती है।

BEST FEATURE FILM

SHANTHAM (MALAYALAM)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 50,000 to the producer **P V Gangadharan**

Swarna Kamal and cash prize of Rs 50,000 to the director **Jayaraj**

CITATION

The Award for the Best Feature Film of 2000 is given to the Malayalam film Shantham, which addresses the very contemporary issue of political rivalry and violence in our society in an unusually imaginative way. The language of the film goes beyond conventional narrative for appeal to calmness and good sense.

पी.वी. गंगाधरन

जाने-माने व्यवसायी और प्रकाशक श्री गंगाधरन भारतीय फ़िल्म परिषद के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। 'मातृभूमि' ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन का प्रकाशक होने के साथ-साथ इन्होंने अनेक फ़िल्मों का निर्माण भी किया है। वह साउथ इंडियन फ़िल्म चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष और केरल फ़िल्म विकास निगम के निदेशक भी रह चुके हैं। उन्होंने भारतीय पैनोरमा की चयन समिति और राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों के ज्युरी के सदस्य के रूप में भी सेवा दी है। वह बहुआयामी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति हैं जिनकी रुचि उद्योग जगत के अलावा खेल, राजनीति और सामाजिक कार्यों में भी है।



जयराज

इलेक्ट्रॉनिक और दूरसंचार अभियंत्रण में स्नातक जयराज ने मलयालम की 13 फ़ीचर फ़िल्मों का निर्देशन किया है। उनकी फ़िल्म 'देशादनम' ने तीन राष्ट्रीय पुरस्कार और छह 'केरल राज्य फ़िल्म पुरस्कार' जीते हैं। 'कालियट्टम' ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशन और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (सुरेश गोपी) के दो राष्ट्रीय पुरस्कार जीते थे। साथ ही अनेक विदेशी फ़िल्म समारोहों में इसे प्रवेश मिला। 'शान्तम' जयराज की 'नवरस' श्रृंखला की दूसरी फ़िल्म है। पहली फ़िल्म 'करुणाम' थी जिसे पिछले वर्ष 'इंटरनेशनल फ़िल्म फ़ेस्टिवल आफ़ इंडिया' में सर्वश्रेष्ठ एशियन फ़िल्म का पुरस्कार मिला। इस फ़िल्म को भी अनेक अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में हिस्सा लेने के लिए आमंत्रित किया गया।



P.V. GANGADHARAN

A noted businessman and publisher, Mr Gangadharan has also been President of the Film Federation of India. He has produced a large number of films in addition to being publisher of the 'Mathrubhumi' group of publications. He has earlier been president of the South India Film Chamber of Commerce and Director of the Kerala Film Development Corporation. He has served as member of the Selection Committee for the Indian Panorama and of the jury of the National Film Awards. A versatile man, his interests vary from industry to sports, politics and social work.

JAYARAJ

A graduate in Electronics and Telecommunication Engineering, Jayaraj has directed 13 feature films in Malayalam. His film 'Desadanam' won three National Awards and six Kerala State Film Awards. 'Desadanam' was invited to participate in Karlovy Vary (where it got special mention) and several other International Film Festivals. 'Kaliyattam' won two national awards for best direction and best actor (Suresh Gopi), and was entered in several foreign festivals. 'Shantham' is Jayaraj's second film in 'Navrasa' series, the first being 'Karunam' which won the Golden Peacock for the Best Asian film at the International Film Festival of India last year. This film also went to different international festivals.

निर्देशक की प्रथम सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

सायाहन्नम (मलयालम)

निर्माता : एम. एस. नजीर को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये नकद पुरस्कार

निर्देशक : आर सरत को स्वर्ण कमल और 25,000 रुपये नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का निर्देशक की पहली सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार मलयालम फ़िल्म सायाहन्नम को दिया गया। जूरी ने युवा निर्देशक की इस बात के लिए प्रशंसा की कि राजनीतिक ईमानदारी और परमाणु निरस्त्रीकरण जैसे जटिल विषय को किस तरह अच्छी पकड़ के साथ पेश किया गया।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

SAYAHNNAM (MALAYALAM)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 25,000 to the producer **M. S. Nazeer**

Swarna Kamal and cash prize of Rs 25,000 to the director **R. Sarath**

CITATION

The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2000 is given to the Malayalam film Sayahnnam. The jury applauds the nature and gripping manner in which this young director deals with complex issues like political honesty and nuclear disarmament.

एम. एस. नजीर

स्नातक के बाद, नजीर तिरुअन्नतपुरम में ही काम करते हैं। उनकी फिल्म 'सायाहन्म' को सात राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं।



M.S.NAZEER

After graduation, Nazeer lives in Thiruvananthapuram. The film "Sayahnnam" has also won seven state-level awards.

आर. सरत

पत्रकार से फिल्म निर्माता बने सरत प्रतिष्ठित फिल्म निर्देशक शाजी एन. करुण के सहायक रह चुके हैं। उन्होंने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) और अमरीका की जेरक्स पार्क के सहयोग से बनने वाली "विजुअल्स फॉर दी गीत गोविन्द" का वर्ष 1996 में स्वतंत्र रूप से निर्देशन किया था। आईजीएनसीए के लिए पिछले वर्ष बनाई गई 'दी पेंटेड एपिक्स' नामक वृत्तचित्र केरल के कला जगत के लिए ऐतिहासिक है। इस वृत्तचित्र शोध के दौरान उन्होंने 'कलिमानूर' मंदिर में महान पेंटर राजा रवि वर्मा की 'म्यूरल पेंटिंग' (दीवार पर की गई चित्रकारी) को खोज की। इस शोध के लिए उन्हें भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय से 'रिसर्च फेलोशिप' मिला। 'सायाहन्म' उनकी पहली फीचर फिल्म है।



R. SARATH

A journalist-turned-filmmaker, Sarath was directorial assistant to the renowned director Shaji N. Karun. He directed Visuals for the Gita Govinda multi-media project, a collaboration between the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA) and Xerox Parc of the United States, independently in 1996. His first documentary 'The Painted Epics' last year for the IGNCA is a landmark in the art history of Kerala. During the research for this documentary, he discovered the great painter Raja Ravi Varma's mural paintings in the family temple, Klimanoor. For this research, he got a research fellow from the Culture Ministry of the Government of India. 'Sayahnnam' is his first feature film.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार

वानतईपोला (तमिल)

निर्माता : वी. रविचंद्रन को स्वर्ण कमल और 40,000 रुपये नकद

निर्देशक : विक्रमन को स्वर्ण कमल और 40,000 रुपये नकद

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करने वाली सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार तमिल फ़िल्म वानतईपोला को दिया गया है। फ़िल्म में संयुक्त परिवार के मूल्यों का सशक्त चित्रण है कि अच्छे और बुरे समय में कैसे मिलकर रहा जाता है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

VANATHAIPPOLA (TAMIL)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 40,000 to the producer **V. Ravichandran**

Swarna Kamal and cash prize of Rs 40,000 to the director **Vikraman**

CITATION

The award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 2000 is given to the Tamil film Vanathaippola for its sincere projection of the values of a joint family and the need to share good and difficult times together.

वी. रविचंद्रन

साहित्य में स्नातक रविचंद्रन ने अपना कैरियर फिल्म वितरण और प्रदर्शनी से प्रारंभ किया। उन्होंने कुछ सफल फिल्मों का वितरण किया। तमिल भाषा की 'वानतईपोला' निर्माता के रूप में उनकी पहली फीचर फिल्म है। इसने बाक्स आफिस पर सफलता अर्जित की है और सभी उम्र के लोगों ने इसे पसंद किया है। इसका प्रदर्शन अनेक केन्द्रों पर 25 सप्ताह से अधिक तक होता रहा। अब कुछ और तमिल फिल्मों का निर्माण कर रहे हैं।

विक्रमन

कामर्स से स्नातक विक्रमन ने काफी पहले से निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा था। उनकी पहली फिल्म 'पुडु वसंतम' वर्ष 1990 में आई थी। उन्होंने अब तक नौ फिल्में बनाई हैं, जिसमें 'कोकलम', 'सूर्यवंशम्', 'नान पेसा निनपैथालम' और 'पुडिहई मन्नारकल' शामिल हैं। उनकी लगभग सभी फिल्में तेलुगु और कन्नड़ में डब की गईं जिसने बाक्स आफिस पर अच्छा प्रदर्शन किया।



V.RAVICHANDRAN

A graduate in literature, Ravichandran began his career in film distribution and exhibition. He has distributed and released some very successful films. 'Vanathaippola' in Tamil is his first feature film as a producer. It has become a box office success, and appealed to people of all ages. It has run for more than 25 weeks in many centres. At the young age of forty, he is now producing some more Tamil films.

VIKRAMAN

A commerce graduate, Vikraman who is in his late thirties started making films fairly early, his first film coming in 1990, 'Pudu Vasantam'. He has so far made nine films, some of them being 'Kokalam', 'Suryavansham', 'Nan Pesa Ninpaithalam' and 'Pudihai Mannarkal'. Almost all his films have been dubbed in Telugu and Kannada, and have been acclaimed at the boxoffice.

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म को नर्गिस दत्त पुरस्कार

पुकार (हिंदी)

निर्माता : सुरिन्दर कपूर को रजत कमल और 30,000 रुपये

निर्देशक : राजकुमार संतोषी को रजत कमल और 30,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का राष्ट्रीय एकता पर आधारित सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार हिन्दी कथाचित्र पुकार को दिया गया है। यह फिल्म आतंकवादियों की घुसपैठ और सेना की जवाबी कार्रवाई को लेकर है और इसमें दिखाया गया है कि सैन्य और असैनिक ताकतें किसी तरह बाहरी दुश्मन का सामना करती हैं।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

PUKAAR (HINDI)

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the producer **Surinder Kapoor**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the director **Rajkumar Santoshi**

CITATION

The Nargis Dutt Award for the Best Feature Film on National Integration of 2000 is given to the Hindi film Pukaar. The film tackles the problem of terrorist infiltrations and the army's counter attacks and situations where armed and civilian forces unite against the common external enemy.

सुरिन्दर कपूर

फ़िल्म उद्योग जगत में सुपरिचित सुरिन्दर कपूर ने अपना कैरियर 'मुगले आजम' में के. आसिफ के सहायक के रूप में शुरू किया था। उन्होंने 'जब से तुम्हें देखा' का वर्ष 1959 में निर्माण कर फ़िल्म निर्माता की सूची में अपना नाम जोड़ लिया था। उन्होंने दस से अधिक फ़िल्मों का निर्माण किया है जिसमें 'हम पाँच', 'वह सात दिन', 'जुदाई', 'पोंगा पंडित', 'लोफर', 'एक श्रीमान एक श्रीमती' और 'फूल खिले हैं गुलशन गुलशन' शामिल हैं। उन्होंने अनेक फ़िल्म व्यवसाय इकाईयों में विभिन्न पदों पर रहकर भी फ़िल्म उद्योग की सेवा की है। उनके पुत्र बानी (निर्माता), अनिल और संजय (दोनों अभिनेता) भी फ़िल्म उद्योग में सक्रिय रूप से शामिल हैं।



SURINDER KAPOOR

A veteran in the film industry, Surinder Kapoor had begun his career as an assistant to K. Asif in 'Mughal-e-Azam'. He became a producer in 1959 with 'Jab Se Tumhe Dekha'. He has produced more than ten films, and some of them like 'Hum Paanch', 'Woh Saat Din' and 'Judaai' ran for 25 weeks other include, 'Ponga Pandit', 'Loafer', 'Ek Shriman Ek Shrimati', and 'Phool Khilen Hain Gulshan Gulshan'. He has also served the industry in other capacities by being associated with several film trade bodies. His sons Boney (producer), Anil and Sanjay (actors) are also actively involved in the film industry.

राजकुमार संतोषी

राजकुमार संतोषी ने अपना कैरियर गोविन्द निहलानी के विशेष सहायक निर्देशक के रूप में शुरू किया था। बाद में उन्होंने स्वतंत्र रूप से 'घायल', 'दामिनी', 'अंदाज अपना-अपना', 'बरसात', 'घातक' और 'चाईना गेट' का निर्देशन किया। घातक और चाईना गेट के निर्माता भी वह खुद थे। उन्होंने बच्चों की फ़िल्म 'हेलो' में अभिनय भी किया है और अब वह वर्तमान में 'लज्जा' पर काम कर रहे हैं। राजकुमार ने अनेक विज्ञापन फ़िल्मों भी बनाई हैं।



RAJKUMAR SANTOSHI

Beginning his career as a Special Assistant Director with directors like Govind Nihalani, Rajkumar Santoshi has gone on to carve a niche for himself by directing films like 'Ghayal', 'Damini', 'Andaz Apna Apna', 'Barsaat', 'Ghatak' and 'China Gate' (both of which he also produced). He has also acted in a children's film, 'Halo', and is currently working on 'Lajja'. Rajkumar has also made several advertisement films.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़ीचर फ़िल्म

कल का आदमी (हिंदी)

निर्माता : परिवार कल्याण मंत्रालय को रजत कमल और 30,000 रुपये

निर्देशक : अमोल पालेकर को रजत कमल और 30,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार हिन्दी फ़िल्म कल का आदमी को दिया गया है। यह फ़िल्म बीसवीं शताब्दी के शुरू में रघुनाथ कर्वे की कहानी बताती है, जिन्होंने यौन और प्रजनन के आधार पर बहस छोड़ी थी। फ़िल्म में बहुत बारीकी से उस समय की परिस्थितियों को जीवंत किया गया है और आज के सबसे ज्वलंत मुद्दे पर जागरूकता पैदा करने की कोशिश की है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

KAL KA AADMI (HINDI)

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the producer **Ministry of Health and Family Welfare**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the director **Amol Palekar**

CITATION

The Award for the Best Film on Family Welfare of 2000 is given to the Hindi film Kal Ka Aadmi. The film tells the story of Raghunath Karve who, early in this century, pioneered the debate on sexual and reproductive rights. The film recreates the period in painstaking detail and helps to raise consciousness about issues that are extremely relevant today.

अमोल पालेकर

जे.जे. स्कूल आफ आर्ट से स्नातक, मराठी स्टेज के अभिनेता और निर्देशक अमोल दिन में क्लर्क का नौकरी करते थे। उन्होंने 'रजनीगंधा' में अभिनय प्रारंभ कर अनेक फ़ीचर फ़िल्मों में काम किया और अपनी कला के लिए उच्च पुरस्कार पाने के बाद वर्ष 1980 में 'अक्रीत' के निर्माण से निर्माताओं की सूची में अपना नाम दर्ज करा लिया। इस फ़िल्म ने फ़्रांस में आयोजित तीन महादेशों के फ़िल्म समारोह में स्पेशल जूरी अवार्ड प्राप्त किया था। अमोल के खाते में छह फ़िल्में ऐसी हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा हासिल की, जिसमें 'थोड़ा-सा रोमानी हो जाए' शामिल है। उनकी फ़िल्म 'दायरा' ने ग्रैंड प्रिक्स, फेस्टिवल डु वैलेनसिएनेस, फ़्रांस, पुरस्कार जीता था। इस फ़िल्म का नाम वर्ष 1996 में टाइम पत्रिका द्वारा जारी दस श्रेष्ठ फ़िल्मों की सूची में शामिल किया गया था। लंदन फ़िल्म फेस्टिवल ने उनकी दो फ़िल्मों को 'वर्ल्ड सिनेमा- एशिया शोकेस 96' में आमंत्रित कर उन्हें सम्मान दिया। अमोल पालेकर की फ़िल्म 'कैरी' ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीता है और इसे 'फुकुओका इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल, जापान' और लंदन फ़िल्म फेस्टिवल में भी आमंत्रित किया गया है।



AMOL PALEKAR

A graduate from the JJ School of Art, an actor and director on the Marathi stage in the evenings, Amol was a bank clerk during the day. After acting in a large number of feature films beginning with '**Rajnigandha**' and winning high acclaim for his performances, Amol made his debut as a filmmaker in 1980 with '**Akriet**', winner of the Special Jury Award at Three Continents' Festival, Nantes, France. Amol has six major internationally acclaimed feature films to his credit, which include the path-breaking '**Thoda Sa Romani Ho Jaayen**'. His recent film, '**Daayraa**' was the winner of the Grand Prix, Festival du Valenciennes, France, and was listed in 'Time' magazine's selection of the Top Ten Films of 1996. London Film Festival accorded a rare honour to him by inviting two of his films to the World Cinema - Asia Showcase '96. Amol Palekar's last film '**Kaaree**' won a National Award and has been invited to Fukoka International Film Festival, Japan and London Film Festival after getting rave notices at Three Continents' Festival, Nantes, France.

अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फीचर फिल्म

वेत्रीकोडि कट्टु (तमिल) और मुन्नुडी (कन्नड़)

रजत कमल और 30,000 रुपये वेत्रीकोडि कट्टु के निर्माता डी. पांडियन और मुन्नुडी के निर्माता नवचित्र को रजत कमल और 30,000 रुपये वेत्रीकोडि कट्टु के चेरण निर्देशक और मुन्नुडी के निर्देशक पी. शेषाद्री को।

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का पुरस्कार दो फिल्मों को संयुक्त रूप से दिया गया है। वेत्रीकोडि कट्टु में किसी के अपनी जमीन से विस्थापन और उसके सामाजिक प्रभावों का जिक्र है और समाज में सहिष्णुता की संस्कृति पनपाने की जरूरत बतायी गयी है जबकि मुन्नुडी में निकाह और तलाक से जुड़े शरीयत कानूनों के अवसरवादी लोगों द्वारा दुरुपयोग पर विचार किया गया है।

BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

VETRIKKODI KATTU (TAMIL)

and

MUNNUDI (KANNADA)

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the producers **D. Pandian** for VETRIKKODI KATTU and **Navachitra** for MUNNUDI

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the directors **Cheran** for VETRIKKODI KATTU and **P. Sheshadri** for MUNNUDI

CITATION

The Award for the Best Film on Other Social Issues such as prohibition, women and child welfare, anti-dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc. of 2000 is being shared by two films Vetrikkodi Kattu (Tamil) for discussing issues on migration from one's own land and the social implications that follow in the heartland of Tamil Nadu, highlighting the need to re-establish the holistic culture of society, and Munnudi (Kannada) for attempting to discuss the misuse of shariat by opportunistic men and the manipulation of the testaments on 'Nikaah' and 'Talaah'.

डी. पांडियन

चेन्नई में फिल्म वितरक के रूप में अपना कैरियर शुरू करने वाले पांडियन 'वाणमति' का निर्माण कर वितरक से निर्माता बने। उसके बाद उन्होंने 'कादल कोत्तई' का निर्माण किया जिसे तीन राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। उन्होंने 'काडल पूवकल' नाम की फिल्म बनाई जिसके लिए निर्देशक भारती राजा को स्क्रिनप्ले अवार्ड मिला है। पांडियन ने अभी तक आठ फीचर फिल्में बनाई हैं।

चेरन

अर्थशास्त्र में स्नातक चेरन ने अभी तक चार फिल्में बनाई हैं और सभी फिल्में सफल रही हैं। चेरन की अन्य फिल्में 'भारती कन्नमा' 'पोरकालम' और 'देसिया गीतम' हैं। उन्होंने राज्य स्तरीय और अनेक समालोचन पुरस्कार प्राप्त किए हैं, लेकिन यह उनका पहला राष्ट्रीय पुरस्कार है।

पी. शेषाद्री

शेषाद्री ने साहित्य में स्नातकोत्तर और पत्रकारिता में डिप्लोमा करने के बाद अपना कैरियर पत्रकार के रूप में शुरू किया था। उन्होंने कुमर्शियल आर्ट में सर्टिफिकेट कोर्स किया था। शेषाद्री ने 'गौरीशंकर' के स्क्रिप्ट राइटर के रूप में वर्ष 1990 में फिल्म जगत में प्रवेश किया। उन्होंने निर्देशन सीखने के लिए टी.एस. नागाभरण के साथ काम किया। उन्होंने लगभग बीस टेलीविजन धारावाहिकों, टेलीफिल्मों और वृत्त चित्रों का निर्माण किया। बतौर निर्देशक 'मुन्नडी' उनकी पहली फीचर फिल्म है।



D. PANDIAN

Starting his career as a distributor of films in Chennai, Pandian took a theatre on lease to launch as an exhibitor. He turned producer with 'Vanmathi' and then made 'Kadal Kottai' which won three National Awards. He has also produced 'Kadal Pookkal' for which director Bharati Raja has won the screenplay award. Pandian has so far produced eight feature films.

CHERAN

This graduate in economics who is in his late thirties has so far made four features, and all of them have been successful. The other films by Cheran were 'Bharathi Kannamma', 'Porkalam', and 'Desiya Geetham'. He has won several state, popular or critics awards, but this is his first national award.

P. SHESHADRI

Sheshadri began his career as a journalist in the late eighties after his post-graduation in literature and a diploma in journalism. He also attended a certificate course in Commercial Art. Sheshadri entered the film world as a scriptwriter in 1990 with 'Gourishankara'. He worked with T. S. Nagabharana to learn direction, and has made almost twenty television serials, telefilms and documentaries. 'Munnudi' is his first full-length feature film as a director.

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

ओरू चेरू पुंचीरी (मलयालम)

निर्माता : जिशा जॉन को रजत कमल और 30,000 रुपये

निर्देशक : एम.टी. वासुदेवन नायर को रजत कमल और 30,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का पर्यावरण संरक्षण परिरक्षण फिल्म पुरस्कार मलयालम कथाचित्र ओरू चेरू पुंचीरी को दिया गया है। यह फिल्म एक प्रौढ़ दंपति की साधारण कहानी है और इसमें शेष दुनिया के साथ उनके रिश्तों को दर्शाया गया है। पेड़ पौधों से उनके प्रेम का वर्णन करते हुए यह फिल्म पर्यावरण संरक्षण संदेश बहुत नम्रता से प्रेषित करती है।

BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/ PRESERVATION

ORU CHERU PUNCHIRI (MALAYALAM)

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the producer **Jisha John**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the director **M.T. Vasudevan Nair**

CITATION

The Award for the Best Film on Environment Conservation and Preservation of 2000 is given to Malayalam film Oru Cheru Punchiri. The film tells the simple and moving story of an elderly couple and their relationship with the world around them. In depicting the couple's love for the trees and plants in their garden, the film spreads the message of environmental conservation in the broadest sense in a gentle, unobtrusive way.

जिशा जॉन

अपने पिता जॉन पाल के साथ काम करते हुए जिशा ने 'जॉन पॉल फिल्म्स' के बैनर तले इस फिल्म का निर्माण कर प्रोडक्शन के क्षेत्र में प्रवेश किया। सुश्री जिशा के पिता जॉन स्क्रिप्ट और स्क्रीनप्ले लिखने के लिए जाने जाते हैं।



JISHA JOHN

Working with her father John Paul who is known for his scripts and screenplays, Jisha has entered the field of production with this film under the banner of 'John Paul Films' founded by her father.

एम.टी. वासुदेवन नायर

वासुदेवन ने स्क्रीनप्ले या निर्देशन के लिए 22 राज्य स्तरीय फिल्म पुरस्कार जीते हैं। साथ ही उन्होंने स्क्रीनप्ले के लिए चार राष्ट्रीय पुरस्कार और ढेर सारे चर्चित पुरस्कार भी जीते हैं। उन्होंने अभी तक साठ से अधिक मलयालम फिल्मों लिखी हैं, जिसमें अनेक उनकी अपनी कहानी पर आधारित हैं। उनकी कुछ जानी मानी फिल्में हैं- 'निर्मलयम', 'कडावू', 'बंधनम्', और 'वरीकुडी'।



M.T. VASUDEVANNAIR

Vasudevan Nair has won more awards than he cares to mention. He has won 22 state film awards for screenplay or direction, four National Awards for screenplay, and a large number of popular awards. He has so far written for over sixty Malayalam films, many based on his own stories. Some of his better-known films are 'Nirmalayam', 'Kadavu', 'Bandhanam' and 'Varikuzhy'.

सर्वोत्तम बाल फिल्म

घरक्षरंगल (मलयालम)

निर्माता : सलीम पडियथ को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये

निदेशक : सलीम पडियथ को स्वर्ण कमल और 30,000 रुपये

प्रशस्ति

घरक्षरंगल में एक बच्चे के अपनी मातृभाषा और संस्कृति से प्रेम के माध्यम से शिक्षा, कृषि और नागरिक समाज की अधिकारिता के मुद्दों को छुआ गया है।

BEST CHILDREN'S FILM

GHARAKSHARANGAL (CUSSED LETTERS) (MALAYALAM)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the producer **Salim Padiyath**

Swarna Kamal and cash prize of Rs 30,000 to the director **Salim Padiyath**

CITATION

The award for the best children's film of 2000 is given to Gharaksharangal. The film depicts, through the eyes of a child, love and respect for our mother tongue and culture, tackling many social issues pertaining to education, agriculture and general empowerment for a civic society.

सलीम पडियथ

कॉमर्स से स्नातक सलीम ने कमल और एम.टी. वासुदेवन नायर जैसे निर्देशकों के सहायक के रूप में काम किया। उन्होंने केरल के महान स्वतंत्रता सेनानी मोहम्मद अब्दुल रहमान साहब के जीवन पर आधारित वृत्तचित्र 'शेर-ए-मालाबार' का निर्देशन किया। बाद में उन्होंने टेलीविजन के लिए कई शॉर्ट फिल्मों और विज्ञापन फिल्मों का भी निर्देशन किया। निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में 'घरक्षरंगल' उनकी पहली फिल्म है। बयालीस वर्षीय सलीम त्रिसुर जिले में रहते हैं।



SALIMPADIYATH

A Commerce graduate, Salim worked as an associate director with eminent directors like Kamal and M. T. Vasudevan Nair. He directed a documentary named 'Sher-e-Malabar' based on the life of Mohammed Abdul Rahiman Sahib, a great freedom fighter of Kerala. Later he directed a couple of short films and some advertisement films for television channels. 'Gharaksharangal' is the first feature film as a director and writer for this 42-year old filmmaker, who lives in Thrissur district.

सर्वोत्तम निर्देशन

रितुपर्णो घोष

निर्देशक : रितुपर्णो घोष को स्वर्ण कमल और 50,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार रितुपर्णो घोष को उनकी बंगला फिल्म उत्सव के लिए दिया गया है। इन्होंने अभिनेताओं के एक बड़े दल के साथ एक जीर्णशीर्ण पुराने घर में काम किया और वह बहानेबाजी से दूर एकदम विश्वसनीय कथालोक का निर्माण कर बेहद सशक्त प्रदर्शन को सामने लाए।

BEST DIRECTION

RITUPARNO GHOSH

Swarna Kamal and cash prize of Rs 50,000 to the director **Rituparno Ghosh**

CITATION

The award for the best direction of 2000 is given to Rituparno Ghosh for his Bengali film Utsab. The director works with a large group of actors within the confines of a rambling old house. He builds an unpretentious, gripping and entirely credible narrative and brings about in the process some extremely powerful performances.

रितुपर्णो घोष

लघुफ़िल्मों के निर्माता सुनील घोष के पुत्र रितुपर्णो घोष के हृदय में बचपन से ही फ़िल्मों के प्रति रुचि रही। अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री करने के बाद वे एक विज्ञापन एजेंसी से कापी राइटर के रूप में जुड़ गये। जल्दी ही वह विज्ञापन फ़िल्मों के निर्माण में शामिल हो गये। इस अवधि के दौरान उन्होंने दस से अधिक विज्ञापन फ़िल्म से संबंधित पुरस्कार जीते हैं। वर्ष 1994 से घोष फ़िल्म निर्माण, पटकथा लेखन और निर्देशन के क्षेत्र में कार्यरत हैं। उन्होंने एक चर्चित टेलीविजन धारावाहिक 'बहन्नो एपिसोड' का निर्देशन भी किया। रितुपर्णो की पहली फ़ीचर फ़िल्म 'उनिषे अप्रैल' ने उन्हें फ़िल्म जगत में स्थापित किया। इस फ़िल्म को 1995 में 'सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म' का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। आज तक उनकी सभी फ़िल्मों ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। 'दहन' और 'असूख' को सर्वश्रेष्ठ बंगाली फ़िल्मों का पुरस्कार मिला। उन्होंने 1999 में 'बारीबाली' का निर्माण किया। उनकी हाल में बनी फ़िल्म 'उत्सव' है जिसका निर्माण पिछले वर्ष हुआ था।



RITUPARNO GHOSH

Son of a short-filmmaker Sunil Ghosh, Rituparno's interest in films was sparked off in childhood itself. After doing his Master's in Economics, he joined an advertising agency as a copywriter and soon became involved in the making of advertising films. He won over ten ad-film awards during this period. Since 1994, Ghosh has been making feature films, and scripted and directed a popular television serial, 'Bahanno Episode'.

Rituparno's first venture into feature films was a children's film, 'Hirer Angti'. His second feature film, 'Unishe April', established his reputation as a young filmmaker to watch. 'Unishe April' won the National Award in 1995 for the Best Feature Film. Till date, all his films have won National Awards. "Dahan" and "Asookh" have received the Best Bengali Film Awards. He made "Bariwali" in 1999 and his latest film "Utsab" last year.

सर्वोत्तम अभिनेता

अनिल कपूर

अभिनेता : अनिल कपूर को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार अनिल कपूर को फ़िल्म पुकार में भूमिका के लिए दिया गया। विविधतापूर्ण यह कलाकार अपने किरदार की भिन्न जरूरतों का बहुत विश्वसनीयता और तकनीकी कौशल से निभाता है।

BEST ACTOR

ANIL KAPOOR

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the actor **Anil Kapoor**

CITATION

The award for the Best Actor of 2000 is given to Anil Kapoor for his role in Pukaar. A veteran actor of great versatility, Anil Kapoor meets the varied demands of this role with credibility and assured technical skill.

अनिल कपूर

वरिष्ठ फ़िल्म निर्माता सुरिन्दर कपूर के बेटे अनिल कपूर को अभिरुचि नाटकों में पहले से ही थी। साथ ही वह मनोरंजन की दुनिया में अपने परिवार की भागीदारी से प्रभावित भी थे। कालेज के दिनों में अनिल कपूर को वर्ष 1974 में आयोजित अंतर कालेज प्रतियोगिता में अभिनय के लिए 'दिलीप कुमार ट्राफी' दिया गया था। उन्होंने 'हमारे तुम्हारे' के साथ वर्ष 1979 में अपना कैरियर प्रारंभ किया था। अगले वर्ष उन्होंने 'एक बार कहो' में अभिनय किया। उसके बाद उन्होंने तेलुगु भाषा की फिल्म 'वंश वृक्षम' और कन्नड़ की फिल्म 'पल्लवी अनु पल्लवी' में अभिनय किया था। मुख्य भूमिका में पहली बार वे वर्ष 1981 में बनी 'कहाँ कहा से गुजर गया' नामक फ़िल्म में आये। उसके बाद उनकी फ़िल्म 'लैला' प्रदर्शित हुई। एक वर्ष बाद 'वह सात दिन' में अपनी भूमिका की छाप छोड़कर वह फ़िल्म जगत में स्थापित हो चुके थे। वे 'तेजाब', 'परिदा', 'राम लखन', 'बेटा' और अन्य फ़िल्मों में सशक्त अभिनय से कई पुरस्कार जीत चुके हैं। उनकी अन्य प्रमुख फ़िल्मों में 'मिस्टर इंडिया', 'ईश्वर', 'जमाई राजा', 'रूप की रानी चोरों का राजा', 'मशाल', 'कर्मा', 'लम्हे' और '1942-ए लव स्टोरी' शामिल हैं।



ANIL KAPOOR

Son of senior filmmaker Surinder Kapoor, Anil had always been interested in dramatics and had been influenced by his family's involvement in the entertainment industry. In college, he had won the Dilip Kumar Trophy for acting in an inter-collegiate competition in 1974. He began his acting career in 1979 with 'Hamare Tumhare'. Next year, he acted in 'Ek Baar Kaho' and then in his first non-Hindi films, 'Vamsa Vriksham' in Telugu and 'Pallavi anu Pallavi' in Kannada. But his first leading role came in 1981 in the film 'Kahan Kahan se guzar gaya', followed by 'Laila'. With 'Woh Saat Din' a year later, Anil established himself. Since then, he has acted in almost fifty films. He has also won several awards for films like 'Tezaab', 'Parinda', 'Ram Lakhan', 'Beta', and others. Other important films include 'Mr India', 'Eeshwar', 'Jamai Raja', 'Roop ki rani choron ka raja', 'Mashaal', 'Karma', 'Lamhe' and '1942- A Love Story'.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

रवीना टंडन

अभिनेत्री : रवीना टंडन को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम अभिनेत्री पुरस्कार रवीना टंडन को फिल्म दमन में भूमिका के लिए दिया गया। फिल्म ऐसी कमजोर महिला की कहानी है जो अपनी पति की मानसिक और शारीरिक यातना को सहती रहती है। फिर यह किरदार अपनी सहनशक्ति छोड़कर सामने आता है क्योंकि उसे भय है कि उसकी बेटी भी ऐसे ही प्रताड़ित हो सकती है।

BEST ACTRESS

RAVEENA TANDON

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the actress **Raveena Tandon**

CITATION

The award for the Best Actress of 2000 is given to Raveena Tandon for her role in Daman. It is a portrayal of a submissive woman who is subjected to constant physical and psychological torture by her husband. The character comes out of her passive shroud fearing her daughter may suffer the same fate as her.

रवीना टंडन

वर्ष 1990 में 'पत्थर के फूल' से अपना फिल्मी कैरियर शुरू करने वाली रवीना टंडन हिन्दी फिल्म क्षितिज पर छाई रही हैं। अभी तक उन्होंने 60 से भी अधिक फिल्मों में काम किया है तथा वह गलैमरस और सक्सटेंटिव भूमिकाओं में सामंजस्य स्थापित रखने में सफल रही हैं। उन्होंने एक तरफ 'मोहरा', और दूसरी तरफ 'बड़े मियां छोटे मियां', 'शूल' और 'दमन' जैसी फिल्मों में अलग किस्म की भूमिकाओं को बखूबी निभाया है। उनकी प्रतिभा और अभिनय की पराकाष्ठा ने दर्शकों को हमेशा प्रभावित किया है। इसका एक मात्र कारण है कि उनमें भूमिका के अनुकूल अपने आपको ढालने का अच्छा गुण निहित है। उन्होंने हास्य, दुखद और गलैमरस सभी प्रकार की भूमिकाएँ की हैं। उनकी कुछ चर्चित फिल्में हैं-क्षत्रिय, परंपरा, मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी, इम्तिहान, गुलामे-मुस्तफा, आंटी नं. वन और घरवाली बाहरवाली।



RAVEENA TANDON

Since her debut with 'Patthar ke Phool' in 1990, Raveena has been the quintessential movie star on the Hindi film horizon. She has acted in over sixty films so far, and managed to keep the astute balance between glamorous and substantive roles. She has turned out stunning performances with equal ease for films like 'Mohra' and 'Bade Miyan Chhote Miyan' as for 'Shool' and 'Daman'. Her talent and chiseled perfection has always dazzled viewers. One of the reasons for this is her capacity to totally surrender herself to her character, and thus enact it realistically. She has excelled in comic, tragic and generally glamorous roles. Some of her more popular films are 'Kshatriya', 'Parampara', 'Main Khiladi tu Anari', 'Imtihaan', 'Ghulam-e-Mustafa', 'Aunty no. One', and 'Gharwali Baharwali'.

सर्वोत्तम सह अभिनेता

एच.जी. दत्तात्रेया

सह अभिनेता : एच.जी. दत्तात्रेया को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम सह अभिनेता पुरस्कार एच.जी. दत्तात्रेया को कन्नड़ फिल्म मुन्नूडी में भूमिका के लिए दिया गया। उन्होंने इस फिल्म में एक दलाल की भूमिका निभायी है जो अरब के शंखों के लिए गांव से लड़कियां खरीदता है। उन्होंने अपनी भूमिका में जबर्दस्त संवेदना घोली है और वह पात्र को मात्र खलनायक से दूर ले गए हैं।

BEST SUPPORTING ACTOR

H.G. DATTATREYA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the supporting actor **H. G. Dattatreya**

CITATION

The award for the Best Supporting Actor of 2000 is given to H.G. Dattatreya in the Kannada film Munnudi for his portrayal of Hasanabba. He is an agent who procures local girls for Arabs to marry in an impoverished village in Karnataka. H.G. Dattatreya brings a wonderful sensitivity to the character, without turning it into a stereotypical villain.

एच.जी. दत्तात्रेया

इंजीनियर का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद दत्तात्रेय बीस वर्षों तक भारतीय वायुसेना के तकनीकी शाखा में कमीशन अधिकारी रहे। वह वायुसेना में विंग कमांडर के रैंक तक पहुंचे। वर्ष 1981 में उन्हें 'कमेन्डेशन ऑफ दी चीफ ऑफ एयर स्टाफ' से पुरस्कृत किया गया था। उन्हें बचपन से ही थिएटर में अभिरुचि थी और उन्होंने लगभग 45 नाटकों में हिस्सा लिया था। उनका पहला सह-अभिनेता पुरस्कार कन्नड़ फिल्म 'अस्फोट' के माध्यम से मिला। उन्होंने लगभग 50 फीचर फिल्मों में अभिनय किया है, साथ ही उन्होंने अनेक टेलीविजन धारावाहिकों, वृत्तचित्रों और रेडियो कार्यक्रमों में हिस्सा भी लिया है।



H.G. DATTATREYA

After training as an engineer, Dattatreya had worked as a Commissioned Officer in the technical branch of the Indian Air Force for twenty years, rising to the rank of Wing Commander. He was awarded the Commendation of the Chief of Air Staff in 1981. He had been interested in theatre from his early days, and had acted in about 45 plays. His first supporting actor award came in the Kannada film 'Asphota'. He has worked in about fifty feature films, scores of television serials, documentaries and radio programmes.

सर्वोत्तम सह अभिनेत्री

के.पी.ए.सी. ललिता

सह अभिनेत्री : के.पी.ए.सी. ललिता को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम सह अभिनेत्री का पुरस्कार के.पी.ए.सी. ललिता को मलयालम फिल्म शांतम में नारायणी की भूमिका के लिए दिया गया है। नारायणी एक वृद्धा है जिसका बेटा राजनीतिक हिंसा में मारा जाता है। यह वृद्धा बहुत सहज ढंग से शांति के लिए झंडा उठती है। ललिता ने बहुत संवेदना और कुशाग्रता से भूमिका निभायी है।

BEST SUPPORTING ACTRESS

K P A C LALITHA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the supporting actress **K P A C Lalitha**

CITATION

The award for the Best Supporting Actress of 2000 goes to K P A C Lalitha for the role of Narayani in the Malayalam film Shantham. Narayani is an elderly mother whose son has been killed in political violence. In the course of the film, she is transformed, gently and unobtrusively into a crusade for peace. Lalitha brings great professional skills and sensitivity to the role.

के.पी.ए.सी. ललिता

मलयालम फिल्मों की वरिष्ठ अभिनेत्री के.पी.ए.सी. ललिता ने अपने अभिनय जीवन की शुरुआत काफी कम उम्र में की थी। वह के.पी.ए.सी. नामक रंगमंच मंडली से जुड़ी थीं। वह हर तरह की भूमिका निभाने में सक्षम हैं। इसी कारण जनता और समालोचकों ने उन्हें सिर आँखों पर बिठाया। 'शांतम' में उन्होंने अत्यंत भाव प्रधान भूमिका की है।



K.P.A.C. LALITHA

A veteran actress of Malayalam films, KPAC Lalitha started her acting career at a young age with the popular stage troupe KPAC. A versatile actress who can enact various emotions ranging from character roles to slapstick humour, she is accepted by the masses and the critics alike. She lends a very emotional tone to her role in 'Shantham'.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

मास्टर उदयराज

बाल कलाकार : मास्टर उदयराज को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार मास्टर उदयराज को तमिल फिल्म निला कालम में पुल्ली की भूमिका के लिए दिया गया। पुल्ली चेन्नई के एक मोटर गैराज में काम करने वाला अनाथ बच्चा है। वह जिस मासूमियत और चतुरायी से अपने किरदार को पूरी ऊर्जा के साथ निभाता है, जूरी ने उसकी प्रशंसा की।

BEST CHILD ARTIST

MASTER UDAYARAJ

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the child artist **Master Udayaraj**

CITATION

The award for the best child artist of 2000 is given to Master Udayaraj for his portrayal of Pulli in the Tamil film Nilaa Kalam. Pulli is a very young orphan who works in a motor garage in Chennai. The jury applauds the way in which Master Udayaraj brings out both the innocence and street-smartness of Pulli, with a combination of energy and spontaneity.

मास्टर उदयराज

मास्टर उदयराज का जन्म फरवरी 1991 में हुआ। दस वर्षीय उदय अभी तीसरी कक्षा के छात्र हैं। उसने 'वासुकी', 'वीरमणि' और 'कादल कवित्तई' सहित पन्द्रह फीचर फिल्मों में अभिनय किया है। उसने अनेक टेलीविजन धारावाहिकों में भी अभिनय किया है, जिसमें 'ब्रिन्दावनम', 'मनसु प्लस' और 'श्रातिलम' शामिल हैं।



MASTER UDAYARAJ

Born in February 1991 and now just over ten years old, D. Udayaraj is a student of class three. He has already acted in more than fifteen feature including 'Vasuki', 'Veeramani', and 'Kadhal Kavithai'. He has also starred in several television serials including 'Brindavanam', 'Manasu Plus', and 'Srathilam'.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

शंकर महादेवन

पार्श्व गायक : शंकर महादेवन को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार शंकर महादेवन को तमिल फिल्म कंडुकोंडेन कंडुकोंडेन के गीत "इल्लई इल्लई सोल्ला ओरू कनानु पोंतम" के लिए दिया गया।

BEST MALE PLAYBACK SINGER

SHANKAR MAHADEVAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the male playback singer **Shankar Mahadevan**

CITATION

The award for the Best Male Playback Singer of 2000 is given to Shankar Mahadevan for the soulful rendering of the song "Illai, Illai, Solla Oru Kananu Ponthum" in the Tamil film Kandukonden Kandukonden.

शंकर महादेवन

कारनेटिक शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अब शंकर को हिन्दुस्तानी और कारनेटिक दोनों विधाओं में महारथ हासिल हो गई है। अब वह फिल्मों में, विज्ञापनों में, गज़ल के क्षेत्र में और भक्ति संगीत में भी अपना परचम लहरा रहे हैं। उन्होंने लुईस बैंक्स के साथ भी गाया है और स्वीडन के बैंड मिंटा तथा रणजीत बैरोट के साथ भी कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। उन्होंने 'मुहाफिज़' और केतन मेहता की फिल्म 'ओ डार्लिंग ये है इंडिया' के लिए भी गाया है। महादेवन ने बाम्बे फिल्म में 'उर्वशी-उर्वशी' चर्चित गाने के लिए भी स्वर दिया है। उन्होंने जावेद अख्तर द्वारा रचित 'ब्रेथलेस' को एक अनूठे ढंग में स्वर देकर प्रसिद्धि अर्जित की है।



SHANKAR MAHADEVAN

After training in Carnatic classical vocal music, Shankar now has proficiency in both Hindustani and Carnatic styles. He now sings for films, advertising jingles, jazz, fusion, ghazals, and even devotional music. He has sung in fusion with artistes like Louis Banks and Ranjit Barot as also held jazz concerts and performed with the Swedish band Mynta. He has sung for the Merchant Ivory film 'Muhafiz' and for Ketan Mehta's 'O Darling Yeh Hai India', later rendering the popular 'Urvashi Urvashi' in 'Bombay'. He recently gained fame for his song 'Breathless' penned by Javed Akhtar but rendered by Shankar in a unique style.

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

भावतारणी आर.

पार्श्व गायिका : भावतारणी आर. को रजत कमल और 10,000 हजार रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम पार्श्व गायिका का पुरस्कार भवतरजी आर. को तमिल फ़िल्म भारती में "मैला पूला पट्टु" गीत के लिए दिया गया। यह गीत गायिका की वाणी की कोमलता के कारण उत्कृष्ट बन पड़ा है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

BHAVATHARINI R.

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to female playback singer **Bhavatharini R.**

CITATION

The award for the Best Female Playback Singer of 2000 is given to Bhavatharini R. for the song "Mail Poola Pattu" in the Tamil film Bharati. The song is outstanding because it depicts the velvet voice of the Diva.

भावतारणी आर.

भावतारणी ने अपने पिता और भाई से प्रशिक्षण प्राप्त किया और बाद में संगीत निर्देशन के अलावा पियानो, ज़ाज़, कार्नेटिक संगीत और गाने का प्रशिक्षण भी लिया। उन्होंने पार्श्व गायिका के रूप में अनेक पुरस्कार अर्जित किए। अब वह कई टेलीविजन धारावाहिकों में अपना संगीत दे रही हैं। उनकी भक्ति संगीत और अन्य संगीतों से संबंधित कुछ एलबमों भी हैं। उन्होंने पचास से अधिक फिल्मों के लिए पार्श्व गायन किया है और उन्हें अपने पहले गाने 'मस्ताना मस्ताना' फिल्म 'रसजीया' के लिए पुरस्कार भी मिला।



BHAVATHARINI R.

Daughter of an illustrious father, Bhavatharini trained under him and her brother, and later learnt the piano, jazz, Carnatic music, and singing, apart from music direction. She has won several awards as a playback singer, and is now composing music for several television serials. She has recorded some albums of devotional and other music. She has sung in more than fifty films and had won an award for her very first song, 'Masthana Masthana' in 'Rasjiah'.

सर्वोत्तम छायांकन

अशोक मेहता

कैमरामैन : अशोक मेहता को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रसाद फिल्म लेबोरेटरी को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार अशोक मेहता को हिंदी फिल्म मोक्ष के लिए दिया गया जिसमें उन्होंने छाया भिन्नता और ठल्कूष्ट सम्मिश्रण से फिल्म के बदलते तेवर की जरूरतें पूरी कीं।

BEST CINEMATOGRAPHY

ASHOK MEHTA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to cameraman **Ashok Mehta**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the laboratory processing the film, Prasad Film Laboratory

CITATION

The award for the Best Cinematography of 2000 is given to Ashok Mehta for the Hindi film Moksha for providing wide range of tonal variation and outstanding compositions to cater to the changing moods of the film's narrative.

अशोक मेहता

अशोक मेहता को वास्तव में मुंबई में कठोर संघर्ष करना पड़ा। साठ के पूर्वाद्ध में बिना प्रशिक्षण प्राप्त किए मुंबई आकर उसने स्टूडियो के कैटीन ब्वाय, ऑफिस ब्वाय के रूप में और अन्य प्रकार की नौकरियां की। उसे सिनेमाटोग्राफर के रूप में वर्ष 1972 में पहचान मिली, जब उसने राज मारब्रोस की 'वी विटनेस' में काम किया। यद्यपि वह फिल्म रिलीज नहीं हो सकी लेकिन इससे उसे पहचान मिली और आर्ट फिल्मों, मेनस्ट्रीम फिल्मों, विज्ञापन फिल्मों, वृत्तचित्रों और म्यूजीकल वीडियो में काम मिलने लगा। उन्होंने अभी तक 25 से अधिक फिल्मों में कैमरामैन का काम किया है जिसमें से कुछ को अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली है। इसमें '36 चीरंगी लेन', 'परोमा', 'मंडी', 'मेकिंग ऑफ ए महात्मा', 'राम लखन', 'डा. बाबा साहेब अम्बेडकर' और 'गजा गामिनी' शामिल हैं। निर्माता निर्देशक के रूप में 'मोक्ष' उनकी पहली फिल्म है। उन्होंने कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं।



ASHOK MEHTA

Ashok Mehta has really come up the hard way. Landing in Mumbai without any formal training in the early sixties, he had to work as studio canteen boy, office boy, carpentry boy and at other jobs for nine years before being accepted in 1972 at the age of 25 as cinematographer with 'The Witness' by Raj Marbros. Though the film was never released, he got instant recognition and got work in art films, mainstream films, advertising commercials, documentaries and musical videos, working with some of the best names in the industry. He has so far been the cameraman for over 25 films, some of which went on to gain international acclaim, such as '36 Chowringhee Lane', 'Paroma', 'Mandi', 'Making of a Mahatma', 'Ram Lakhan', 'Dr Babasaheb Ambedkar', and 'Gaja Gamini'. 'Moksha' is his first film as producer and director. He has also won several National and International awards.

सर्वोत्तम पटकथा

भारती राजा

पटकथा लेखक : भारती राजा को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम पटकथा लेखन का पुरस्कार भारती राजा को तमिल फिल्म कादल पूक्कल के लिए दिया गया जो पतन के मौजूदा समय में प्रेम, बलिदान और पारिवारिक मूल्यों का चित्रण करती है।

BEST SCREENPLAY

BHARATHI RAJA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the screenplay writer **Bharati Raja**

CITATION

The award for the Best Screenplay for 2000 is given to Bharathi Raja for the Tamil film Kadal Pookkal. In present times of degeneration, the film focuses on love, sacrifice and family values.

भारती राजा

भारती राजा यदि अपने पिछले कैरियर को देखेंगे तो उन्हें काफी संतुष्टि मिलेगी। विभिन्न भाषाओं की तीस से अधिक फिल्मों का निर्देशन कर उन्होंने पांच राष्ट्रीय पुरस्कार, अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कार और अन्य चर्चित पुरस्कार प्राप्त किए हैं। उनकी पिछली फिल्में, जिन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, इस प्रकार हैं- 'मुदल मरियातई', 'वेदम पुडिथु', 'करुथम्मा' और 'आंधी मंदराई'। उनकी अन्य फिल्मों में 'सीता कोका चिलका' और 'मन वासनई' हैं।



BHARATHI RAJA

Bharathi Raja can look back at his career with satisfaction. Having directed more than thirty films in different languages, he has won at least five National Awards and several state-level and popular awards. His previous National Award-winners were 'Mudal Mariyathai', 'Vedam Pudithu', 'Karuthamma', and 'Andhi Mandarai'. Other films include 'Seetha Koka Chilaka' and 'Man Vaasanai'.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

अनूप देव

अनूप देव को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार अनूप देव को हिंदी फिल्म मोक्ष के लिए दिया गया। अनूप देव ने बेहद सावधानी से सही ध्वनि का चयन किया और ध्वनि संयोजन इस तरह से किया कि वह फिल्म की कथा के लिए समुचित वातावरण तैयार हो गया।

BEST AUDIOGRAPHY

ANUP DEV

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the re-recordist of the final mixed track **Anup Dev**

CITATION

The award for the Best Audiography of 2000 is given to Anup Dev for the Hindi film Moksha. The audiographer has, with extreme care, chosen the right sound, ambience and layered the tracks in an immaculate way to create an atmosphere to support the narrative of the film.

अनुप देव

अनुप ने कुछ फिल्मों के लिए राज्य स्तरीय और चर्चित पुरस्कार हासिल किए हैं। इन फिल्मों में उन्होंने रिकार्डिस्ट, री-रिकार्डिस्ट या सहायक री-रिकार्डिस्ट के रूप में काम किया। इन फिल्मों में मराठी फिल्म 'देव शपथ खरे संगेन' और 'सोलजर' शामिल हैं। उन्होंने लगभग 20 फिल्मों में स्वतंत्र रूप से रिकार्डिस्ट का कार्य किया। इनमें से कुछ फिल्में इस प्रकार हैं- परतेस, करीब, डा, बाबा साहेब अम्बेडकर, ताल, सरफरोश और मोक्ष।



ANUPDEV

Anup has already won state-level and popular awards for some films on which he worked as recordist, re-recordist, or associate re-recordist. These include the Marathi film 'Deva Sapath Khare Sangen' (Marathi), and 'Soldier'. He has worked independently on over twenty films as re-recordist. These include 'Pardes', 'Kareeb', 'Dr Babasaheb Ambedkar', 'Taal', 'Sarfarosh', and 'Moksha'.

सर्वोत्तम संपादन

सुरेश पाई और अपूर्व असरानी

संपादक : सुरेश पाई और अपूर्व असरानी को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार सुरेश पाई और अपूर्व असरानी को अंग्रेजी फिल्म स्निप के लिए दिया गया। संपादकों ने एक ऐसी लय पैदा की है जो कहानी को रफ्तार देती है लेकिन फिल्म के स्वरूप और कथानक के सौंदर्य को बनाए रखती है।

BEST EDITING

SURESH PAI & APURVA ASRANI

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the editors **Suresh Pai** and **Apurva Asrani**

CITATION

The award for the Best Editing of 2000 is given to Suresh Pai & Apurva Asrani in the English film Snip! The editors have created an evocative rhythm in the film enhancing the pace of the narrative while aesthetically maintaining the unit of form and content.

सुरेश पाई

सुरेश 'फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडिया, पुणे' से स्नातक हैं। यह उनका पूरी लंबाई की फ़ीचर फ़िल्म के लिए पहला करार था। इसके अतिरिक्त उन्होंने फ़िल्म 'आर या पार' के लिए केतन मेहता के सहयोगी की भूमिका निभाई तथा पुरस्कार जीतने वाली अनेक वृत्तचित्रों के लिए काम किया।



SURESH PAI

For Suresh who is a graduate of the Film and Television Institute of India, Pune, this is his first assignment on a full-length feature film. However, he has earlier assisted Ketan Mehta on 'Aar Ya Paar' as well as several award-winning documentaries.

अपूर्व असरानी

अपूर्व संभवतः भारत में सबसे कम उम्र के फ़िल्म फेयर अवार्ड विजेता हैं। उन्हें राम गोपाल वर्मा की फ़िल्म 'सत्या' के लिए 1998 में यह पुरस्कार मिला था। उन्होंने सुनील आडवाणी द्वारा चिल्ड्रेन्स फ़िल्म सोसायटी के बैनर तले बनाई गई बच्चों की फ़िल्म 'एक अजूबा' का संपादन भी किया। कुछ टेलीविजन धारावाहिकों के लिए कार्य करने के अलावा उन्होंने ट्रेलर और प्रमोशन शॉर्ट्स भी तैयार किए हैं।

APURVA ASRANI

Apurva is probably India's youngest Filmfare Award winner, having bagged the 1998 Filmfare Award for his editing on Ram Gopal Varma's critical and commercial success, 'Satya'. He has also edited 'Ek Ajooba', a children's film for the Children's Film Society, India, by Sunil Advani, and prepared trailers and promotional shorts for several feature films apart from working on some television serials.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

पी. कृष्णमूर्ति

कला निर्देशक : पी. कृष्णमूर्ति को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार पी. कृष्णमूर्ति को तमिल फिल्म भारती के लिए दिया गया। कला निर्देशक ने पूरे सौंदर्य से बीसवीं शताब्दी के शुरूआती दौर को सजीव किया है और बेहद सावधानी से प्रामाणिक चीजों के इस्तेमाल से भीतरी और बाहरी स्वरूप का निर्माण कर उस अवधि के तमिलनाडु को जीवंत किया है।

BEST ART DIRECTION

P. KRISHNAMOORTHY

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the art director **P. Krishnamoorthy**

CITATION

The award for the best art direction of 2000 is given to P. Krishnamoorthy in Tamil film Bharati. The art director has aesthetically recreated the period of early twentieth century taking great care in selecting authentic properties of the time to enhance the décor of both interiors as well as exteriors, thus bringing alive Tamil Nadu of that period.

पी. कृष्णमूर्ति

फाइन आर्ट्स से स्नातक कृष्णमूर्ति के पास रंगमंच, पर्दे और पेंटिंग आदि क्षेत्रों में काम करने का भी अनुभव है। उन्होंने बी.वी. कारंत और बंसी लाल जैसे पटकथा लेखकों के साथ काम किया है। उन्होंने 1972 के बाद से 55 से अधिक फिल्मों में कला निर्देशन और पोशाक डिजाइनर का काम किया है जिसमें से 35 फिल्मों ने पुरस्कार जीता है। इसमें भारी संख्या में ऐतिहासिक फिल्में शामिल हैं जिसे प्रतिष्ठित फिल्म निर्माताओं यथा गिरीश कर्नाड, लेनिन राजेन्द्रन, जी.वी. अव्यर, नेडिमुडि वेंनु, भारती राजा, बालू महेंद्र और अनिल शर्मा ने बनाया है। उन्होंने राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कार तथा समालोचना पुरस्कार हासिल किए हैं।



P. KRISHNAMOORTHY

Graduating in Fine Arts, Krishnamoorthy has multifarious experience on stage, screen and visual arts like painting and sculpture. He has worked with renowned playwrights like B. V. Karanth and Bansi Kaul. He has been art director and costume designer for films from 1972 onwards, and has so far completed work in over 55 films of which over 35 have won awards. These include a large number of historical and period films and have been made by renowned filmmakers like Girish Karnad, Lenin Rajendran, G. V. Iyer, Nedumudi Venu, Bharati Raja, Balu Mahendra, and Anil Sharma. He has won awards from critics' organisations, and at the state and national levels.

सर्वोत्तम वेशभूषा सज्जा

पी. कृष्णमूर्ति

पी. कृष्णमूर्ति को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम वेशभूषा सज्जा का पुरस्कार पी. कृष्णमूर्ति को तमिल फिल्म भारती के लिए दिया गया। इसमें उन्होंने बीसवीं सदी के पूर्वाद्ध के तमिल/बनारस के परिधानों को पूरी व्यापकता में सजीव किया। रंगों का सौंदर्यपूर्ण चयन फिल्म के सेट से एकदम मेल खाता है और फिल्म को प्रामाणिक झलक देता है।

BEST COSTUME DESIGNER

P. KRISHNAMOORTHY

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the costume designer **P. Krishnamoorthy**

CITATION

The award for the Best Costume Designer of 2000 is given to P. Krishnamoorthy in Tamil film Bharati. The costume designer recreates a whole range of period costumes to depict the early twentieth century of Tamil/Benaras. The aesthetic selection of colours goes well with the décor of the structure/sets and the costumes give the film an authentic look.

पी. कृष्णमूर्ति

फाइन आर्ट्स से स्नातक कृष्णमूर्ति के पास रंगमंच, पर्दे और पेंटिंग आदि क्षेत्रों में काम करने का भी अनुभव है। उन्होंने बी.वी. कारंत और बंसी लाल जैसे पटकथा लेखकों के साथ काम किया है। उन्होंने 1972 के बाद से 55 से अधिक फिल्मों में कला निर्देशन और पोशाक डिजाइनर का काम किया है जिसमें से 35 फिल्मों ने पुरस्कार जीता है। इसमें भारी संख्या में ऐतिहासिक फिल्में शामिल हैं जिसे प्रतिष्ठित फिल्म निर्माताओं यथा गिरीश कर्नाड, लेनिन राजेन्द्रन, जी.वी. अय्यर, नेडिमुडि वेनु, भारती रजा, बालू महेन्द्र और अनिल शर्मा ने बनाया है। उन्होंने राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय पुरस्कारों तथा समालोचना पुरस्कार हासिल किए हैं।



P. KRISHNAMOORTHY

Graduating in Fine Arts, Krishnamoorthy has multifarious experience on stage, screen and visual arts like painting and sculpture. He has worked with renowned playwrights like B. V. Karanth and Bansi Kaul. He has been art director and costume designer for films from 1972 onwards, and has so far completed work in over 55 films of which over 35 have won awards. These include a large number of historical and period films and have been made by renowned filmmakers like Girish Karnad, Lenin Rajendran, G. V. Iyer, Nedumudi Venu, Bharati Raja, Balu Mahendra, and Anil Sharma. He has won awards from critics' organisations, and at the state and national levels.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

अनु मलिक

संगीत निर्देशक (गीत एवं पृष्ठ संगीत) : अनु मलिक को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार अनु मलिक को हिंदी फिल्म रिफ्यूजी के गीत और संगीत के लिए दिया गया जो फिल्म के कथानक के साथ घुलमिल कर कहानी को उभारते हैं। इस बात के पूरे प्रयत्न किए गए हैं कि गीतों में संगीत की आत्मा के सभी तत्व समाहित हों।

BEST MUSIC DIRECTION

ANU MALIK

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the music director (songs and background score)
Anu Malik

CITATION

The award for the Best Music Direction of 2000 is given to Anu Malik for the Hindi film Refugee for a score that blends with the story and heightens its narrative. A great effort has been made to ensure that the compositions have all the ingredients of the music of the soul.

अनु मलिक

मशहूर संगीत निर्देशक सरदार मलिक के पुत्र अनु ने 16 वर्ष की आयु में संगीत निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा था। उस वक्त उन्हें 'हंटरवाली-77' के संगीत निर्देशन की जिम्मेवारी मिली थी। उनके कैरियर का महत्वपूर्ण समय 'सर' फिल्म से शुरू हुआ। अभी तक उन्होंने 200 से अधिक फिल्मों में 1500 से भी अधिक गानों का संगीत निर्देशन किया है। उन्होंने स्वयं भी अनेक गाने गाए हैं और उनकी एक एलबम भी है जिसका नाम है- 'इंग्लिश आईज़' उन्हें 'बार्डर' फिल्म का गाना 'संदेश आते हैं' के लिए राष्ट्रीय और अनेक चर्चित पुरस्कार मिले हैं। पुराने और नये गीतों को मिलाकर नया संगीत बनाने के लिए वह विख्यात हैं। उनकी कुछ फिल्मों में 'एक जान है हम', 'मर्द', 'गंगा जमुना सरस्वती', 'सोनी महिवाल', 'एक चादर मैली सी', 'राधा का संगम', 'बाजीगर', 'जानम', 'चमत्कार', 'अकेले हम अकेले तुम', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी', 'विरासत', 'जोश', 'रिफ्यूजी', 'करीब' और 'फिजा' शामिल हैं।



ANU MALIK

Son of veteran music director Sardar Malik, Anu got his first opportunity when he was only 16 to score the music of 'Hunterwali 77'. This was followed by a spate of films, but the eventful phase in his career started with 'Sir'. He has so far composed over 1500 songs in more than 200 films. He has also sung a large number of songs and recorded a private album titled 'English Eyes'. He has been nominated every year over the last decade for some of his songs for popular or National Awards. He won the National and several popular awards for the song 'Sandeshe aate hain' from the film 'Border'. He is known for setting new trends and simultaneously creating a fusion of the old and the new. Some of his films include 'Ek Jaan Hain Hum', 'Mard', 'Ganga Jamuna Saraswati', 'Sohni Mahiwal', 'Ek Chaadar Maili Si', 'Radha Ka Sangam', 'Baazigar', 'Jaanam', 'Chamatkar', 'Akele Hum Akele Tum', 'Main Khiladi Tu Anari', 'Viraasat', 'Josh', 'Refugee', 'Kareeb', and 'Fiza'.

सर्वोत्तम गीतकार

युसुफअली केचेरी और जावेद अख्तर

युसुफली केचेरी और जावेद अख्तर को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम गीतकार का पुरस्कार युसुफली केचेरी को मलयालम फिल्म "मड़ा-द रेन" के गीत "गायम हरि नाम धयम" और जावेद अख्तर को फिल्म रिफ्यूजी के गीत "पंछी नदिया और पवन" के लिए संयुक्त रूप से दिया गया। युसुफली का गीत कृष्ण भक्ति के लिए हमारी परम्पराओं का समुचित मिश्रण पेश करता है। जावेद अख्तर प्रेम और करुणा के शब्दों में बहुत सुंदरता से देशों और सीमाओं को लांघने की बात कहते हैं।

BEST LYRICS

YUSAFALI KECHERY AND JAVED AKHTAR

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the lyricists **Yusufali Kechery** and **Javed Akhtar**

CITATION

The award for the Best Lyrics of 2000 is being shared by Yusufali Kechery and Javed Akhtar jointly for the song 'Gayam Hari Nama Dhayam' in the Malayalam film 'Mazha - the Rain' and for the song 'Panchhi nadiya aur pavan' in the Hindi film 'Refugee' respectively. Yusufali's song depicts the right mix of the ethos of our land in an invocation to Lord Krishna, while Javed Akhtar in his inimitable style speaks of transcending borders and countries, with beautifully written words for love and compassion.

युसुफ अली केचरी

युसुफ अली पेशे से वकील हैं और त्रिचुर में वकालत की प्रैक्टिस कर रहे हैं। उन्होंने अभी तक बारह किताबें प्रकाशित की हैं जिसमें से आठ कवितासंग्रह हैं। उनकी कविता के लिए विभिन्न संगठनों की ओर से और राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने लगभग 100 मलयालम फिल्मों के लिए गीत लिखे हैं और अनेक राज्य स्तरीय पुरस्कार भी मिले हैं। युसुफ अली को संस्कृत के गानों के लिए भी पहचान मिली है। उन्होंने चार फिल्मों का निर्माण किया है जिसमें से तीन में स्वयं ही निर्देशन किया है। साहित्यिक प्रकाशन में उनका लगातार योगदान मिलता रहता है। वह फिल्म निर्माण और निर्देशन में भी निरंतर शामिल हैं।



YUSUF ALI KECHERY

Trained and enrolled as an advocate, Yusufali is in legal practice in Trichur. He has published twelve books so far, of which eight are collections of poems. He has won a large number of awards for his poetry at the state-level and from different organisations. He has written lyrics for over 100 Malayalam films and won several state-level awards. Yusufali has also been recognised for his songs in Sanskrit, and has produced four films and directed three of them and they went on to win awards. He is a regular contributor to literary publications, and continues to be involved in production and direction of films.

जावेद अख्तर

सुप्रसिद्ध उर्दू कवि और गीतकार जॉन निसार अख्तर के पुत्र जावेद अख्तर पटकथा लेखक, गीतकार और कवि हैं। अपने पहले सहयोगी सलीम के साथ मिलकर जावेद ने जंजीर, दीवार, शोले और हाथी मेरे साथी जैसी फिल्मों की पटकथा लिखी। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्र रूप से 'सागर', 'मिस्टर इंडिया', और 'अर्जुन' की पटकथा लिखी। उन्होंने काव्य संग्रह भी प्रकाशित किया है। जावेद को गीत की रचना के लिए तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार, दस बार फिल्म फेयर अवार्ड और अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। गीतों में साहित्य का समावेश उनकी विशेषता है। उन्होंने 'सरगम' एल्बम के लिए नुसरत फतेह अली खान और 'ब्रेथलेस' के लिए शंकर महादेवन का साथ दिया। उन्होंने 'तरकश' नामक एल्बम भी जारी की है।



JAVED AKHTAR

Son of the renowned Urdu poet and film lyricist Jan Nisar Akhtar, Javed has excelled as a scriptwriter, lyricist and poet. With his former partner Salim, Javed had written the scripts of various blockbusters like 'Zanjeer', 'Deewar', 'Sholay' and 'Haathi Mere Saathi'. Later on his own, he wrote films like 'Sagar', 'Mr India', and 'Arjun'. He has also published anthologies of poetry. Javed has won the National Award thrice, won the Filmfare Award ten times, and also several other awards. Revival of literary flavour in lyrics has been his major achievement. He collaborated with Nusrat Fatch Ali Khan for an album called 'Sargam' and with Shankar Mahadevan for 'Breathless', and brought out his own audio book 'Tarkash'.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

सौमित्र चटर्जी

अभिनेता : सौमित्र चटर्जी को रजत कमल और 25,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार अभिनेता सौमित्र चटर्जी को बंगला फ़िल्म "देखा" में भूमिका के लिए दिया गया। इसमें वह उस क्षरित होते अधिनायकवाद के वंशज की भूमिका में हैं जो नेत्र ज्योति खो चुका है। सौमित्र बहुत बारीकी से हमें अपने जीवन, अतीत और वर्तमान के भीतर पूरी संवदेना के साथ भ्रमण कराते हैं।

SPECIAL JURY AWARD

SOUMITRA CHATTERJEE

Rajat Kamal and cash prize of Rs 25,000 to the actor **Soumitra Chatterjee**

CITATION

The Special Jury Award of 2000 is given to the actor Soumitra Chatterjee in Bengali film 'Dekha' for his realistic portrayal of the scion of a fading aristocracy who has lost his eyesight. Soumitra with great subtlety takes us through myriad evoking situations of his life, past and present with great sensitivity.

सौमित्र चटर्जी

सौमित्र अपने किशोरावस्था के दिनों में अभिनेता-निर्देशक शिशिर कुमार भादुड़ी से पूरी तरह प्रभावित थे। सत्यजीत रे ने जब अपनी फिल्म 'अपूर संसार' में अपु की भूमिका का आफर दिया था उस वक्त सौमित्र ऑल इंडिया रेडियो में स्टाफ आर्टिस्ट के रूप में कार्यरत थे। उसके बाद उन्होंने रे की चौदह फिल्मों में प्रधान नायक की भूमिका की थी। उन्होंने अभी तक 150 फिल्मों में अभिनय किया है। उन्होंने थिएटरों में लेखक, निर्देशक और अभिनेता के रूप में काम किया। उनकी कुछ फिल्में इस प्रकार हैं- ह्वीलचेयर, गणदेवता, गणशत्रु, गाछ, असूख और आकाश कुसुम।



SOUMITRA CHATTERJEE

Now in his seventies, Soumitra had been deeply influenced by actor-producer Sisir Kumar Bhaduri in his younger days. He was working in All India Radio as a staff artiste when the legendary master of cinema Satyajit Ray offered him the role of Apu in 'Apu Sansar', the third of the 'Apu' trilogy. After that, he worked as the principal actor in fourteen films by Ray. He has so far acted in over 150 films with some of the most leading filmmakers in the country. He has also contributed to theatre as a writer, director and actor and is a poet of no mean repute. Some of his films include 'Wheelchair', 'Ganadevta', 'Ganashatru', 'Gaach', 'Asookh', and 'Aakash Kusum'.

सर्वोत्तम नृत्य संयोजन

जी. कला

जी. कला को रजत कमल और 10,000 रुपये नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम नृत्य संयोजन का पुरस्कार जी. कला को मलयालम फिल्म "कोचू कोचू संतोषगल" में शास्त्रीय नृत्यों के संयोजन के लिए दिया गया जिसमें वह पूरी कुशलता से हमारी समृद्ध विरासत और परंपरा को ध्यान में रखते हुए शास्त्रीय नृत्य का निर्माण किया है।

BEST CHOREOGRAPHY

G. KALA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the choreographer **G. Kala**

CITATION

The award for the Best Choreography of 2000 is given to G. Kala for the Malayalam film 'Kochu Kochu Santoshangal' for the classical dancer number skillfully composed, creating the symbiotic dance in keeping with our rich traditions and heritage.

जी. कला

छोटी ही आयु में नृत्य सीखने के बाद कला ने अपना पहला नृत्य नौ वर्ष की आयु में पेश किया। बारह वर्ष की आयु में उन्होंने पहली बार सहायक नृत्य संयोजक के रूप में अपने गुरु रघुराम के साथ काम किया। उन्होंने गोपी कृष्ण से कथक, और लंदन में बैले सीखा। बाद में उन्होंने भारतीय और विदेशी नृत्य भी सीखे। पन्द्रह वर्ष की आयु से उन्होंने फिल्मों में नृत्य संयोजन का काम शुरू किया। अब तक वे 3300 से अधिक गीतों में और तकरीबन 600 फिल्मों में नृत्य संयोजन कर चुकी हैं। उन्होंने बेंगलूर में हुए मिस वर्ल्ड कार्यक्रम में 1996 में नृत्य संयोजन किया था। वे अब नृत्य की शिक्षा भी देती हैं।



G. KALA

Learning classical dances from the age of five, Kala had her debut as a dancer when she was nine. At the age of twelve, she got her first break as Assistant Choreographer under her Guru, Raghu Ram. She also learnt Kathak from Gopi Krishna and ballet in London. She gradually picked up other Indian and western dance forms. When just 15, she started independent choreography for feature films. She has choreographed over 3300 songs in almost 600 films to date in various languages. She has also performed or organised shows in India and abroad. One of her achievements was the choreography for the Miss World Beauty Pageant 1996 in Bangalore. She now trains young aspirants at her own dance training institute.

सर्वोत्तम बंगला फ़िल्म

देखा

निर्माता : रमेश गांधी को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद

निर्देशक : गौतम घोष को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम बंगला फ़िल्म का पुरस्कार फ़िल्म 'देखा' को दिया गया। यह फ़िल्म पुरातनवादियों के देखे - अनदेखे संसार के अस्तित्ववादी असंमजस को खोजने का प्रयास करती है और आधुनिक समय में इसके प्रतिबिंब और आधुनिक मुहावरों का संयोजन करती है।

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

DEKHA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Ramesh Gandhi**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Goutam Ghose**

CITATION

The award for the Best Feature Film of 2000 in Bengali is given to the film Dekha. The film through the seen and unseen world of the protagonist tries to explore the existential dilemma of modern times which is reflected in the inexorable flow of time and intertwines into the mixed metaphor of modern allegories.

रमेश गांधी

रमेश कई तरह के व्यवसायों से जुड़े हैं। जिनमें समाचार प्रकाशन और बैंकिंग भी शामिल है। वे दिल्ली के "द पाइनियर" समाचार पत्र के प्रकाशक हैं। कलकत्ता की सत्यजीत रे फिल्म और टेलिविजन इंस्टीट्यूट की सोसाइटी के सदस्य होने के अलावा वे रेनबो प्रॉडक्शन नामक कम्पनी से जुड़े हुए हैं, जो टेलिविजन के लिए "खास खबोर" तथा धारावाहिक जन्मभूमि जैसे अनेक कार्यक्रम बनाते हैं। इस कम्पनी ने बंगला फिल्म 'किच्छु संलाप किच्छु प्रलाप' का निर्माण भी किया था। मीडिया जगत की ये जानी-मानी हस्ती एक अन्य विज्ञापन एवं विपणन कम्पनी में भी शामिल है।



RAMESH GANDHI

A businessman involved in activities as varied as publishing newspapers to merchant banking, Ramesh is publisher of the English daily 'The Pioneer' in Delhi. A member of the Governing Council of the Society of the Satyajit Ray Film and Television Institute, he is also associated with Rainbow Productions which has been involved with production of television software like 'Khas Khabor' and the daily soap opera 'Janmabhoomi', and the Bengali film 'Kichu Sanglap Kichu Pratap'. A well-known media personality, he is additionally involved with an advertising and marketing company among other groups.

गौतम घोष

कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा के बाद गौतम ने थियेटर में और फोटो जर्नलिस्ट के नाते काम किया। 1973 से वे लघुचित्र बनाने लगे गये, जिनमें 'न्यू अर्थ' और 'हंगरी ऑटम' शामिल हैं। उनकी पहली फ़ीचर फिल्म तेलगू भाषा में बनी थी और उसका नाम था 'माँ भूमि' इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला था। इसके बाद इन्होंने कई फिल्में बनाई जिनमें 'वखल', 'पार', 'अन्तरजली यात्रा', 'पद्मा नादिर' 'माझी', 'पतंग' और 'गुडिया' शामिल है। इन्हें आठ बार राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार मिल चुका है और इनकी फिल्में अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में भेजी जा चुकी हैं।



GOUTAM GHOSE

After graduating from Calcutta University, Gautam worked actively in the theatre and also for some time as a photojournalist. He began making documentaries in 1973 with 'New Earth'. 'Hungry Autumn' in 1974 won awards at Oberhausen and Leipzig. Two years later, he made 'Chains of Bondage'. Interestingly, his first feature film was in Telugu, 'Maa Bhoomi' on the Naxalite movement in Telengana which won the National award as the Best Telugu Film of the Year. Then came films like 'Dakhal', 'Paar', 'Antarjali Yatra', 'Padma Nadir Majhi', 'Patang', 'Gudia' and 'Dekha'. He has won the National Award eight times, and 'Paar' won the best actor award for Naseeruddin Shah at Venice. He has won several other international awards.

सर्वोत्तम हिंदी फिल्म

जुबैदा

निर्माता : फारूक रतौन्से को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद पुरस्कार

निर्देशक : श्याम बेनेगल को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम हिंदी का पुरस्कार जुबैदा को दिया गया। इसमें राजनीतिक उथल-पुथल को एक भावुक मुस्लिम युवती के जीवन के उतार-चढ़ाव में ढाला गया है जो समाज को तमाम मर्यादाओं को लांघकर एक विवाहित महाराजा से शादी करती है। यह स्वतंत्रता के बाद के भारत में राजनीतिक प्राथमिकताओं वाले समय में प्रेम की पराकाष्ठा की कहानी है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

ZUBEIDAA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Farouq Rattonsej**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Shyam Benegal**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Hindi of 2000 is given to Zubeidaa. The political turmoil has been juxtaposed with the upheavals of the life of a tempestuous Muslim girl who defies all norms to marry a married Maharaja. It is a story of obsessive love in the times of political priorities in post-independent India.

फारूक रतोन्से

फारूक ने अब तक तीन हिन्दी फ़िल्मों का निर्माण किया है, जिनमें रवि टंडन-निर्देशित "खुदाार" (1982) तथा "काश" (महेश भट्ट-1987) शामिल हैं। दोनों फ़िल्में बेहद सफल रहीं।

श्याम बेनेगल

श्याम बेनेगल एक पेशेवर फ़ोटोग्राफ़र के पुत्र हैं। सिनेमा के प्रति उनकी रुचि को उनके पिता ने एक मूवी कैमरा देकर बढ़ाया। इस वक्त वह मात्र 12 वर्ष के थे। अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करने के बाद श्याम ने विज्ञापन से अपना कैरियर आरंभ किया। उन्होंने पहला वृत्तचित्र 'चिल्ड्रन ऑफ़ स्ट्रीट्स' वर्ष 1967 में बनाया तथा उनकी पहली फ़ीचर फ़िल्म 'अंकुर' वर्ष 1974 में बनी। उन्होंने बीस से अधिक फ़ीचर फ़िल्मों, दो फ़ीचर लेंथ की वृत्तचित्र, चार टेलीसीरियल और अनगिनत शॉर्ट फ़िल्मों बनाई हैं। उन्हें वर्ष 1976 में पद्मश्री और 1991 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। उनकी हिन्दी की कुछ फ़िल्में हैं- मंडी, निशांत, मंथन, भूमिका, कलयुग और सूरज का सातवां घोड़ा। अन्य भाषा की फ़िल्मों में 'दी मेकिंग ऑफ़ महात्मा' (अंग्रेज़ी एवं हिन्दी), 'सरदारी बेगम' और 'ममो' (दोनों उर्दू) और 'अनुग्रहम' (तेलुगु) शामिल हैं। उन्होंने जवाहर लाल नेहरू की 'डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' पर आधारित टीवी श्रृंखला 'भारत एक खोज' बनाया।



FAROUQ RATTONSEY

A graduate, Farouq has so far produced three Hindi films, the others being 'Khuddaar' in 1982 directed by Ravi Tandon and starring Amitabh Bachchan and Parveen Babi and 'Kaash' in 1987 directed by Mahesh Bhatt starring Jackie Shroff and Dimple Kapadia. Both the films fared well at the boxoffice.

SHYAM BENEGAL

Son of a professional photographer, Shyam's interest in cinema was first kindled when his father bought him a movie camera when he was hardly twelve years old. After completing his post-graduation in Economics, Shyam embarked on a career in advertising in Mumbai. He made his first documentary 'Children of the Streets' in 1967 and his first feature 'Ankur' came in 1974. Since then, almost every film made by him has won high acclaim and many have gone on to become boxoffice successes. He has already made more than twenty feature films, two feature length documentaries, four teleserials and innumerable short films. He was awarded the Padma Shri in 1976 and the Padma Bhushan in 1991. Some of his films include 'Mandi', 'Nishant', 'Manthan', 'Bhumika', 'Kalyug', and 'Suraj ka Saatwan Ghoda' in Hindi, 'The Making of the Mahatma' in English and Hindi, 'Sardari Begum' and 'Mammo' in Urdu, and 'Anugraham' in Telugu. He also made the epoch-making 'Bharat Ek Khoj', a television series based on Jawaharlal Nehru's 'Discovery of India'.

सर्वोत्तम कन्नड़ फ़िल्म

मत्तदाना

निर्माता : एच.जी. नारायण और आई.पी. मल्लीगौड़ा को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद

निर्देशक : टी.एन. सीताराम को रजत कमल और 20,000 रुपये नकद

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम कन्नड़ फ़िल्म का पुरस्कार मत्तदाना को दिया गया जो साठ के दशक के एक उपन्यास पर आधारित है। यह फ़िल्म जनसाधारण के जीवन को प्रभावित करने वाले व्यापक राजनीतिक तंत्र का चित्रण करती है। भ्रष्टाचार के गलियारों और सत्ता संभालने वाली ताकतों के चित्रण की दृष्टि से फ़िल्म सराहनीय है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

MATHADANA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producers **H. G. Narayan** and **I.P. Malligowda**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **T.N. Seetharam**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Kannada of 2000 is given to Mathadana based on a novel in the early sixties. The film delineates the way in which the larger political system influences and manipulates the lives of ordinary people at various levels: a commendable critique of the corroding corruption and power managing forces.

एच.जी. नारायण

उत्पाद व्यवसाय में 30 वर्ष का अनुभव रखने वाले श्री नारायण (61) फिल्म निर्माण के लिए भी जाने जाते हैं। वह कर्नाटक के हसन के निवासी हैं।

आई.पी. मल्लिगौड़ा

हसन में कॉफी बागान का व्यापार करने वाले श्री मल्लिगौड़ा ने अब तक दो फिल्मों का निर्माण किया है। इनमें पहली फिल्म थी 'कानूरु हेगादिथी' जिसको राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार भी मिला था।

टी.एन. सीताराम

कला के क्षेत्र में सीताराम को अनुभव उस वक्त प्रारंभ हुआ जब उन्होंने कन्नड़ नाटक लिखना शुरू किया। 1980 में 'अस्फोट' उनके लिए मील का पत्थर साबित हुआ जबकि 1987 में 'नम्मोलागोब्बा नजुकैया' ने एक नई परंपरा शुरू की। सीताराम अनेक अखबारों के लिए कालम भी लिखते हैं। उन्होंने फिल्म 'पल्लवी' में मुख्य भूमिका निभाई थी। इसी फिल्म ने 1976 में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। बाद में उन्होंने अनेक फिल्मों के लिए पटकथा और संवाद भी लिखा। उन्होंने राज्य नाटक अकादमी पुरस्कार भी जीता है। राज्य और केन्द्र सरकार के लिए उन्होंने अनेक वृत्तचित्रों का निर्माण भी किया। वह टेलीविजन सीरियलों के लिए पटकथा लेखन और निर्देशन से भी जुड़े रहे। बतौर निर्देशक 'मत्तवाना' उनकी पहली फीचर फिल्म है।



H. G. NARAYAN

Having more than thirty years of experience in the Excise business and more than two decades as fleet contractor, Mr Narayan who is now sixtyone is also well known for film production. He lives in Hassan in Karnataka.

I.P. MALLEGOWDA

A coffee planter from Hassan, I.P. Malligowda had produced two Kannada feature films, the first being 'Kanooru Heggadithi'. This film had also won an award at the national level.

T. N. SEETHARAM

Experience for Seetharam in the field of arts began at a young age when he started scripting Kannada plays. 'Asphota' in 1980 was hailed as a milestone, while 'Nammolagobba Najookaiah' in 1987 set a new trend. Seetharam is also a regular columnist in major newspapers. He acted the main role in the film 'Pallavi' which won a national award in 1976, and then went on to write scripts and dialogues for several films. He has won the State Nataka Academy award. He has produced several documentaries for the state and central governments and also scripted and directed television serials. 'Mathadana' is his first feature film as a director.

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म

शयनम और कोचू कोचू संतोषंगल

रजत कमल और 20,000 रुपये शयनम के निर्माता एम.पी. सुकुमारन नायर को और कोचू कोचू संतोषंगल के निर्माता मैसर्स गृहलक्ष्मी फिल्मस।

रजत कमल और 20,000 हजार रुपये नकद शयनम के निर्देशक एम.पी. सुकुमारन नायर और कोचू कोचू संतोषंगल के निर्देशक सत्यन अतिक्कड़ को।

प्रशस्ति

शयनम

यह फिल्म अपनी अद्भुत संरचना और दृश्यावली से एक ईसाई समुदाय की जटिल कहानी को साधारण ढंग से पेश करती है।

कोचू-कोचू संतोषंगल

यह फिल्म एक नृत्यांगना पत्नी और उससे अगाध प्रेम रखने वाले पति के जटिल संबंधों का खूबसूरती से चित्रण करती है। यह जीवन और कला के मूल्यों और दोनों के सह अस्तित्व को रेखांकित करती है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

SAYANAM AND KOCHU KOCHU SANTHOSHANGAL

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producers **M.P. Sukumaran Nair** for **Sayanam** And **Messrs Grihalakshmi Films** for **Kochu Kochu Santhoshangal**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the directors **M.P. Sukumaran Nair** for **Sayanam** And **Sathyan Anthikkad** for **Kochu Kochu Santhoshangal**

CITATION

SAYANAM

The film with a wonderful structure and well worked out Mise-en-scenes tries to depict a complex story of a Christian community in a simple manner.

KOCHU KOCHU SANTHOSHANGAL

The film has a brilliant narrative depicting the complex relationship between a dancer wife and a loving husband. It highlights the values of life, art and the co-existence of the two.

एम.पी. सुकुमारन नायर

केरल के अत्यंत प्रतिभाशाली फ़िल्म निर्माता एम. पी. सुकुमारन नायर निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक और वेशभूषा डिजाइनर हैं। विज्ञान में स्नातक श्री नैय्यर ने पुणे के फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान से निर्देशन में डिप्लोमा लेने के बाद अदूर गोपालकृष्णन के सहायक के रूप में काम किया। उनकी पहली स्वतंत्र फ़ीचर फ़िल्म 1990 में 'अपराहम' और 1995 में 'कड़कम' थी। पहली फ़िल्म को अनेक पुरस्कार मिले और कई अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोह में भेजी गई। उनकी दूसरी फ़िल्म को राज्य स्तर पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म, सर्वश्रेष्ठ कहानी, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ संगीत और सर्वश्रेष्ठ ध्वनि का पुरस्कार मिला और कायरो, पेसरो के फ़िल्म समारोहों में प्रवेश मिला।



सत्यन अतिककड़

सत्यन ने अपना कैरियर साहित्य के क्षेत्र में कविताएं और कहानियां लिखकर प्रारंभ किया। वह वर्ष 1973 में मद्रास स्थित रेखा सिने आर्ट्स के फ़िल्म निर्देशन पाठ्यक्रम में शामिल हो गए। उनके द्वारा निर्देशित उनकी पहली फ़िल्म 'कुरुकेटे कल्याणम' (वर्ष 1982) है। उन्होंने 40 फ़िल्मों के लिए निर्देशन किया। उनकी फ़िल्म 'टी.पी. बालगोपालन एम.ए.' ने मध्यम वर्गीय परिवार की समस्याओं को आगे लाया और इसे सर्वश्रेष्ठ कहानी का राज्य पुरस्कार प्राप्त हुआ। 'विन्दम चिला विट्टु कारयांगल' को राज्यस्तरीय चर्चित फ़िल्म अवार्ड, तथा अन्य कई पुरस्कार मिले। उनकी कुछ अन्य फ़िल्में इस प्रकार हैं— 'संमनसुल्लवाकु समाधनम', 'नोडाडिकट्टु', 'संदेशम' और 'तुवालकोट्टारम'।



M.P. SUKUMARAN NAIR

One of the most versatile filmmakers from Kerala, M.P. Sukumaran Nair is a producer, director, screenplay writer, and costume designer. After getting a Diploma in Direction from the Film and Television Institute of India in Pune, he was Assistant Director to Adoor Gopalakrishnan. His first independent feature was 'Aparahanam' in 1990 and 'Kazhagam' in 1995. The first won several awards, and was entered in several international festivals including those in Manheim, Vienna, Portugal and India. The second won the best film, best story, best actress, best music and best sound awards at the state level awards and was entered in Cairo, and Pesaro among other places.

SATHYAN ANTHIKKAD

Sathyan began his career in the literary field by writing poems and stories. He joined a course in Film Direction at Rekha Cine Arts in Madras in 1973. He directed his first film "Kurukkante Kalyanam" in 1982. He has directed over 40 films. His film "T.P. Balagopalan M.A." brought middle class life to the forefront in Malayalam cinema, and won the state award for the best story. "Veendum Chila Veettu Karyangal" won the state award for popular film and other awards. Some other films are 'Sanmanasullavarku Samadhanam', 'Nadodikattu', 'Sandesham', and 'Thuvallkottaram'.

सर्वोत्तम मणिपुरी फिल्म

चटलेडो आईडी

निर्माता : मखोनमणि मोंगसाबा को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : मखोनमणि मोंगसाबा को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम मणिपुरी फिल्म का पुरस्कार चटलेडो आईडी को दिया गया। यह फिल्म एक जटिल प्रेम कथा को साधारण ढंग से कहती है जिसमें मिट्टी की गंध खूबसूरती से समाहित है।

BEST FEATURE FILM IN MANIPURI

CHATLEDO EIDEE

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Makhonmani Mongsaba**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Makhonmani Mongsaba**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Manipuri of 2000 is given to Chatledo Eidee. The film narrates a complex love story in a simple manner and reflects the flavour of the land beautifully.

मखोनमणि मोंगसाबा

साहित्य में मास्टर डिग्री लेने और नाट्य कला में डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद इन्होंने शॉर्ट स्टोरी लिखने, कविता, गीत लिखने, निर्माण और निर्देशन के अलावा रंगमंच और फिल्मों में अभिनेता के रूप में भी काम किया। उनके नाटक विदेशों में भी शामिल हुए। उन्होंने फिल्मों में अभिनय के लिए पुरस्कार भी जीते हैं। वह दूरदर्शन के लिए अनेक कार्यक्रम बना रहे हैं, साथ ही फिल्म प्रभाग के लिए फिल्में भी बना रहे हैं।



MAKHONMANI MONGSABA

After arming himself with a Master in Literature and a Diploma in Dramatic Arts, this prolific short storywriter, poet, lyricist, and producer and director also worked as actor on both stage and films. He has travelled to many countries with his plays and also won awards for acting in films. He has been making several television programmes for Doordarshan and films for the Films Division as well. He has produced several documentary films on various subjects. 'Chatledo Eidee' is his first feature film as producer-director.

सर्वोत्तम मराठी फिल्म

अस्तित्व

निर्माता : ज़ामू सुगंध को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : महेश मांजरेकर को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम मराठी फिल्म का पुरस्कार 'अस्तित्व' को दिया गया। जो विवाहंतर संबंधों और महिलाओं के दमन के सामाजिक मुद्दों से जुड़ती है। यह फिल्म महिलाओं में अधिकार की भावना के सकारात्मक मोड़ पर समाप्त होती है।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

ASTITVA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Jhamu Sugandh**

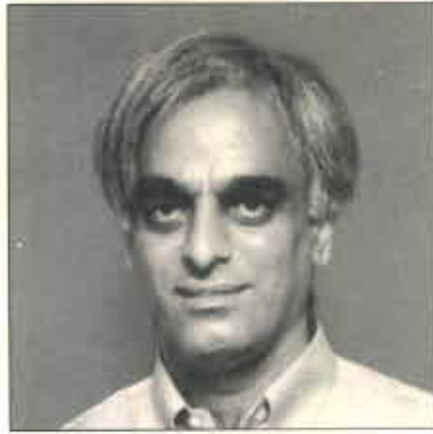
Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Mahesh Manjrekar**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Marathi of 2000 is given to Astitva as it deals with social issues, adultery and the subjugation of women. The film ends on a positive note of a woman's empowerment when the protagonist extends her horizon beyond home and hearth.

झामू सुगंध

एक दशक से अधिक से झामू फिल्म जगत को व्यवसायिक और कला दोनों तरह को फिल्मों देते आए हैं। इसमें 'बाम्बे', 'रंगीला', 'वीइ', 'चाची-420', 'फायर', 'हम दिल दे चुके सनम', '1947-अर्थ' और 'खूबसूरत' शामिल हैं। उनकी नई फिल्म आमिर खान की होम प्रोडक्शन 'लगाan' है।



JHAMU SUGANDH

In the film industry for over a decade, Jhamu is credited with having produced and presented both commercial and artistic films. These include 'Bombay', 'Rangeela', 'Daud', 'Chachi 420', 'Fire', 'Hum Dil De Chuke Sanam', '1947 - Earth', and 'Khoobsurat'. He has given opportunities to a whole generation of creative directors. His new films include 'Lagaan' which is Aamir Khan's first production under his own banner.

महेश मांजरेकर

तीस से अधिक नाटकों, टेलीफिल्मों, फिल्मों और धारावाहिकों में अभिनय कर चुके महेश मांजरेकर अब निर्माण और निर्देशन के क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं। उन्होंने व्यवसायिक और कला दोनों तरह की फिल्में बनाई हैं। उनकी कुछ फिल्मों जिन्होंने राज्य, राष्ट्रीय समालोचना और चर्चित पुरस्कार जीते हैं, इस प्रकार हैं- 'आई', 'अस्तित्व', 'निदान' और 'वास्तव'। हिन्दी और मराठी रंगमंच पर अभिनय के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और अन्य चर्चित पुरस्कार प्रदान किया गया है। अन्य फिल्मों में 'जिस देश में गंगा रहता है' और 'कुरुक्षेत्र' शामिल हैं।



MAHESH MANJREKAR

After acting in more than thirty plays, telefilms, films, and television serials, Mahesh has turned producer and directed and made creative films in both the commercial and artistic mould. Some of his films that won state, national, critic or popular awards include 'Aai', 'Astitva', 'Nidaan', and 'Vaastav'. He also won the best actor and other awards for his plays in Hindi and Marathi. Other films like 'Jis Desh mein Ganga rehta hai' and 'Kurukshetra' also shows his range.

सर्वोत्तम तमिल फिल्म

भारती

निर्माता : मेसर्स मीडिया ड्रीम्स प्रा० लि० को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : ज्ञान राजशेखरन को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम तमिल फिल्म 'भारती' सुब्रह्मण्यम भारती के जीवन और काल को बहुत प्रामाणिक ढंग से दर्शाती है और हमारे स्वाधीनता संग्राम के इतिहास को उकेरती है। इस महान दुष्ट कवि की रचनाएँ आज बहुत प्रासंगिक हैं।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

BHARATI

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 for the producer **Messrs Media Dreams (P) Ltd**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Gnana Rajasekharan**

CITATION

The award for Best Feature Film in Tamil is given to the film Bharati. This biographical film depicts the life and times of Subramanya Bharati in a very authentic manner, unfolding the history of our freedom struggle. The compositions of this great visionary poet stand out with great relevance today.

ज्ञान राजशेखरन

भारतीय प्रशासनिक सेवा के सदस्य और केरल के वरिष्ठ पदों को सुशोभित करने वाले ज्ञान राजशेखरन केरल राज्य फिल्म विकास निगम और चेन्नई स्थित सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन में भी शामिल हैं। उनकी सबसे पहली फिल्म 'मोघा मूल' (1994) को किसी निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फिल्म को इंदिरा गांधी अवार्ड मिला था। उन्हें तमिलनाडु में राज्यस्तरीय विशेष जूरी पुरस्कार भी मिल चुका है। उन्होंने एक फीचर फिल्म 'मुगम' का दो वर्ष पहले निर्देशन किया था और एक शॉर्ट फिल्म बनाई थी। वह एक जाने माने पटकथा लेखक और उपन्यासकार हैं।



GNANA RAJASEKHARAN

A member of the Indian Administrative Service and holding senior positions in the state government in Kerala, Gnanarajasekharan has also been involved with the Kerala State Film Development Corporation and the Central Board of Film Certification in Chennai. His very first film 'Mogha Mull' in 1994 had won the Indira Gandhi National Award for the best first film of a director, and a state-level special jury prize in Tamil Nadu. He had also directed feature film 'Mugam' two years ago and made a short film. He is also a well known playwright and novelist.

सर्वोत्तम तेलुगु फ़िल्म

नुव्वे कावाली

निर्माता : रामोजी राव को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : के. विजयभास्कर को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

तेलुगु फ़िल्म 'नुव्वे कावाली' किशोर अवस्था की मैत्री पर बनी फ़िल्म है जो मोहब्बत में बदलती है। यह फ़िल्म जिस यौवन के स्पर्श से बनी है वह इसे विशिष्टता प्रदान करता है।

BEST FEATURE FILM IN TELUGU

NUVVE KAAVAALI

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Ramoji Rao**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **K. Vijaya Bhaskar**

CITATION

The award for the Best Feature Film in Telugu is given to Nuvve Kaavaali, a refreshing film about a teenage friendship that blossoms into romance. The film stands out for its youthful treatment, thus bringing out the exuberance of this film.

रामोजी राव

ईनाडु-मार्गदर्शी ग्रुप आफ न्यूजपेपर्स के संस्थापक राव ने वित्तीय कंपनी में अपना व्यवसाय प्रारंभ किया था। उन्होंने हैदराबाद में 'रामोजी फिल्म सिटी' स्थापित की है जो भारत के सबसे अत्याधुनिक स्टूडियो में से एक है। श्री राव ने ईनाडु, न्यूजटाइम और सितारा पब्लिकेशन के अलावा 'ईनाडु टेलीविजन' की भी स्थापना की है। ईनाडु टेलीविजन के भारत के अधिकतम हिस्सों में विस्तार के लिए विभिन्न भाषाओं का चैनल प्रारंभ किया गया। उन्होंने पचास से अधिक फीचर फिल्मों का निर्माण किया है जिसमें अधिकतर तेलुगू भाषा में है।



RAMOJI RAO

Founder of the Eenadu-Margadarsi group of newspapers, Ramoji Rao had begun his business in a financial company. He is today credited with having set up the 'Ramoji Film City' in Hyderabad, which is one of the most modern studios in India. Apart from the 'Eenadu', 'Newstime' and 'Sitara' publications, he has set up Eenadu Television, which has channels in different languages and is expanding to cover most of India. He has produced more than fifty feature films, mostly in the Telugu language.

विजय भास्कर

वर्ष 1991 में विजय भास्कर ने अपनी पहली फिल्म 'प्रधान' का निर्देशन किया था। उनकी दूसरी फिल्म 'स्वयंवरम्' ने आंध्र प्रदेश सरकार के चार पुरस्कार प्राप्त किए थे। अपनी फिल्मों के लिए स्क्रिनप्ले उन्होंने खुद किया है। 'नुव्वे कावाली' बतौर निर्देशक उनकी तीसरी फिल्म है।



K. VIJAY BHASKAR

In 1991, Vijaya Bhaskar directed his first film 'Pradhana'. His second film 'Swayamvaram' won four awards from the government of Andhra Pradesh. He has done the screenplay himself for his films and 'Nuvve Kaavaali' is his third film as a director.

सर्वोत्तम अंग्रेजी फिल्म

पाण्डवाज

निर्माता : पेंटामीडिया ग्राफिक्स लि० को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : पेंटामीडिया ग्राफिक्स लि० को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम अंग्रेजी फिल्म का पुरस्कार पाण्डवाज को दिया गया। यह 3-डी एनीमेशन फिल्म महाभारत की कथा को गहराई और विस्तार से प्रस्तुत करती है।

BEST FEATURE FILM IN LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

PANDAVAS

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the producer **Pentamedia Graphics Ltd**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Pentamedia Graphics Ltd**

CITATION

The award for the Best Feature Film in English of 2000 is given to Pandavas. This film of 3-D animation brings the epic of Mahabharata to life on screen with depth and detail.

पेंटामीडिया ग्राफिक्स

वर्ष 1992 में स्थापित यह कंपनी विभिन्न भाषाओं के अनेक महत्वपूर्ण फिल्मों के लिए 'एनीमेशन' और 'स्पेशल इफेक्ट्स' बना रही है। इसने वर्ष 1996 में डिजिटल इमेजिंग सेंटर की शुरूआत की थी और विदेशी फिल्म निर्माताओं के लिए स्पेशल इफेक्ट्स करती रही। इसमें 'कनाल प्लस' फ्रांस और अमरीका की खिलौना कंपनी के लिए कार्यक्रम शामिल है। यह एनिमेशन के लिए 'श्री-डाइमेन्शनल' तकनीक को विशेषज्ञता दे रही है। इसका पहला प्रोजेक्ट 'सिंदबाद' था उसके बाद 'पांडवाच' का प्रोजेक्ट आया। अब 'अली बाबा' का निर्माण जारी है। इसके पास चौबीसों घंटे चलने वाली विश्व की पहली बहुभाषी ऑन लाइन एन्टरटेनमेन्ट पोर्टल है।



PENTAMEDIA GRAPHICS

Starting in 1992, the company has been making animation and special effects for several important films in different languages. It started a Digital Imaging Centre in 1996 and even did special effects for foreign filmmakers. This includes programmes for Canal Plus of France, and a toy company in the United States. It specialises in three-dimensional technology for animation. Its first project was 'Sindbad' followed by 'Pandavas', and now a production of 'Ali Baba' is underway. It also has the world's first 24-hour live online multilingual entertainment portal.

पुरस्कार नहीं दिया गया

जूरी ने निम्नलिखित श्रेणी के पुरस्कारों के लिए किसी भी फिल्म को योग्य नहीं पाया -

- (1) बेस्ट स्पेशल इफैक्ट्स
- (2) असमिया भाषा की सर्वश्रेष्ठ फिल्म
- (3) उड़िया भाषा की सर्वश्रेष्ठ फिल्म
- (4) पंजाबी की सर्वश्रेष्ठ फिल्म

AWARDS NOT GIVEN

Feature Film:

1. BEST SPECIAL EFFECTS
2. BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE
3. BEST FEATURE FILM IN ORIYA
4. BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

गैर-कथाचित्र **Non-Feature**
पुरस्कार **Awards**
2001

सर्वोत्तम गैर फ़ीचर फ़िल्म

रसिकप्रिया

निर्माता : संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली को स्वर्ण कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : अरुण वसंत खोपकर को स्वर्ण कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम गैर फ़ीचर फ़िल्म का पुरस्कार 'रसिकप्रिया' को दिया गया जो हिंदुस्तानी कला संगीत को संवेदनशीलता से स्पर्श करती है और उसके आविर्भाव से अब तक के सांस्कृतिक प्रभावों को दृश्यों और ध्वनि के माध्यम से पेश करती है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

RASIKPRIYA

Swarna Kamal and Cash Prize of Rs 20,000 to the Producer

Joint Secretary, Ministry of External Affairs, (XP Div.), Shastri Bhawan, New Delhi.

Swarna Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the director **Arun Vasant Khopkar**

CITATION

The award for the best Non-feature film of 2000 is given to 'Rasikpriya' for its sensitive treatment of Hindustani art music, tracing its evolution and cultural confluence to the present times, rendered with an exceptional collage of visuals and sounds.

अरुण वसंत खोपकर

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से फिल्म निर्देशन में डिप्लोमा लेने के बाद अरुण ने 25 से अधिक शॉर्ट फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है जिसमें से 'टोबैको हैबिट्स एंड ओरल कैंसर' (1978), 'फिगर्स आफ थौट' (1991), 'संचारी' (1992) और 'कलर्स आफ एबसेंस' को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिला है और इन्हें 'इंडियन पैनोरमा' में दिखाया गया है। उनकी फिल्म 'सोच समझ के' को परिवार कल्याण पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए वर्ष 1996 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। उनकी गुरुदत्त पर लिखी गई किताब को सिनेमा पर आधारित सर्वश्रेष्ठ पुस्तक के लिए वर्ष 1986 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। उन्होंने सौंदर्य पर भारत और विदेशों में व्याख्यान दिए और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में अपना शोध पत्र प्रकाशित करवाया। वह आइज़नस्टीन पर अंतरराष्ट्रीय स्तर का संबद्ध व्यक्ति है जो 1984 से 1986 तक होमी भाभा फेलो रहे। वह फ्रेंच, जर्मन, रशियन और बंगाली भाषा के जानकार हैं। उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन के लिए फीचर फिल्म 'कथा दोन गणपत्रोंची' का निर्देशन किया। इसे 1997 में तिरुवनंतपुरम में आयोजित भारत का अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में भारतीय पैनोरमा के लिए चयनित किया गया। साथ ही इसका चयन मास्को, सराजेवो और बेप्पु (जापान) अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों के लिए भी किया गया।



ARUN KHOPKAR

After obtaining his Diploma in Film Direction from the Film and Television Institute of India, Pune, in 1974, Arun has directed and produced over 25 short films, of which 'Tobacco Habits and Oral Cancer' (1978), 'Figures of Thought' (1991), 'Sanchari' (1992), and 'Colours of Absence' have won National or international awards and have been shown in the Indian Panorama. His film 'Soch Samajh ke' won the National Award for the Best Film on Family Welfare in 1996. His book on Guru Dutt won the National Award for the Best Book on Cinema in 1986. He has lectured extensively on aesthetics in India and abroad and contributed research papers to national and international journals. He is an internationally recognised authority on Eisenstein and was a Homi Bhabha Fellow from 1984 to 1986. A widely travelled polyglot, he knows French, German, Russian and Bengali. He directed the feature film 'Katha Don Ganpatraoanchi' (A tale of two Ganpatraos) for the National Film Development Corporation and Doordarshan. It was selected for the Indian Panorama in the International Film Festival of India held in Thiruvananthapuram in 1997 as well as for Moscow, Sarajevo and Beppu (Japan) International Film Festivals.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर फ़ीचर फिल्म

मीना झा

निर्माता : सत्यजीत रे फिल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टीट्यूट कोलकाता को रजत कमल और 20,000 रुपये

निर्देशक : अंजलिका शर्मा को रजत कमल और 20,000 रुपये

प्रशस्ति

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर फ़ीचर फिल्म का पुरस्कार अंजलिका शर्मा को हिंदी फिल्म 'मीना झा' के लिए दिया गया जो अनूठे अंदाज में जीवन के मानवीय अनुभवों को महसूस करती है।

THE AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

MEENA JHA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer
Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Anjalika Sharma**

CITATION

The Award for the first Non-feature Film of a director is given to Anjalika Sharma's Hindi film 'Meena Jha', for its innovative approach in narrating a story of adolescent human experiences, treated in a stylized manner.

अंजलिका शर्मा

अर्थशास्त्र में स्नातक और सामाजिक संचार मीडिया में स्नातकोत्तर अंजलिका सत्यजीत रे फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान के पहले बैच विद्यार्थी थीं जहां से उन्होंने 1996-99 के दौरान फिल्म निर्देशन और स्क्रीनप्ले लेखन में डिप्लोमा हासिल किया। उन्होंने बाद में दूरदर्शन के कार्यक्रमों और फिल्मों में प्रतिष्ठित निर्देशकों की सहायक के रूप में काम किया। वह भारत में आयोजित जर्मन फिल्म समारोह के लिए जर्मनी के पोस्टटैम फिल्म स्कूल के सहयोग से बतौर निर्देशक जर्मनी में इंडो-जर्मन कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम की शूटिंग के लिए चयनित दो विद्यार्थियों में एक थीं। केरल में आयोजित छठे अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह के फिल्म विद्यालय सेक्शन में मीना झा का चयन किया गया था।



ANJALIKA SHARMA

A graduate in Economics and a Post-Graduate in Socio-Communications media, Anjalika was a student of the first batch of the Satyajit Ray Film and Television Institute where she completed her Diploma in Film Direction and Screenplay writing during 1996-99. She was later assistant director in a number of television productions as well as films under some eminent filmmakers.

She was one of two students selected for the Indo-German Cultural Exchange Programme to shoot a film in Germany as a Director in collaboration with the Film School at Postdam in Germany for the German Festival in India. 'Meena Jha' by her was also selected in the Film School Section of the Sixth International Film Festival in Kerala.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय फिल्म

स्क्रिबल्स ऑन अक्का

निर्माता : फ्लेविया एग्नेस को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : मधुश्री दत्ता को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय फिल्म का पुरस्कार मधुश्री दत्ता की कन्नड फिल्म 'स्क्रिबल्स ऑन अक्का' को दिया गया। यह फिल्म कर्नाटक की 12वीं सदी की कवियत्री महादेवी अक्का के जीवन को तलाशती है। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पुरोध थी। इस विद्रोही कवियत्री के प्रसंगों को समकालीन समय के मुताबिक नाटकीय ढंग से पेश किया गया है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ETHNOGRAPHIC FILM

SCRIBBLES ON AKKA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Flavia Agnes**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Madhusree Dutta**

CITATION

The Award for the best Anthropological/Ethnographic Film of 2000 is given to Madhusree Dutta's Kannada film 'Scribbles on Akka' for exploring the life of a 12th century Karnataka ascetic poet Mahadevi Akka, who was an exponent of individual independence. The relevance of this rebellious poet is treated dramatically, in the context of contemporary times.

फ्लेविया एग्नेस

बंबई उच्च न्यायालय में वकालत का पेशा कर रही फ्लेविया ने महिलाओं के अधिकार, अल्पसंख्यकों के अधिकारों से संबंधित अनेक किताबें लिखी हैं और महिला कानूनों पर व्याख्यान भी किया है। भारत और विदेश के फिल्म निर्माताओं ने सुश्री एग्नेस के जीवन और कार्यों पर अनेक फिल्में बनाई हैं। वह मुंबई स्थित सांस्कृतिक एवं वैधानिक संसाधन केन्द्र 'मजलिस' की संस्थापक सदस्य और सचिव भी हैं।



FLAVIA AGNES

A practising advocate of Bombay High Court, Flavia has written several books on women's rights, rights of minorities, and discourses on feminist jurisprudence. She is a pioneer in demystifying law and making it accessible to ordinary people, especially women in distress. Filmmakers in India and abroad have made several films on the life and works of Ms Agnes. She is the founder member and secretary of Majlis, a cultural and legal resource centre in Mumbai.

मधुश्री दुत्ता

नेशनल स्कूल आफ ड्रामा की देन मधुश्री वर्ष 1993 से गैर-फिक्शन फिल्में बनाती आ रही हैं। लिंग और पहचान उनका पसंदीदा कार्य क्षेत्र है। वह 'मजलिस' की कार्यकारी निदेशक हैं। मजलिस का काम विद्यार्थियों में सांस्कृतिक ज्ञान बढ़ाना और नाटक, फिल्म और अन्य कलाकृतियों का निर्माण करना है। घरेलू हिंसा पर बनी उनकी फिल्म 'मेमोरिज आफ फीयर' को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। विधिक साक्षरता पर आधारित श्रृंखला 'क्या आपको पता है?' का आरएपीए पब्लिक सर्विस एडवर्टाईजिंग अवार्ड मिल चुका है। उन्होंने महिला तस्करी पर आधारित श्रृंखला 'आइलो बैलो-बैलो' का भी निर्माण किया था।



MADHUSREE DUTTA

An alumna of the National School of Drama, Madhusree has been making non-fiction films since 1993. Gender, identity and marginalisation are her chosen areas of work. She is the Executive Director of Majlis, a cultural and legal resource centre in Mumbai, which is engaged in spreading cultural literacy among students and in producing plays, films, and multi-disciplinary art works. Her films include 'Memories of Fear' on domestic violence, which won a National Award, and 'Kya aapko pata hai?', a series of spots on legal literacy, which won the RAPA Public Service Advertising Award, and 'Ailo Bailo Bailo' on women trafficking.

सर्वोत्तम जीवनी आधारित फिल्म

'देवनर्तकन'

निर्माता : केरल राज्य चलचित्र अकादमी को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : सुधीश गोपालकृष्णन को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम पुरस्कार मलयालम फिल्म देवनर्तकन को दिया गया है। यह फिल्म 'देवनर्तकन' नाम से मशहूर थय्यम कलाकर कोडाक्कट कानन पेरुवन्नन के जीवन को बखूबी दर्शाती है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

DEVARNATHAKAN

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Kerala State Chalachitra Academy.**

Rajat Kamal and Cash Prize of Rs 10,000 to the Director **Sudish Gopalakrishnan**

CITATION

The award for the best Biographical film of 2000 is given to the Malayalam film 'Devanarthakan' (The Divine Dancer) for the effective portrayal of Kodakkat Kannan Peruvannan, the renowned Theyyam artist, popularly known as Devanarthakan.

सुदीश गोपालकृष्ण

सुदीश ने फिल्मों में काम 'दालिया पूकल' (मलयालम) 1980 में निर्माता-निर्देशक की हैसियत से शुरू किया। उन्होंने बाद में 15 से भी ज्यादा मलयालम और तमिल फिल्मों में भूमिका निभाई। बाद में विख्यात फिल्मकार शाजी एन. करूण और स्व. जी. अरविन्दन और अन्य फिल्म निर्देशकों के साथ तकरीबन 18 फिल्मों में जुड़े रहे। उन्होंने स्विटजरलैंड के फिल्म निर्देशक मार्क्स इनहूफ के साथ फिल्म 'फ्लेमस इन पैराडाइज़' में 1996 में काम किया। वे विख्यात गैर कथाचित्र फिल्म 'बशीर द मैन' में कला निर्देशक की हैसियत से भी जुड़े।



SUDHISH GOPALAKRISHNAN

A Science graduate, he started his film career as a producer and actor in '**Daaliya Pookkal**' in Malayalam in 1980. Later he acted in more than fifteen films in Malayalam and Tamil. He worked as Assistant Director with the well-known Shaji N. Karun and with the late G. Aravindan, and later as Associate Director with some other filmmakers for more than 18 films. He has worked with the filmmaker Markus Imhoof of Switzerland for the film '**Flames in Paradise**' in 1996. He has also worked as art director with the award-winning documentary '**Bashir the Man**'.

सर्वोत्तम कला-संस्कृति फिल्म

ट्राइबल वुमेन आर्टिस्ट्स

निर्माता : कुलदीप सिन्हा, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : ब्रजभूषण, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम कला संस्कृति फिल्म का पुरस्कार हिंदी फिल्म 'ट्राइबल वुमेन आर्टिस्ट्स' को दिया गया जिसमें हजारीबाग (झारखण्ड) की आदिवासी महिलाओं को सृजनात्मक क्षमताओं को दिखाया गया है।

AWARD FOR THE BEST ARTS/CULTURAL FILM

TRIBAL WOMEN ARTISTS

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Kuldeep Sinha**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Braj Bhushan**, Films Division

CITATION

The award for the best Arts/Cultural film of 2000 is given to the Hindi Film 'Tribal Women Artists' for highlighting the creative abilities of the tribal women of Hazaribagh (Jharkhand) in an effective manner.

कुलदीप सिन्हा

फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ़ इंडिया से स्नातक करने के बाद कुलदीप की नियुक्ति वर्ष 1982 में फ़िल्म प्रभाग में बतौर निर्देशक हुई। उन्होंने अपनी फ़िल्मों के लिए बर्लिन चेकोस्लोवाकिया, सांताराम और बेलग्रेड में आयोजित फ़िल्म समारोहों में अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। उनकी फ़िल्म 'तारानाथ शेनॉय' के लिए उन्हें वर्ष 1986 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। बतौर निर्देशक उन्होंने 75 फ़िल्में बनाई हैं और वर्ष 1988 में 'इन सर्च आफ़ एक्सेलेंस' के लिए बतौर फ़िल्म निर्माता उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



KULDEEP SINHA

After graduating from the Film and Television Institute of India, Kuldeep joined the Films Division as Director in 1982. He has already won various international awards for his films at various festivals in Berlin, Czechoslovakia, Santaram, and Belgrade. He also won the National Award for his film '**Taranath Shenoy**' in 1986. He has made about 75 films as director and he was awarded the National Award as producer in 1988 for '**In search of Excellence**'.

ब्रजभूषण

ब्रजभूषण ने विज्ञान से स्नातक किया और बाद में चेन्नई से फ़िल्म तकनीक का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वह दूरदर्शन और फ़िल्म प्रभाग के पैनल में अनुमोदित निर्माता और निर्देशक हैं। वह सेंट्रल बोर्ड आफ़ फ़िल्म सर्टिफिकेशन के सलाहकार पैनल के सदस्य हैं। उन्होंने अपना फ़िल्मी कैरियर 1977 में सहायक निर्देशक के रूप में शुरू किया। उनकी स्वतंत्र रूप से पहली फ़िल्म 1979 में प्रदर्शित हुई। उन्होंने पचास से अधिक फ़िल्मों, वृत्तचित्रों और टेलीविजन सीरियलों में काम किया है। इससे पहले उन्हें तीन राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं। उनकी कुछ फ़िल्मों में 'इंसाफ़ की मंजिल', 'रजिया' और 'अजनबी साया' शामिल हैं। सीरियल 'नन्हा जासूस', बच्चों की फ़िल्म 'बहादुर टॉम' और गैर-फ़ीचर 'दो गुलाब' ब्रजभूषण की कलाकृतियों में शामिल हैं।



BRAJ BHUSHAN

A science graduate who later trained in film technology in Chennai, he is an approved producer and director on the panels of Doordarshan and the Films Division and is a member of the Advisory Panel of the Central Board of Film Certification. He began his professional career in 1977 as an assistant director and became independent in 1979. He has been involved with the making of more than fifty feature and non-feature films and serials for television, and this includes several feature films. He has also won three National Awards before this. Some of his films include the features '**Insaf ki Manzil**', '**Razia**' and '**Ajnabi Saya**', the serial '**Nanha Jasoo**', the children's film '**Bahadur Tom**', and non-feature '**Do Ghulab**'.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म

वैदिक मैथमेटिक्स

निर्माता : भानुमूर्ति अलुर, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये नकद

निर्देशक : के. जगजीवन राम, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम विज्ञान फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म 'वैदिक मैथमेटिक्स' को दिया गया जिसमें वेदों के गणितीय समीकरणों के वैज्ञानिक तरीकों को आज के समय से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM

(Including method and process of science, contribution of Scientists etc.)

VEDIC METHAMATICS

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Bhanumurthy Alur**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **K. Jagjivan Ram**, Films Division

CITATION

The award for the best Scientific film of 2000 is given to the English film 'Vedic Mathematics' for presenting a scientific method of Mathematical calculations, existing in the Vedas and relating the relevance of this knowledge to the present times.

भानूमूर्ति अलुर

फ़िल्म प्रभाग में उप प्रमुख निर्माता के पद पर विराजमान अलुर ने फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, पुणे से सिनेमाटोग्राफी तकनीक में डिप्लोमा हासिल किया। वह गोल्ड मेडलिस्ट हैं। इंस्टीट्यूट में व्याख्याता बनने से पहले उन्होंने अनेक शॉर्ट और फ़ीचर फ़िल्मों में 'सिनेमाटोग्राफ़र' के रूप में काम किया। वह पांच वर्ष तक व्याख्याता रहे। वह सिनेमाटोग्राफी के विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने पहले भी फ़िल्मों के निर्माण और निर्देशन के लिए कई पुरस्कार प्राप्त किए हैं। वर्ष 1996 में फिर से फ़िल्म प्रभाग में आने के बाद से वह दिल्ली में पदस्थापित हैं।



BHANUMURTHY ALUR

Deputy Chief Producer at the Films Division, Alur is a Diploma holder in cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune, and was a Gold Medallist. He worked as cinematographer in various short and feature films before joining his alma mater for five years as a lecturer. He was head of the Department of Cinematography. He has earlier won several awards for direction and production of films. Coming back to the Films Division in 1996, he is now posted in Delhi.

के. जगजीवन राम

बंगलौर के सर जयकामराजेंद्र पोलिटिकल कालेज से सिनेमाटोग्राफी तकनीक में डिप्लोमा हासिल करने के बाद श्री जगजीवन राम ने मेसर्स प्रीमियर स्टूडियो, मैसूर में प्रशिक्षु कैमरामैन के रूप में काम किया। वह वृत्तचित्र कैमरामैन के रूप में वर्ष 1975 में फ़िल्म प्रभाग से जुड़ गए। उन्होंने न्यूजरील अधिकारी, उपनिदेशक और निदेशक के रूप में भी फ़िल्म प्रभाग को योगदान दिया है। इन तमाम सालों में उन्होंने 160 से अधिक वृत्तचित्र और शॉर्ट फ़िल्मों में छायांकन किया है और 65 से अधिक में निर्देशन किया है। उन्हें 'अंगोरा फ़ॉर वूल', 'टुना वी चिकेन आफ वी सी' और 'इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन काटन' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है। 'वाटर हार्वेस्टिंग' और 'अंगोरा फ़ार वूल' के लिए उन्हें क्रमशः स्लोवैक और बर्लिन के फ़िल्म पुरस्कार से नवाजा गया है।



K. JAGJIVAN RAM

After completing his Diploma in Cinematography Technology from Sir Jayachamarajendra Polytechnic in Bangalore, Jagjivan Ram worked as apprentice cameraman with Messrs Premier Studios, Mysore. In 1975, he joined the Films Division as documentary cameraman. He also worked as newsreel officer, Deputy Director and Director. Over the years, he has photographed more than 160 documentary and short films and directed more than 65. He won National Awards for 'Angora for Wool', 'Tuna - the Chicken of the Sea', and 'Integrated Pest Management in Cotton'. 'Water Harvesting' and 'Angora for Wool' have won the Slovak and Berlin Festival awards respectively.

सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म

द नेस्ट

निर्माता : स्पर्श प्रोडक्शन प्रा० लि० कोलकाता को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : सुप्रियो सेन को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का पुरस्कार बंगाली फिल्म 'द नेस्ट' को दिया गया जिसमें मिदनापुर के जतिन मेहतो द्वारा आव्रज और लुप्तप्रायः पक्षियों को बचाने के लिए किए गए प्रयत्नों का अनूठा चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST ENVIRONMENT/CONSERVATION / PRESERVATION FILM (INCLUDING AWARENESS)

THE NEST

Rajat Kamal and Cash Prize of Rs 10,000 to the Producer **Sparsh Productions (P) Ltd.**, Kolkata

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Supriyo Sen**

CITATION

The award for the best Environment/Conservation/Preservation film of 2000 is given to the Bengali film 'the Nest' for painstaking effort on capturing the uncompromising dedication of Jatin Mahato (Midnapore-West Bengal), a heroic conservator and protector of migratory and endangered birds.

सुप्रियो सेन

सेन ने अपना कैरियर एक पत्रकार के रूप में शुरू किया। उन्होंने कोलकाता के विभिन्न अखबारों के लिए लिखना शुरू किया। सुप्रियो का ध्यान सामाजिक कार्यों में भी था। उन्होंने युवा वर्ग के लोगों का एक समूह बनाया और कोलकाता के निकट पत्थर तोड़ने वाली फैक्टरी के कारण होने वाली मृत्यु के मामले की जांच की। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने 'वेट अन्टिल डैथ' नामक फिल्म का निर्देशन किया। उनकी दूसरी फिल्म का नाम था - 'दी ड्रीम आफ हनीफ'। इन सभी फिल्मों ने पुरस्कार जीते हैं या समारोहों में हिस्सा लिया है। वह एम्सटर्डम के अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र फिल्म समारोह के लिए बंगाल के बटवारे पर फिल्म बनाने के प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। इसके लिए उन्हें फेलोशिप प्रदान किया गया है।



SUPRIYO SEN

Starting his career as a journalist for various dailies in Kolkata after completing his Masters, Supriyo was simultaneously drawn to social causes. He formed a group of young people and investigated the case of genocide caused by a stone-crushing factory near Kolkata. The result was a film, 'Wait until Death' which he directed, and then used, to follow the case till the Supreme Court. His second film was 'The Dream of Hanif'. All his films have won awards or taken part in festivals. He is currently working for a project on a film on the division of Bengal for the International Documentary Film Festival of Amsterdam which has granted him a fellowship for this purpose.

सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म

पश्मीना रॉयल

निर्माता : बप्पा रे को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : बप्पा रे को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम संवर्धनात्मक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म पश्मीना रॉयल को दिया गया है। यह फिल्म प्राचीन कश्मीरी कला की शैलियों को सौंदर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है और पश्मिना शॉल के इतिहास को सृजनात्मक ढंग से तलाशती है।

AWARD FOR THE BEST PROMOTIONAL FILM

(to cover tourism exports, crafts, industry etc.)

PASHMINA ROYALE

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Bappa Ray**

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Bappa Ray**

CITATION

The award for the best Promotional film of 2000 is given to Bappa Ray's English film 'Pashmina Royale' for creatively tracing the history of the Pashmina shawl and aesthetically portraying the designs and styles of this ancient Kashmiri art, which has now been revived.

बप्पा रे

जनजातियों और उसके कल्याण के संबंध में रुचि रखने वाले बप्पा रे जनजाति समुदायों के लिए दो दशकों से काम कर रहे हैं। 'वांगला-ए गारो फेस्टिवल' और 'लद्दाख-लाइफ एलॉग दी इंडस' दोनों ने क्रमशः 1993 और 1994 में सर्वश्रेष्ठ एथ्नोग्राफिक फिल्म पुरस्कार के लिए चुनी गयीं। महिला सशक्तिकरण पर उनकी पहली फ्रीचर फिल्म 'एक थी गूजा' आईएफएफआई 1995 में भारतीय पैनोरमा के लिए चुनी गयी। वह वर्तमान में संथाल समुदाय की म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट 'बनाम' और अरुणाचल प्रदेश के बान्कोस की डॉरमेटरी सिस्टम पर भी कार्य कर रहे हैं।



BAPPA RAY

With a keen interest in tribes and tribal development, Bappa Ray has been working amongst tribal communities for the past two decades. **'Wangala - A Garo Festival'** in 1993 and **'Ladakh - Life along the Indus'** in 1994 won awards as Best Anthropological/Ethnographic films. These films were also selected for the International Film Festival of India in 1994 and 1995 respectively. His first feature on women's empowerment, **'Ek thi Goonja'**, was selected for the Indian Panorama at the IFFI 1995. He is presently working on the Banam, a musical instrument of the Santhal community, and on the dormitory system of Wanchos of Arunachal Pradesh.

सर्वोत्तम कृषि फिल्म

समाचार पत्रिका अंक 424 - वर्मी कल्चर

निर्माता : कुलदीप सिन्हा, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये

निर्देशक : ए.आर. शरीफ, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम कृषि फिल्म का पुरस्कार हिन्दी फिल्म 'वर्मी कल्चर' को दिया गया जिसमें प्राकृतिक कार्बनिक कचरे से खाद बनाने की नई तकनीक के तौर-तरीके बताए गए हैं।

AWARD FOR THE BEST AGRICULTURAL FILM

(To include subject related to and allied to agricultural like animal husbandry, dairying etc.)

NEWS MAGAZINE NO. 424 - VERMI CULTURE

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Kuldeep Sinha**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **A.R. Sharief**, Films Division

CITATION

The award for the best Agricultural film of 2000 is given to the Hindi film 'Vermi Culture' for methodically unfolding new techniques of composting manure from natural organic wastes that are biodegradable and eco-friendly.

कुलदीप सिन्हा

फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया से स्नातक करने के बाद कुलदीप ने वर्ष 1982 में बतौर निर्देशक फ़िल्म प्रभाग में योगदान देना शुरू किया। वह बर्लिन, चेकोस्लोवाकिया, संताराम और बेलग्रेड में आयोजित फ़िल्म समारोहों में अपनी फ़िल्मों के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उन्हें अपनी फ़िल्म 'तारानाथ शेनाथ' के लिए वर्ष 1986 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। बतौर निर्देशक उन्होंने 75 फ़िल्में बनाई हैं और उन्हें 'इन सर्च आफ एक्सेलेन्स' के लिए वर्ष 1988 में बतौर निर्माता राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला है।



KULDEEP SINHA

After graduating from the Film and Television Institute of India, Kuldeep joined the Films Division as Director in 1982. He has already won various international awards for his films at various festivals in Berlin, Czechoslovakia, Santaram, and Belgrade. He also won the National Award for his film '**Taranath Shenoy**' in 1986. He has made about 75 films as director and he was awarded the National Award as producer in 1988 for '**In search of Excellence**'.

ए.आर. शरीफ

वर्ष 1968 में मोशन पिक्चर तकनीक में प्रशिक्षण लेने के बाद अब्दुल रज्जाक शरीफ बेंगलूर के स्टूडियो में सहायक कैमरामैन के रूप में नियुक्त हो गए और बाद में फ़िल्म प्रभाग से सहायक कैमरामैन के रूप में जुड़ गये। अभी वह जयपुर में पदस्थापित हैं और न्यूज़रील बनाने में संलग्न हैं। उनकी यादगार क्षणों में से एक है कि जब वे सत्तर के मध्य में वार्षिक उर्स की रिपोर्ट के लिए अजमेर गए थे तो वहां भीषण बाढ़ में फंस गये थे। उन्हें बाढ़ पर फ़िल्म बनाने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ न्यूज़रील कैमरामैन का पुरस्कार दिया गया था।



A. R. SHARIEF

After qualifying in motion picture technique in 1968, Abdul Razack Sharief joined a studio in Bangalore as Assistant Cameraman and later joined the Films Division as Assistant Cameraman. He is now posted in Jaipur and has been involved with production of newsreels. One of his most memorable experiences is when he had gone to Ajmer to report the annual Urs in the mid-70s and was caught in heavy floods. He took advantage of the situation to make a film on the floods for which he won an award for Best Newsreel Cameraman.

सर्वोत्तम ऐतिहासिक पुनर्संरचना / संकलन फिल्म

फ्रॉम द लैंड ऑफ बुद्धिज्म टू द लैंड ऑफ बुद्धा

निर्माता : कुलदीप सिन्हा, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये नकद

निर्देशक : शालिनी शाह, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये नकद

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोच्च ऐतिहासिक पुनर्संरचना/संकलन फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म 'फ्रॉम द लैंड ऑफ बुद्धिज्म टू द लैंड ऑफ बुद्धा' को भारत में बसे तिब्बतियों की कला, परंपराएं एवं सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के यथार्थ चित्रण के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST HISTORICAL RECONSTRUCTION/ COMPILATION FILM

FROM THE LAND OF BUDDHISM TO THE LAND OF BUDDHA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Kuldeep Sinha**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Shalini Shah**, Films Division

CITATION

The award for the best Historical Reconstruction/compilation film of 2000 is given to the English film 'From the land of Buddhism to the land of Buddha' for its realistic and pictorial depiction of the culture, traditions and socio-economic conditions of the Tibetans settled in India.

कुलदीप सिन्हा

फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया से स्नातक करने के बाद कुलदीप वर्ष 1982 में बतौर निर्देशक फ़िल्म डिविजन में नियुक्त हो गए। वह बर्लिन, चेकोस्लोवाकिया, संताराम और बेलग्रेड में आयोजित फ़िल्म समारोहों में अपनी फ़िल्मों के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उन्हें अपनी फ़िल्म 'तारानाथ शेनाय' के लिए वर्ष 1986 में राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है। बतौर निर्देशक उन्होंने 75 फ़िल्में बनाई हैं और उन्हें 'इन सर्च आफ एक्सेलेन्स' के लिए वर्ष 1988 में बतौर निर्माता राष्ट्रीय पुरस्कार मिला है।



KULDEEP SINHA

After graduating from the Film and Television Institute of India, Kuldeep joined the Films Division as Director in 1982. He has already won various international awards for his films at various festivals in Berlin, Czechoslovakia, Santaram, and Belgrade. He also won the National Award for his film '**Taranath Shenoy**' in 1986. He has made about 75 films as director and he was awarded the National Award as producer in 1988 for '**In search of Excellence**'.

शालिनी शाह

विज्ञान में स्नातकोत्तर और 'बिरला इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस' से मल्टी मीडिया कोर्स करने के बाद शालिनी शाह ने 'नसीम' फ़िल्म में सईद अख्तर मिर्जा के सहायक के रूप में काम किया। वह सुदीप्त बोस की फ़िल्म 'मुक्ति' और फ़िल्म प्रभाग के लिए बनाई गई फ़िल्म 'प्यास' में सहायक निर्देशक रहीं। उन्होंने टिप्स के लिए अरुण शर्मा द्वारा बनाई गई म्यूजिक वीडियो में भी सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। वह गोल्डेन फॉरेस्ट के राजेश भाटिया से भी जुड़ी रही हैं। शालिनी ने 'इतिहास' धारावाहिक के लिए विनोद रंगनाथन के साथ मिलकर 33 एपिसोड लिखे हैं। उन्होंने धारावाहिक 'कभी कभी' के भी कुछ एपिसोड लिखे हैं। वह दूरदर्शन के लिए बनाई जा रही 'डी-ज़ोन' धारावाहिक लिख रही हैं। यह धारावाहिक विनोद पांडे का है।



SHALINI SHAH

After post-graduating in science and completing a multi-media course from the Birla Institute of Technology and Science, she assisted Saeed Akhtar Mirza on his film '**Naseem**' which won a National Award for Direction in 1996. She was the associate director in the film '**Mukti**' by Sudipt Bose, and again in '**Pyas**' by him for Films Division. She also worked as an associate director for a music video by Arun Sharma for TIPS, and was associated with Rajesh Bhatia for a commercial for Golden Forest. Shalini has written 33 episodes of screenplay with Vinod Ranganathan for the serial '**Itihaas**', wrote a few episodes of the serial '**Kabhi Kabhi**', and is presently writing for Vinod Pande for the serial '**D-Zone**' being made for Doordarshan.

सामाजिक मुद्दों से जुड़ी सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार

इन्फिल्ट्रेटर्स

निर्माता : उर्मि चक्रवर्ती, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : उर्मि चक्रवर्ती, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सामाजिक मुद्दों पर बनी सर्वोत्तम फ़िल्म का पुरस्कार अंग्रेज़ी फ़िल्म 'इन्फिल्ट्रेटर्स' को बांग्लादेशी घुसपैठियों के भारत में गैर-कानूनी प्रवेश के मुद्दे को गहराई से दर्शाने तथा इस विषय को मानवीय आधार पर तुरंत संबोधित करने की आवश्यकता रेखांकित करने के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES

(Such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, Welfare of the handicapped etc.)

INFILTRATORS

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Urmi Chakraborty**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Urmi Chakraborty**, Films Division

CITATION

The award for the best film on Social issues of 2000 goes to the English film 'Infiltrators' for its in-depth probe that unveils the illegal migration of Bangladeshis into India and the urgent need to address this issue on humanitarian grounds.

उर्मि चक्रवर्ती

विधि स्नातक उर्मि भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना हैं, जिसमें भरतनाट्यम प्रमुख है। उन्होंने भारत और विदेशों में अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। उन्होंने वर्ष 1989 में अभिनय प्रारंभ किया। उन्होंने फिल्मों और टेलिविजन के लिए काम किया है। निर्देशन के क्षेत्र में उनकी रुचि वर्ष 1994 में प्रारंभ हुई और तब से उन्होंने दूरदर्शन, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के लिए अनेक फिक्शन और गैर-फिक्शन फिल्मों में निर्देशन किया है।



URMI CHAKRABORTY

A law graduate, Urmī is an Indian Classical Dancer excelling in Bharatnatyam who has given recitals in India as well as abroad. She began acting in 1989 and has worked in both films and television. Her interest in direction began in 1994 and since then she has directed various fictional and non-fictional films for Doordarshan, public and private sectors.

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/सूचनात्मक फिल्म का पुरस्कार

तुलसी

निर्माता : भानुमूर्ति अलुर, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : राजगोपाल राव, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/सूचनात्मक फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म तुलसी को एक बूढ़ी आदिवासी महिला द्वारा गैर-वानिकीकरण के विरुद्ध अकेले ही मोर्चा खोलने के संघर्ष को दिखलाने के लिए दिया गया। इस महिला के प्रयासों के फलस्वरूप आम जनता ने भी वनों के संरक्षण के लिए सहयोग दिया।

AWARD FOR THE BEST EDUCATIONAL/MOTIVATIONAL/ INSTRUCTIONAL FILM

TULASI

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Bhanumurthy Alur**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Rajgopal Rao**, Films Division

CITATION

The award for the best Educational/Motivational/Instructional film of 2000 is given to the English film 'Tulasi' for the powerful portrayal of an aged tribal woman Tulasi's single-handed crusade against de-forestation and the resultant participation of people in preserving forests.

भानुमूर्ति अलुर

फ़िल्म प्रभाग के उप प्रमुख निर्माता के पद पर विराजमान अलुर ने फ़िल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, पुणे से सिनेमाटोग्राफी तकनीक में डिप्लोमा हासिल किया। वह गोल्ड मेडलिस्ट हैं। अलमा मटेर में व्याख्याता बनने से पहले उन्होंने अनेक शॉर्ट और फ़ीचर फ़िल्मों में 'सिनेमाटोग्राफर' के रूप में काम किया वह सिनेमाटोग्राफी के विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने पहले भी फ़िल्मों के निर्माण और निर्देशन के लिए कई पुरस्कार प्राप्त किए हैं। वर्ष 1996 में फिर से फ़िल्म प्रभाग में आने के बाद से वह दिल्ली में पदस्थापित हैं।



BHANUMURTHY ALUR

Deputy Chief Producer at the Films Division, Alur is a Diploma holder in cinematography from the Film and Television Institute of India, Pune, and was a Gold Medallist. He worked as cinematographer in various short and feature films before joining his alma mater for five years as a lecturer. He was head of the Department of Cinematography. He has earlier won several awards for direction and production of films. Coming back to the Films Division in 1996, he is now posted in Delhi.

राजगोपाल राव

सिविल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा और चम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद, राजगोपाल ने बैंगलोर में फ़िल्मी तकनीक में कुशलता हासिल की। उन्होंने अपना फ़िल्मी जीवन कैमरामैन की हैसियत से शुरू किया और बाद में वे फ़िल्म प्रभाग से जुड़ गये। उन्होंने कई ग़ैर-कथाचित्र, कथाचित्र और लघु फ़िल्मों का निर्देशन किया और अनेकों राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। उनको पहला पुरस्कार 1980 में 'ट्रेजिडी ऑफ गेंडी' के लिए मिला। अन्य पुरस्कृत फ़िल्मों में 'डक्स आउट ऑफ वाटर', 'टेक्नीक ऑफ सीड प्रोडक्शन वीट एण्ड पैडी' तथा 'एरीड हार्टिकल्चर' हैं।



RAJGOPAL RAO

After a Diploma in Civil Engineering and graduation from Bombay University, Rajgopal completed a Diploma Course in Cinematography Technology in Bangalore. He first worked as a cameraman in the film industry in south India before joining the Films Division. He has directed a number of documentaries, feature films and short films for more than a decade and has won some national and international awards. In 1980 came his first National Award for 'Tragedy of Gendi' and has also won this award for 'Ducks out of Water', 'Technique of Seed Production Wheat and Paddy', 'Ber', and 'Arid Horticulture'.

सर्वोत्तम खोज प्रधान फिल्म

वियरिंग द फेस

निर्माता : **बंकिम**, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : **जोशी जोसेफ**, फिल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

सर्वश्रेष्ठ प्रधान फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म 'वियरिंग द फेस' के कॉलेज छात्रों के गुप्त जीवन को भरपूर संवेदनशीलता के साथ प्रदर्शित करने के लिए दिया गया। ये छात्र सामाजिक आर्थिक कारणों के चलते अपने जीवन-यापन के लिए रिक्शा चलाने को मजबूर होते हैं।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

WEARING THE FACE

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer **Bankim**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Joshy Joseph**, Films Division

CITATION

The award for the best Investigative film of 2000 is given to the English film 'Wearing the Face' for insightfully and sensitively probing the masked lives of the college students of Manipur, who are compelled by socio-political circumstances to pull rickshaws for their livelihood.

बंकिम

वर्तमान में फिल्म डिविजन के प्रमुख निर्माता के रूप में पदस्थापित बंकिम पहले सिनेमा निर्देशन का कोर्स करने के लिए फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, पुणे से जुड़े फिर आर्गेनाइजेशन बिहैवियर एंड लीडरशिप में प्रशिक्षण लेने से पहले पत्रकारिता का डिप्लोमा कोर्स किया। वर्ष 1984 में उन्हें 'इन्टरनल टाईज' नामक फिल्म बनाने के लिए मारीशस भेजा गया था। यह फिल्म इस द्वीप के लिए भारतीय उत्प्रवासन पर आधारित थी। उन्होंने एन एच के जापान में टेलीविजन का प्रशिक्षण भी लिया। फिल्म प्रभाग में आने से पहले उन्हें दूरदर्शन के नागपुर केंद्र का प्रभार दिया गया। फिल्म प्रभाग में वह मार्च 1997 से वर्तमान पद पर पदस्थापित है। उन्होंने बतौर निर्देशक अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं जिसमें 'इन्टरनल टाईज', 'लिविड गोल्ड' और 'सिक्किम कल्चर एंड प्रोग्रेस' शामिल हैं।



BANKIM

Presently Chief Producer at Films Division, Bankim first joined the Film and Television Institute of India, Pune, for a course in cinema direction, then going on to a Diploma course in journalism before training in Organisation Behaviour and Leadership. In 1984, he had been deputed to Mauritius to make 'Eternal Ties', a film on Indian immigration to the Island. He has also received some training in television in NHK Japan. He held charge of Doordarshan's Nagpur centre before moving to the Films Division where he has held his present post since March 1997. He is a linguist and also writes widely on various subjects. He has won several awards as director, and these include 'Eternal Ties', 'Liquid Gold', and 'Sikkim Culture and Progress'.

जोशी जोसेफ

जोशी ने पुरस्कार प्राप्त फिल्म 'कथापुरुषम' में प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक अदूर गोपालाकृष्ण के सहायक के रूप में काम किया। उन्होंने स्वतंत्र रूप से अनेक वृत्तचित्रों के लिए स्क्रिप्ट लिखा है और उनका निर्देशन भी किया है। 'द्वील्स आफ चेंज' और 'डिफाईंग डार्कनेस' को अनेक अंतरराष्ट्रीय समारोहों में 'प्रतिस्पर्धा श्रेणी' में शामिल किया गया था। 'सारंग-सिम्फोनी इन काकोफोनी' ने वर्ष 1998 में और 'सेन्टेन्स आफ साइलेंस' को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।



JOSHY JOSEPH

Joshy assisted famed filmmaker Aduor Gopalakrishnan in the making of the award-winning 'Kathapurushan.' He has also scripted and directed several documentaries on his own. Films like 'Wheels of Change' and 'Defying Darkness' have participated in the competition section of several international festivals. 'Sarang: symphony In Cacophony' won the National Award in 1998, and 'Sentence of Silence' won an award the following year.

सर्वोत्तम एनीमेशन फ़िल्म का पुरस्कार

द लैंडस्केप

निर्माता : बंकिम, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : रवि जाधव, फ़िल्म प्रभाग को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फ़िल्म का पुरस्कार 'द लैंडस्केप' को प्रकृति के खूबसूरत लैंडस्केप्स के आधुनिक शहरी खौफ में तब्दील होने की कहानी को प्रदर्शित करने के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

THE LANDSCAPE

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to the Producer **Bankim**, Films Division

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Ravi Jadhav**, Films Division

CITATION

The award for the best Animation film of 2000 is given to the film 'the Landscape' for its artistic visual narration of nature's beautiful landscapes turning into modern urban horrors.

बंकिम

वर्तमान में फिल्मस डिविजन के प्रमुख निर्माता के रूप में पदस्थापित बंकिम पहले सिनेमा निर्देशन का कोर्स करने के लिए फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया, पुणे से जुड़े फिर आगेनाइजेशन विहैवियर एंड लीडरशिप में प्रशिक्षण लेने से पहले उन्होंने पत्रकारिता में डिप्लोमा कोर्स किया। वर्ष 1984 में उन्हें मारीशस भेजा गया था। यह फिल्म इस द्वीप के लिए भारत में आने वाले लोगों पर आधारित थी। उन्होंने एनएच के जापान में टेलीविजन का प्रशिक्षण भी लिया। फिल्म प्रभाग में आने से पहले उन्हें दूरदर्शन के नागपुर केन्द्र का प्रभाग सौंपा गया था। फिल्म प्रभाग में वह मार्च 1997 से वर्तमान पद पर पदस्थापित हैं। वह भाषाविद हैं और अनेक विषयों पर काफी कुछ लिखा है।



BANKIM

Presently Chief Producer at Films Division, Bankim first joined the Film and Television Institute of India, Pune, for a course in cinema direction, then going on to a Diploma course in journalism before training in Organisation Behaviour and Leadership. In 1984, he had been deputed to Mauritius to make 'Eternal Ties', a film on Indian immigration to the Island. He has also received some training in television in NHK Japan. He held charge of Doordarshan's Nagpur centre before moving to the Films Division where he has held his present post since March 1997. He is a linguist and also writes widely on various subjects.

रवि जाधव

वर्ष 1966 में जन्में रवि जाधव ने सर जे.जे. इंस्टीट्यूट से बी.एफ.ए. की डिग्री हासिल की है। उन्होंने स्वतंत्र रूप से और वाणिज्यिक सहायक के रूप में अनेक सुपरिचित एजेंसियों में काम किया और अच्छा अनुभव प्राप्त किया है। रवि जाधव वर्ष 1990 में फिल्मस डिविजन में पदस्थापित हो गए और 'लास्ट ड्रॉप' और 'फ्रेंडशिप' जैसी पुरस्कार प्राप्त एनिमेशन फिल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया था। उन्होंने हाल में दो एनिमेशन फिल्मों 'लाइफलाइन' और 'लैंडस्केप' में निर्देशन किया है।



RAVI JADHAV

Born in 1966, this director has the degree in B.F.A from Sir J.J Institute. He has worked with many recognized agencies as a freelancer and as a commercial assistant and therefore gained good experience. Ravi Jadhav joined the Films Division in 1990 and has assisted in award winning animations like 'Last Drop', 'Friendship'. He has recently directed and animated two films 'Lifeline' and 'Landscape'.

विशेष जूरी पुरस्कार

ए मेमोरी ऑफ द सी

निर्माता : रोबिन मजूमदार को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : लीगिया मैथ्यूज को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का विशेष जूरी पुरस्कार लीगिया मैथ्यूज को अंग्रेजी फिल्म 'ए मेमोरी ऑफ द सी' के लिए दिया गया जिसमें उन्होंने समुद्र के आस-पास को उन विभिन्न संस्कृतियों तथा धर्मों को कौशलपूर्ण तरीके से दर्शाया है जिन्होंने मालाबार के तटीय जीवन पर ऐतिहासिक प्रभाव डाला है।

SPECIAL JURY AWARD

A MEMORY OF THE SEA

Rajat Kamal and Cash Prize of Rs 10,000 to Producer **Roabin Mazumdar**

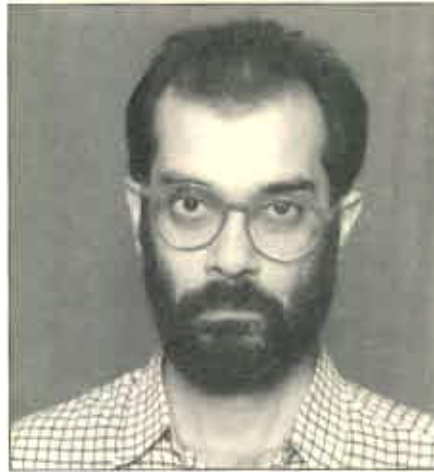
Rajat Kamal and Cash Prize of Rs 10,000 to Director **Lygia Mathews**

CITATION

The Special Jury award of 2000 is given to Lygia Mathews for the English film 'a Memory of the Sea' for her skilful narration of the various cultures and religions from across the sea, that have historically influenced the coastal life of Malabar.

रोबिन मजूमदार

रोबिन लिगिया के साथ मिलकर प्रमोशनल फिल्मों और प्रायोजित कार्यक्रमों के प्रोड्यूसर और स्क्रिप्टराइटर के रूप में कार्य करते हैं। वह फिल्म निर्माण में बारह वर्षों से अधिक समय से शामिल हैं। 'लाइट ऑन दी वाटर' उनका पहला वृत्तचित्र है जिसे वर्ष 1999 में इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल आफ इंडिया में प्रदर्शित किया गया था। बाद में यह वृत्तचित्र अनेक अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी प्रदर्शित किया गया जिसमें तेहरान और नॉर्डिक एंथ्रोपोलोजिकल फिल्म समारोह शामिल हैं।



ROABIN MAZUMDAR

Roabin works as producer and scriptwriter with Lygia to produce promotional films and sponsored programmes. Involved with filmmaking for more than twelve years, 'Light on the Water' was his first ethnological documentary, and was screened at the International Film Festival of India in 1999. Later, it went to several international festivals including Teheran, and the Nordic Anthropological Film Festival. He continues his interest in history and anthropology in his films.

लिगिया मैथ्यूज़

साहित्य और सामाजिक संचार मीडिया में स्नातकोत्तर लिगिया ने अपना कैरियर बम्बई दूरदर्शन के लिए साप्ताहिक समाचार और करंट अफेयर्स कार्यक्रम से शुरू किया था। बाद में वह दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क के लिए विज्ञापन फिल्मों और प्रायोजित कार्यक्रम बनाने लगीं। छह वर्षों तक विज्ञापन कंसलटेंट के साथ काम करने के बाद उन्होंने रोबिन मजूमदार के साथ 'मंत्र मैजिक फिल्मस' की स्थापना की और दोनों ने मिलकर अनेक टेलीविजन कार्यक्रम और फिल्मी कार्यक्रम तैयार किए। 'लाइट ऑन दी वाटर' उन लोगों की पहली एंथनोलोजिकल वृत्तचित्र थी जिसे कुछ विदेशी और भारत के फिल्म समारोहों में शामिल किया जा चुका है।



LYGIA MATHEWS

A Post-graduate in literature and social communications media, Lygia started her career with weekly news and current affairs programmes for Bombay Doordarshan, moving on to advertisement films and sponsored programmes for the National Network. After working with an advertising consultant for six years, she set up 'Mantra Magic Films' with Roabin Mazumdar and the two have produced a large number of television and film programmes. 'Light on the Water' was their first ethnological documentary, and was screened in India and some foreign film festivals.

सर्वोत्तम लघु काल्पनिक फ़िल्म का पुरस्कार

भोर

निर्माता : सत्यजीत रे फ़िल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : रितुबरना चुदगर को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ लघु काल्पनिक फ़िल्म का पुरस्कार बंगाली फ़िल्म 'भोर' को दो युवा लोगों के जीवन की कहानी बहुआयामी चित्रण के लिए दिया गया। ये युवा अपने अतीत के मकड़जाल में उलझे होने के बावजूद जीवित रहने के लिए संघर्षरत हैं।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

BHOR

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Producer
Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Director **Ritubarna Chudgar.**

CITATION

The award for the best Short Fiction film of 2000 is given to the Bengali film 'Bhor' for its multi-layered treatment of a story that sketches the lives of two young people (siblings) caught in the web of their past and yet coping for survival.

रितुबरना चुदगर

कलकत्ता के सत्यजीत रे फिल्म और टेलीविजन इंस्टीट्यूट में निर्देशन में डिप्लोमा हासिल करने के बाद रितुबरना ने अनेकों नाटकों का निर्देशन किया है। इसके अलावा उनकी रुचि लिखने में और नाटकों में भाग लेने में काफी है। भोर उनकी डिप्लोमा फिल्म है और इससे पहले छठे केरला के अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के लिए भी चयन किया जा चुका है।



RITUBARNA CHUDGAR

A graduate in arts, Ritubarna is a Diploma holder in direction from the Satyajit Ray Film and Television Institute in Kolkata. She has experience of directing plays for various amateur groups and institutions. She also has varied experience in creative writing, performing arts and drama. 'Bhor', which is her Diploma film, had also been entered in the School Film Section of the Sixth International Film Festival in Kerala.

परिवार नियोजन पर सर्वोत्तम फिल्म

'अकारेनिन्नु' और 'महानन्दा' (संयुक्त पुरस्कार)

निर्माता : टी. सुनील कुमार को अकारेनिन्नु के लिए रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्माता : फिल्म प्रभाग को महानन्दा के लिए रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : टी. सुनील कुमार को अकारेनिन्नु के लिए रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक : मानिक दास को महानन्दा के लिए रजत कमल और 5,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का परिवार नियोजन पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार अकारेनिन्नु और बंगला फिल्म महानन्दा को संयुक्त रूप से दिया गया है। अकारेनिन्नु (मलयालम) एक ऐसे परिवार पर केन्द्रित है जिसका एक सदस्य एड्स से पीड़ित है। फिल्म में दिखाया गया है कि ये परिवार सामाजिक कुरितियों का कैसा सामना करता है।

महानन्दा (बंगाली) में बड़े ही संवेदनशरल ढंग से अल्प संख्यक से एक गांव की महिला द्वारा अपने परिवार को नियोजित करने के संघर्ष की कहानी दर्शाई गई है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

'AKARENINNU' AND 'MAHANANDA' (JOINT)

Rajat Kamal and Cash Prize of Rs 5,000 each to the Producer

T.Sunil Kumar for Akkareninnu.

and

Films Division for Mahananda

Rajat Kamal and cash prize of Rs 5,000 each to the Director

T.Sunil Kumar for Akkareninnu.

and

Manik Das for Mahananda

Citation

'Akareninnu' (Malayalam) focuses attention on the plight of a family with an AIDS patient and their struggle in overcoming the social stigma, while the film 'Mahananda' (Bengali) handles a sensitive theme on family welfare, which depicts the fight of a village woman from a minority community who succeeds in her pursuit of a planned family.

टी. सुनील कुमार



T.SUNIL.KUMAR

मानिक दास

मानिस दास एक पेशेवर अभिनेता है जिसने रंगमंच पर टेलीविजन धारावाहिकों में और फीचर फिल्मों (खासकर बंगाली फिल्मों) में काम किया है। वह विगत दस-बारह वर्षों से बंगाली फिल्मों के प्रसिद्ध निर्देशकों के साथ काम करते रहे हैं। बतौर निर्देशक महानंदा उनको पहली कृति है।



MANIKDAS

Manik Das who is in his late thirties is a professional actor who has worked on stage, television serials and feature films mainly in Bengali under some of the most renowned directors in Bengali for the past ten to twelve years. 'Mahananda' is his first venture as a director.

सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार

रसिकप्रिय

निर्देशक : अरूण वसंत खोपकर को स्वर्ण कमल और 20,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार अरूण वसंत खोपकर की हिन्दी फिल्म 'रसिकप्रिय' को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में दृश्यात्मक अलंकारों को कलापूर्ण और कलात्मक शैली में पिरोने के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

RASIKPRIYA

Swarna Kamal and cash prize of Rs 20,000 to the Director **Arun Vasant Khopkar**

CITATION

The award for the best direction of 2000 is given to the Arun Vasant Khopkar's film 'Rasikpriya' for artistically weaving visual metaphors to the rhythms of Hindustani classical music in a stylized and poetic manner.

अरुण खोपकर

वर्ष 1974 में पुणे के फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट से डिप्लोमा हासिल करने के बाद अरुण ने 25 फिल्मों का निर्माण और निर्देशन किया है जिसमें से अनेक ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं तथा उन्हें भारतीय पैनोरमा में दिखाया गया है। उनके द्वारा गुरुदत्त पर लिखी गई पुस्तक को वर्ष 1986 में सिनेमा पर लिखी गई 'सर्वश्रेष्ठ पुस्तक' का पुरस्कार मिला था। उन्होंने भारत और विदेशों में सौन्दर्य विषयक व्याख्यान दिए गए और राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में इस विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये। वह आइज़नस्टीन के मामले में अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त अधिकारी हैं। वह 1984 से 1986 तक 'होमी भाभा फेलो' रहे। उन्हें फ्रेंच भाषा, जर्मन, रशियन और बंगाली भाषा पर कड़ी है। उन्होंने राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन के लिए 'कथा दोन गणपद्रोची' नामक फिल्म का निर्माण किया। इसका चयन 1997 में तिरुवनंतरपुरम् में आयोजित इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल आफ इंडिया में भारतीय पैनोरमा के लिए किया गया। साथ ही इसे मास्को, सराजेवो और बेप्पु (जापान) अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भी शामिल किया जा चुका है।



ARUN KHOPKAR

After obtaining his Diploma in Film Direction from the Film and Television Institute of India, Pune, in 1974, Arun has directed and produced over 25 short films, of which many have won National or international awards and have been shown in the Indian Panorama. His book on Guru Dutt won the National Award for the Best Book on Cinema in 1986. He has lectured extensively on aesthetics in India and abroad and contributed research papers to national and international journals. He is an internationally recognised authority on Eisenstein and was a Homi Bhabha Fellow from 1984 to 1986. A widely travelled polyglot, he knows French, German, Russian and Bengali. He directed the feature film '**Katha Don Ganpatraoanchi**' (A tale of two Ganpatraos) for the National Film Development Corporation and Doordarshan. It was selected for the Indian Panorama in the International Film Festival of India held in Thiruvananthapuram in 1997 as well as for Moscow, Sarajevo and Beppu (Japan) International Film Festivals.

सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार

रसिकप्रिया

छायाकार : प्रसन्न जैन को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

एड लैब, मुंबई को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ छायांकन का पुरस्कार प्रसन्न जैन को हिन्दी फिल्म 'रसिकप्रिय' में सुन्दर ढंग से प्रकाश और छाया के माध्यम से उभरते चित्रों को अनूठे रूप में जीवंत करने की चेष्टा के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

RASIKPRIYA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Cemeraman **Prasann Jain**

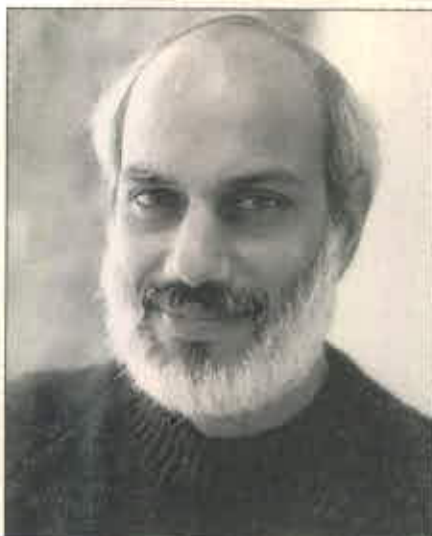
Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Laboratory Processing the film : Ad Labs, Mumbai.

CITATION

The award for the best Cinematography of 2000 is given to the Prasann Jain for the film 'Rasikpriya' for capturing images that speak in tones of light and shade, thereby giving life to the lyrical form of the film.

प्रसन्न जैन

प्रसन्न ने दिल्ली के आर्ट कालेज और त्रिवेणी कला संगम में चित्रकला का अध्ययन किया। उन्होंने पिक्टोरियल फोटोग्राफी की भी शिक्षा ली। बाद में उन्होंने सिनेमाटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त किया। वह ए.के. बीर के सहायक भी रहे। उन्होंने स्वतंत्र रूप से तीन असमिया फ़िल्में बनाई हैं। वह एक दशक से अधिक से स्वतंत्र कैमरामैन के रूप में काम कर रहे हैं। उन्होंने श्याम बेनेगल की पुरस्कार प्राप्त फ़िल्म 'मम्मो' के लिए कैमरामैन का काम किया और डिस्कवरी चैनल के लिए दो प्रतिष्ठित शॉट भी लिए हैं। शॉर्ट और फ़ीचर फ़िल्मों के अलावा उन्होंने विडियो के लिए कैमरामैन का भी काम किया है।



PRASANN JAIN

Prasann Jain studied painting at the College of Art in Delhi and at the Triveni Kala Sangam. He also learnt pictorial photography. He then joined the Film and Television Institute of India, Pune, and after graduating with a Diploma in Cinematography, assisted A. K. Bir. He has independently shot three Assamese films. He has been working as a freelance cameraman for over a decade. He was the cameraman for Shyam Benegal's award-winning film 'Mammo' and also shot two prestigious shots for Discovery Channel. He has also worked on video as a cameraman, apart from working on short and feature films.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन

ए मेमोरी ऑफ द सी

ऑडियोग्राफर : हरि कुमार को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन का पुरस्कार हरि कुमार को अंग्रेजी फिल्म 'ए मेमोरी ऑफ द सी' में फिल्म की कथा और संदेश में ध्वनि द्वारा काल्पनिक एवं रचनात्मक अभिवृद्धि के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

A MEMORY OF THE SEA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the re-recordist of the final mixed track : **Hari Kumar**

CITATION

The award for best audiography of 2000 is given to Hari Kumar for the film 'A Memory of the Sea' for designing sound that imaginatively and creatively enhances the mood and narration of the film.

हरि कुमार

उन्होंने वर्ष 1990 में पुणे स्थित फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया से डिप्लोमा कोर्स किया। उनका स्पेशलाइजेशन साउण्ड रिकार्डिंग और इंजीनियरिंग था। चालीस वर्षीय हरि कुमार ने 25 से अधिक वृत्तचित्रों और धारावाहिकों में स्वतंत्र साउण्ड रिकार्डिस्ट का काम किया।



HARI KUMAR

A Diploma holder from the Film and Television Institute of India, Pune, in the 1990 batch with specialisation in sound recording and engineering, forty-year old Hari Kumar M. has worked as a free lance sound recordist in more than 25 documentaries and serials.

सर्वश्रेष्ठ संपादन के लिए पुरस्कार

लोकप्रिय

संपादक : संकल्प मिश्रम को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ संपादन का पुरस्कार संकल्प मिश्रम को हिन्दी फिल्म 'लोकप्रिय' में अनूठे ढंग से अलग तरह के चित्रों को एकत्रित करके फिल्म की कथा सहज रूप में दर्शाने के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST EDITING

LOKPRIYA

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to the Editor **Sankalp Meshram**

CITATION

The award for the best editing of 2000 is given to Sankalp Meshram for the film 'Lokpriya' for skilfully juxtaposing three streams of visuals into one rhythmic meaningful narrative.

संकल्प मिश्रम

संकल्प ने शिक्षा तो वकालत में हासिल की लेकिन जल्दी ही वे फिल्मों से जुड़ गये। उन्होंने फिल्म सम्पादन में शिक्षा भी हासिल की। उन्होंने अनेकों फिल्मों में निर्माता निर्देशन के रूप में काम किया। वे कई टेलीविजन कार्यक्रम जैसे 'कैली डी स्कोप', 'गुड फूड गाईड' और 'दिल देके देखो' के लिए भी काम कर चुके हैं। उनके लघु चित्रों में 'हाई करंट', 'ए पाथ लैस ट्रेवल्ड' और 'अख्तर' भी शामिल है। उन्होंने अरुण खोपकर की लगभग सभी फिल्मों के लिए सम्पादन किया। इसके अलावा उन्होंने टेलीविजन कार्यक्रम 'तारा' और 'सदमा' के लिए भी सम्पादन किया। वे कई फिल्मों की पटकथा लिख चुके हैं और अनेकों गीत भी लिखे हैं। वे कई संगीत वाद्य बजा सकते हैं, जिनमें बांसुरी, तबला और स्पैनिश गिटार भी शामिल हैं।



SANKALP MESHAM

A Lawyer by training, Sankalp also holds a Diploma in Film Editing. He has produced and directed a large number of television serials and documentaries. These include thirty episodes of 'Kaleidoscope', 31 episodes of, 'Good Food Guide', 'Dil Deke Dekho', documentaries 'High Current', 'A Path Less Travelled', and 'Attar'. As editor, he has been involved in almost all films of Arun Khopkar, serials 'Tara' and 'Sadma' and some corporate films. He has also written some scripts and some lyrics. He plays several musical instruments including the table, flute and spanish guitar.

सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन पुरस्कार

अजीब घर

संगीत निर्देशिका : उषा खन्ना को रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन का पुरस्कार उषा खन्ना को हिन्दी फिल्म 'अजीब घर' में संगीत की सहायता से फिल्म की कथा को बड़े मनमोहक और आकर्षक ढंग से आगे बढ़ाने के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

AJEEB GHAR

Rajat Kamal and cash prize of Rs 10,000 to Music Director **Usha Khanna**

CITATION

The award for the best music direction of 2000 in a non-feature film is given to Usha Khanna for the film 'Ajeeb Ghar' for rendering a melodious and vibrant tune, that keeps the story moving and engrossing.

उषा खन्ना

उषा खन्ना एक ऐसी महिला संगीत निर्देशिका हैं जो तीन दशक से लगातार इस क्षेत्र से जुड़ी हैं, यद्यपि इस क्षेत्र में पुरुषों का आधिपत्य रहा है। उनका जन्म ग्वालियर के ऐसे परिवार में हुआ जहाँ संगीत का माहौल था। उनके पिता गीतकार और गायक दोनों थे। उषा उस वक्त अपने किशोरावस्था में थी जब इंदीवर ने उन्हें फिल्म निर्माता एस. मुखर्जी से मिलवाया था और श्री मुखर्जी ने 'दिल देके देखो' में उन्हें पहला ब्रेक दिया। 'हम हिन्दुस्तानी' की 'छोड़ो कल की बातें' ने उन्हें धीरे-धीरे इस क्षेत्र में स्थापित कर दिया। उन्होंने विभिन्न भाषाओं की 150 से अधिक फिल्मों में संगीत दिया है जिसमें 'सौतन', 'अगर तुम न होते', 'हनीमून', 'साजन बिन सुहागन' और 'बिन फेरे हम तेरे' शामिल हैं। उन्होंने टेलीविजन सीरियलों में भी संगीत दिया है और अनेक पुरस्कार जीते हैं।



USHA KHANNA

Usha Khanna is the only female music director to have survived for three decades in an almost exclusively male dominated profession and industry. Born in Gwalior to a family that was musically inclined as her father was a lyricist and singer, Usha Khanna displayed a flair for composing music. Usha was barely in her teens when poet Indeevar who knew her father took her to filmmaker S. Mukherjee who gave her a break with 'Dil Dekhe Dekho'. Hits like 'Chodho kal ki baaten' from 'Hum Hindustani' slowly established Usha. She has given music for over 150 films in different languages, among them 'Souten', 'Agar Tum Na Hote', 'Honeymoon', 'Saajan Bin Suhagan', and 'Bin Pher hum tere'. She has also given music for television serials and won a large number of awards.

विशेष उल्लेख

छायाकार : अमल निरोद सी.आर. को हिन्दी फ़िल्म 'मीना झा'

और

निर्देशिका : हेमन्ती बेनर्जी को मराठी फ़िल्म 'बालगंधर्व'

प्रशस्ति

ज्युरी 'मीना झा' के छायाकार अमल निरोद सी.आर. का विशेष आलेख करती है क्योंकि उसने फ़िल्म का चित्रांकन करते समय बड़े ही सहज ढंग से चित्रों को पर्दे पर उतारा और एक अनूठा ही रंग प्रदर्शित किया।

ज्युरी 'बालगंधर्व' की निर्देशिका हेमन्ती बेनर्जी का विशेष आलेख विख्यात मराठी नाट्य कलाकार और गायक बालगंधर्व, जो महिलाओं की भूमिका करने के लिए प्रसिद्ध थे, के जीवन को बड़े ही संवेदनशील और सहज ढंग से दर्शाने के लिए किया है।

SPECIAL MENTION

AMAL NEEROD C.R., Cameraman for the film 'Meena Jha'

And

HAIMANTI BANERJEE, Director of the film 'Balgandharv'

CITATION

The jury makes a special mention of Amal Neerod C.R., cameraman of the film 'Meena Jha' for his pictorial vision and capturing of images imaginatively showing great promise.

The jury also makes a special mention of Haimanti Banerjee, Director of the film 'Balgandharv', for effectively capturing the spirit of the legendary Marathi theatre personality Balgandharv, the singer, well known for his portrayal of women characters.

अमल नीरोद सी. आर.

अमोल 'सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट' के पहले बैच के विद्यार्थी थे जिन्होंने सत्र 1996-99 के दौरान सिनेमाटोग्राफी में डिप्लोमा किया। वह कला संकल्प से स्नातक हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय स्तरीय फोटो प्रतियोगिता जीती और वह पुणे स्थित फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट आफ इंडिया के फिल्म एप्रिसिएशन कोर्स में शामिल हुए। वह 'इंडो जर्मन कल्चरल एक्सचेंज प्रोग्राम' के लिए चुने गए उन दो विद्यार्थियों में से एक थे जिन्होंने गैरी सिनेमाटोग्राफर जर्मनी के पोस्टडम स्थित फिल्म स्कूल के सहयोग से भारत में आयोजित होने वाले जर्मन समारोह के लिए जर्मनी में फिल्म की शूटिंग करनी थी।



AMAL NEEROD C.R.

A graduate in Arts, Amal was a student of the first batch of the Satyajit Ray Film and Television Institute where he completed his Diploma in Cinematography (Motion Picture Photography) during 1996-99. He won the University-level photo competition and attended a Film Appreciation course in the Film and Television Institute of India in Pune. He was one of two students selected for the Indo-German Cultural Exchange Programme to shoot a film in Germany as a cinematographer in collaboration with the Film School at Postdam in Germany for the German Festival in India.

श्रीमती हaimanti बनर्जी

अंग्रेजी विषय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त कर श्रीमती हैमंती ने वर्ष 1998 में शैक्षणिक वीडियो फिल्म बनाकर निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा था। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के सौजन्य से बनी फिल्म 'गंगुताई' के लिए उनकी काफी प्रशंसा की गई। उन्होंने 'येल्लमा, दी मदर आफ आल' का भी निर्माण किया। श्रीमती हैमंती द्वारा वर्ष 1992 में बनाई गई फिल्म 'टूवार्ड्स जॉय एंड फ्रीडम' को सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फिल्म का पुरस्कार मिला। यह फिल्म शांतिनिकेतन स्थित रविन्द्र नाथ टैगोर के विद्यालय पर आधारित है। उन्होंने सिनेमा के विभिन्न आयामों पर अनगिनत व्याख्यान दिये हैं और भारत के ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित राष्ट्रीय फिल्म के लिए रित्विक गटक मोनोग्राफ को प्रकाशित कराया है।



HAIMANTI BANERJEE

A postgraduate in English, Haimanti began filmmaking with educational video films in 1988. She was applauded for the film 'Gangutai' produced by the Human Resource Ministry of the Government of India, and also made 'Yellama, the mother of all', 'Towards Joy and Freedom' in 1992, a film on Rabindranath Tagore's school in Santiniketan, won a National Award for best educational film. She has given innumerable lectures on various aspects of cinema, and has published a monograph of Ritwik Ghatak for the National Film

पुरस्कार जो नहीं दिये गये
गैर-कथाचित्र

1. सर्वोत्तम गवेषणात्मक/रोमांचक फिल्म
(खेल इत्यादि)

**Awards Not Given
Non-Feature Films**

1. AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ADVENTURE FILM
(INCLUDING SPORTS)

सिनेमा **Awards for**
लेखन **Writing on**
पुरस्कार **Cinema**

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार 2000

शोले (अंग्रेजी)

लेखक : अनुपमा चोपड़ा को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये नकद पुरस्कार

प्रकाशक : मैसर्स पैंगुइन बुक्स, पंचशील पार्क, नई दिल्ली को स्वर्ण कमल और 15,000 रुपये नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2000 का सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन का पुरस्कार अनुपमा चोपड़ा को उनकी पुस्तक शोले (अंग्रेजी) में बड़े ही सरल ढंग से लेखन के लिए दिया गया। पुस्तक इस विख्यात फिल्म (जोकि 25 साल पहले बनी थी) के बनने के समय घटित संस्मरणों के बारे में है जिसका लेखन बड़ी ही सहजता से किया गया है।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 2000

SHOLAY (ENGLISH)

Swarna Kamal and cash prize of Rs 15,000 to the producer **Anupama Chopra**

Swarna Kamal and cash prize of Rs 15,000 to the publisher **M/s. Penguin Books, Panchsheel Park, New Delhi**

CITATION

The award for the Best Book on Cinema, 2000 goes to Sholay for its lucid story-telling. A fast-paced, informative book, a fitting tribute to a box-office phenomenon. Even after 25 years, the making of Sholay, reported crisply and researched thoroughly, makes absorbing reading.

अनुपमा चोपड़ा

'इंडिया टुडे' पत्रिका की विशेष सवादाता अनुपमा विगत सात वर्षों से फ़िल्म उद्योग पर लिखती रही हैं। वह 'इंडिया टुडे ग्रुप ऑन लाइन' के लिए '24 फ्रेम्स पर सेकेण्ड' नामक साप्ताहिक कालम भी लिखती हैं। 'इंडिया टुडे' में नियुक्ति से पूर्व सुश्री अनुपमा ने न्यूयार्क की हार्पर्स बाजार पत्रिका के मनोरंजन संपादक की सहायक पद को सुशोभित किया है। उन्होंने शिकागो के नॉर्थ वेस्टर्न विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। उन्हें मैगजीन पत्रकारिता के लिए हैरिंगट पुरस्कार मिल चुका है। अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की डिग्री के साथ बम्बई विश्वविद्यालय से गोल्ड मेडलिस्ट हैं।



ANUPAMA CHOPRA

A Special Correspondent with 'India Today' magazine, she has for the last seven years covered the film industry extensively. She also writes a weekly column called '24 Frames per Second' for the India Today Group Online. Before joining 'India Today', Anupama worked as an assistant to the entertainment editor at Harper's Bazaar Magazine in New York. A post graduate in Journalism in North Western University, Chicago, she also won the Harrington Award for magazine journalism. She is a gold medallist from Bombay University with a Bachelor's degree in English Literature.

विशेष उल्लेख

लेखन ज्यूरी निरंजन पाल की पुस्तक *सच इज लाइफ* (अंग्रेजी) में सीधे-सादे ढंग और व्यक्तिगत घटनाओं से प्रेरित भारतीय सिनेमा की शुरुआत की पुरानी यादों को ताजा करने के लिए दिया गया।

लेखन ज्यूरी डॉ. उमा गर्ग को उनकी हिन्दी पुस्तक *संगीत का सौंदर्य बोध* में एक ऐसी खोज के लिए- भारतीय फिल्म संगीत- करती है जिससे लेखक आमतौर पर दूर रहते हैं।

SPECIAL MENTION

The Book Jury makes a Special Mention for 2000 of Niranjan Pal for his book *Such Is Life* (English) for its straightforward narration and personalized nostalgia, taking the reader right into the beginnings of Indian cinema.

The Book Jury makes a Special Mention for 2000 of Dr Uma Garg for her book *Sangeet Ka Soundarya Bodh - Film Sangeet ka Sandharva Mein* (Hindi) for going into and exploring a territory which authors rarely venture into - Indian film music.

निरंजन पाल

निरंजन पाल को इंग्लैंड भेज दिया गया जब वह पिछली शताब्दी के पूर्वाद्ध में बंगाल के उग्रवादी आंदोलन में शामिल हुए। वर्ष 1913 में उनकी रुचि भारतीय फिल्म उद्योग के प्रति जागृत हुई। उनकी कहानी 'फैथ आफ ए चाईल्ड' पर आधारित एक मूक फिल्म बनाई गई। बाद में गौतम बुद्ध पर आधारित 'लाइट आफ एशिया' पर फिल्म बनी और नाटक 'गौडेस' से हिमांशु राय फिल्मों में आए। तब उन्होंने 'ट्रबल्स नेवर कम अलोन' का निर्माण किया। उनकी पहली बाल फिल्म 'हटे खोरी' बंगला भाषा में बनाई गई थी। उनकी फिल्मों में 'शुकतारा', 'रस पूर्णिमा' और 'ब्रह्म कन्या' शामिल हैं। उन्होंने 'अछूत कन्या' की पटकथा लिखी। 72 वर्ष की आयु में वर्ष 1959 में उनका देहावसान हो गया।



NIRANJAN PAL

Niranjana Pal had been despatched to England by his father Bipin Chandra Pal when the latter came to know the son was getting involved with the terrorist movement in Bengal in the early part of last century. He became interested in the Indian film industry in 1913 and his story 'Faith of a Child' was made into a silent film. Later 'Light of Asia' on Gautam Buddha was made into a film, and his stage play 'Goddess' introduced Himansu Rai. He then made 'Troubles Never Come Alone'. He was a pioneer of children's films, the first being 'Hatey Khori' in Bengali. His films include 'Shuktara', 'Rash Poornima', and 'Brahmin Kanya' and he wrote the screenplay for 'Achhut Kanya'. He died in November 1959 at the age of 72.

उमा गर्ग

संगीत प्रिय बंगाली परिवार में जन्मी उमा गर्ग ने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने माता-पिता से ली। बाद में उन्होंने पी.पी. जोहरी, उस्ताद हफीज अहमद खान और पंडित मणि प्रसाद जैसे गुरुओं से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। शास्त्रीय संगीत, गखल और भक्ति संगीत पर उनकी समान पकड़ है। वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय की संगीत और फाइन आर्ट्स संकाय में रीडर के पद पर स्थापित सुश्री उमा को 'स्पेशल मेंशन' उनको पी. एच.डी. शोध पत्र 'एस्थेटिक सेन्स आफ इंडियन फिल्म म्यूजिक' (भारतीय फिल्म संगीत का सौंदर्य बोध) के लिए दिया गया है।



UMA GARG

Born into a Bengali family of music lovers, Uma initially received music guidance from her parents. She later learnt under renowned Gurus like P. P. Johri and Ustad Hafeez Ahmed Khan and Pandit Mani Prasad. She is equally at ease in all kinds of singing - be it classical music, ghazals, or devotional music. She has received several awards and has sung for several television serials. Currently a Reader in the Faculty of Music and Fine Arts in Delhi University, the special mention has come for her Ph. D. Dissertation on the 'Aesthetic Sense of Indian film music'.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक 2000

वसिराजू प्रकाशम और सुरेश शर्मा (संयुक्त)

फ़िल्म समीक्षक **वसिराजू प्रकाशम** (तेलुगु) और **सुरेश शर्मा** (हिन्दी) को स्वर्ण कमल और रुपये 7,500 का प्रत्येक को नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

फ़िल्म समीक्षक **वसिराजू प्रकाशम** को अपने लेखन में भारतीय सिनेमा के उनके ज्ञान के लिए दिया गया।

फ़िल्म समीक्षक **सुरेश शर्मा** को अपने पाठक को ध्यान में रखकर रुचिकर और अध्ययन से भरे लेखन के लिए दिया गया।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2000

Vasiraju Prakasam (Telugu) and **Suresh Sharma** (Hindi)

Swarna Kamal and Cash prize of Rs 7,500 each to Film Critics

Vasiraju Prakasam and **Suresh Sharma**

CITATION

The award for the Best Film Critic of 2000 goes to **Vasiraju Prakasam** for deep knowledge of cinema, which is reflected in his prolific writing

And

The award for the Best Film Critic of 2000 goes to **Suresh Sharma** for his interesting and analytical writing on cinema, constantly keeping in mind the Indian viewer.

वसिराजू प्रकाशम

वसिराजू निर्माता, निर्देशक, दूरदर्शन के प्रोड्यूसर, पत्रकार और फ़िल्मी समालोचक हैं। उन्होंने फ़िल्म निर्माता के रूप में तेलुगु फ़िल्म 'कलाम मरिंडी', बाल फ़िल्म 'बालाराजू कथा' और महात्मा गांधी के सपनों पर आधारित फ़िल्म 'बापूजी भारतम' का निर्माण किया। 'कलाम मरिंडी' को राज्य स्तरीय पुरस्कार मिल चुका है। वह दूरदर्शन के लिए नियमित रूप से फ़ीचर फ़िल्में बनाते रहे हैं। वह इंटरनेशनल फ़िल्म फेस्टिवल आफ इंडिया, इंटरनेशनल चिल्ड्रेन्स फ़िल्म फेस्टिवल और फ़िल्म स्टार्स चैरिटी क्रिकेट मैच से जुड़े रहे हैं। श्री प्रकाशम ने अनेक पुरस्कार जीते हैं। श्री प्रकाशम आंध्र प्रदेश फ़िल्म चैम्बर पत्रिका के संपादक हैं।



VASIRAJU PRAKASAM

A versatile personality, Vasiraju Prakasam is a producer, director, a television producer, journalist and film critic. As a filmmaker, he produced the Telugu film 'Kalam Marindi' which won the state award, the children's film 'Balaraju Katha', and 'Bapuji Bharatam' on the dreams of Mahatma Gandhi. He has produced some popular television serials for Doordarshan. Mr Prakasam has also been involved with the organisation of the International Film Festival of India, the International Children's Film Festival and the Film Stars Charity Cricket Match. Mr Prakasam has also won a large number of awards. He is a feature writer for the Telugu daily 'Vaarta' and is editor of the Andhra Pradesh Film Chamber magazine.

सुरेश शर्मा

बिहार से हिन्दी में स्नातकोत्तर श्री सुरेश ने प्रारंभ में लोक नायक जय प्रकाश नारायण के आंदोलन में हिस्सा लिया और जेल गये। बाद में वह दिल्ली आ गए जहां उन्होंने हिन्दी एम.फिल. पूरा किया और बाद में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिन्दी में पी.एच.डी. की। श्री शर्मा ने सात वर्षों तक जनसत्ता हिन्दी दैनिक में काम किया। तब वह नवभारत टाइम्स से जुड़ गये जहां उन्हें सहायक संपादक के पद तक प्रोन्नति मिली। वह नवभारत टाइम्स के फ़िल्म समालोचक और कॉलमिस्ट हैं। वह वर्तमान में रेणु की 'तीसरी कसम' पर एक किताब लिख रहे हैं। श्री शर्मा को फ़िल्म समालोचना और पत्रकारिता के लिए अनेक पुरस्कार मिले हैं।



SURESH SHARMA

A post-graduate in Hindi from Bihar, Suresh was initially involved with Lok Nayak Jaiprakash Narayan's movement and even went to jail. He later migrated to Delhi where he completed his M. Phil. in Hindi and later his Ph.D. from the Jawaharlal Nehru University. Suresh Sharma worked in the Jansatta Hindi daily for about seven years. He then joined the Navbharat Times, where he rose to become the Assistant Editor, apart from being its film critic and columnist. Having edited several anthologies, he is currently writing a book on Renu's 'Teesri Kasam'. He has also received several awards for film criticism and journalism.

विशेष आलेख

रत्नोत्तमा सेनगुप्ता (अंग्रेजी)

लेखन ज्यूरी ने फिल्म समीक्षक रत्नोत्तमा सेनगुप्ता (अंग्रेजी) का विशेष आलेख उनकी विशेष जानकारी और अपने लेखन में रुचिकर प्रस्तुति के लिए किया है।

SPECIAL MENTION

The Jury makes a special mention of **Ratnottama Sengupta** for consistency and variety in her knowledgeable reporting on cinema.

रत्नोत्तमा सेनगुप्ता

सुप्रसिद्ध लेखक और फिल्म निर्माता नबेंदु घोष की पुत्री रत्नोत्तमा का फिल्म से जुड़ना स्वाभाविक था। पत्रकारिता से 22 वर्षों से जुड़ी श्रीमती सेनगुप्ता वर्ष 1991 से टाइम्स आफ इंडिया की कला संपादक हैं। उनका भाई शुभांकर भी फिल्म निर्माता है। वह सिनेमा पर 1978 से लिखती आ रही हैं। उन्होंने टाइम्स आफ इंडिया के अलावा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में योगदान दिया है जिसमें स्क्रीन, टेलीग्राफ, आनंदलोक, फिल्मफेयर और इकोनॉमिक टाइम्स का नाम शामिल है। उन्होंने भारतीय त्यौहारों पर भी लिखा है। श्रीमती सेनगुप्ता कहानीकार भी हैं और वर्तमान में वह कल्चर पर एक इनसाइक्लोपीडिया के लिए किताब लिख रही हैं।



RATNOTTAMA SENGUPTA

Daughter of the well-known writer and filmmaker Nabendu Ghosh who scripted some of the classics of Indian cinema, it was perhaps natural for Ratnottama to take to films. A working journalist for 22 years, she has been the Arts Editor of 'The Times of India' since 1991. Her brother Subhankar is also a filmmaker. She has been writing on cinema since 1978, and has contributed to various journals including 'Screen', 'The Telegraph', 'Anandlok', 'Filmfare' and the 'Economic Times' besides 'The Times of India'. She has also reported on Festivals of India held overseas. She is a short story writer in her own right and is currently writing a book on Culture for an encyclopaedia.

कथासार : **Synopses :**

कथाचित्र **Feature Films**



अस्तित्व

(मराठी - 115 मिनट)

निर्माता-ज्ञामु सुगन्ध; **निर्देशक-महेश मांजरेकर;** **गीत-श्रीरंग गोडबोले तथा सुखविन्दर सिंह;** **संगीत-राहुल रानाडे तथा सुखविन्दर सिंह;** **पात्र-तब्बू, सचिन खेडेकर, नम्रता शिरोडकर, मोहनीश बहल, रवीन्द्र मनकानी, स्मिता जयकर, सुनील बर्वे, किशोर नांदलस्कर, संदीप मेहता**

अदिति और श्रीकांत के पुत्र अनिकेत का रेवती के साथ विवाह होने का रहा है। जब अदिति के पूर्व संगीत अध्यापक मल्हार कामत की मृत्यु हो

जाती है और वो अपनी सारी सम्पत्ति अदिति के नाम कर जाते हैं। जब श्रीकांत के मन में शंका उठती है, तो अदिति बताती है कि अनिकेत का पिता मल्हार है और स्वीकार करती है कि वह अपनी शारीरिक जरूरतों के सामने कमचोर पड़ गई थी। पुरुषवादी मानसिकता के शिकार पिता और पुत्र दोनों ही अदिति का बहिष्कार कर देते हैं।

कुछ समय के लिए अपने आपको अमहाय समझने वाली अदिति बाद में अपना आत्मविश्वास पा लेती है। उधर अनिकेत के बर्ताव के बारे में जानकर रेवती अनिकेत से अपने सम्बन्ध समाप्त कर लेती है। अदिति रेवती के साथ अपना घर छोड़ने से पहले अपने पति

और पुत्र से कुछ सवाल करती है। अगर यह श्रीकांत के साथ हुआ होता तो क्या घर छोड़ना पड़ता? श्रीकांत को अवैध सम्बन्ध रखने की इजाजत क्यों है जबकि उसे उसके जीवन के एक कमजोर क्षण का सजा मिली? क्या उसने कभी रुककर सोचा कि जिस औरत के साथ वह सोया उसका क्या हुआ? श्रीकांत नपुंसक है लेकिन अगर उसने अनिकेत को जन्म नहीं दिया होता तो क्या वह बांझ करार नहीं दी जाती? क्या अनिकेत की चिन्दगी, उसका व्यक्तित्व उसकी वजह से नहीं है, भले ही पिता कोई भी हो?

ASTITVA

Marathi/115 min

Producer : Jhamu Sughand; **Director :** Mahesh Manjrekar; **Lyrics :** Shirang Godbole & Sukhwinder Singh; **Music :** Rachel Ranade & Sukhwinder Singh; **Cast :** Tabu, Sachin Khedekar, Namrata Shirodkar, Mohnish Bahl, Ravindra Mankani, Smita Jaykar, Sunil Barve, Kishor Nandlaskar, Sandip Mehta

Aditi and Shrikant's son Aniket is engaged to be married to Revathy. When Malhar Kamat, a former music teacher, dies leaving his entire property in her name, Shrikant wonders why. He learns from his wife that Malhar is Aniket's father, as Aditi had succumbed to the needs of her body in a weak moment. Being male chauvinists, both father and son disown Aditi.

Though completely helpless, Aditi gradually regains her composure. Revathy breaks off the engagement when she learns how narrow-minded Aniket is. Aditi leaves the home along with Revathy to start life anew, but asks some questions before she leaves. If this had happened to Shrikant, would he have left home? Why is Shrikant allowed to have affairs when she is punished for a weak moment? Did he ever stop to think what happened to the women he slept with? Shrikant is impotent, but would she not have been called barren if she had not given birth to Aniket? Does Aniket not owe his very being, his personality, to her - irrespective of the identity of the father?



भारती

(तमिल - 150 मिनट)

निर्देशक-ज्ञान राजशेखरन; **संगीत**-इल्लयाराजा; **कैमरा**-तंकर बचन; **पात्र**- सायाजी शिन्दे, देवयानी

यह फिल्म महान राष्ट्र कवि सुब्रह्मण्यम भारती के जीवन पर आधारित है। एट्टायपुरम में 11 दिसम्बर, 1882 को जन्मे सुब्बैया ने सात साल की छोटी-सी उम्र से ही कविताएं लिखना शुरू कर दिया था। तमिल साहित्य में उनके सगहनीय योगदान के लिए 1893 में ही उन्हें 'भारती' की उपाधि से विभूषित किया गया। 1894-1897 के बीच तिरुन्वेली के 'हिन्दू कॉलेज' से उन्होंने स्नातक किया और उसी साल सात वर्षीय

चेल्लम्मा से उनका विवाह हो गया।

पिता की मृत्यु के बाद वह राजा का प्रशासन में सहायता देने के लिए एट्टायपुरम लौट आए। वर्ष 1904 में उन्होंने कुछ महीने मदुरै के सेतुपथी हाई स्कूल में पढ़ाया। वह एक दैनिक 'स्वदेशमिजन' के सहायक सम्पादक और मद्रास से निकलने वाले मासिक 'चक्रवर्तनी' के मुख्य सम्पादक भी रहे। उन्होंने साप्ताहिक पत्रिकाओं 'इण्डिया' और 'बालभारत' में भी मुख्य सम्पादक के तौर पर काम किया। राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाते हुए वह सूरत में 1907 में कांग्रेस सदस्य भी रहे। ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तारी का वारंट निकलने के बाद वह पांडिचेरी चले गए। 1910 में दैनिक पत्रिका 'इण्डिया' का प्रकाशन पांडिचेरी तक ही सीमित कर दिया गया। 1918 में उन्होंने सपरिवार पांडिचेरी छोड़ी और 20 नवम्बर को ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गांधी जी से 1919 में मद्रास में उनकी मुलाकात हुई और एक बार फिर वह 'स्वदेशमिजन' के सहायक सम्पादक बने। जुलाई 1921 में मद्रास के त्रिप्लिकेन में एक मन्दिर के हाथी ने उन पर आक्रमण किया। वह बच तो गए पर उन्हें पेट में अन्दरूनी चोटें आईं और 12 सितम्बर को मात्र 39 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। अपने छोटे से ही जीवन में उन्होंने जो कविताएं लिखीं उन्हें आज भी दुनिया भर में लोग याद रखें हैं और गाते हैं।

BHARATHI

Tamil/150 min

Director: Gnana Rajashekarana; **Music:** Illayaraja; **Camera:** Thankar Bachan; **Cast:** Sayaji Shinde, Devyani, T. P.

Gajendran, Indhu, Master Pushpak

This film is based on the life of Subramanya Bharati, the National Poet. Born in Ettayapuram on the December 11, 1882, Subbaiah took to writing poems at the tender age of seven. In 1893, he was awarded the title of 'Bharati' for his contribution to Tamil Literature. He studied at the Hindu College at Tirunveli for his graduation course during the years 1894-97 and married seven-year old Chellamma in the same year.

After his father's death, he came back to Ettayapuram to assist the Raja in his administration. He worked as a teacher at Sethupathi High School at Madurai for a few months in 1904. He took active part in politics and was part of the Congress at Surat in 1907. An arrest warrant put out by the British forced him to move to Pondicherry. In 1910, the daily magazine 'India' was restricted to be published only in Pondicherry. He left Pondicherry in 1918 with his family and was arrested by the British Government on November 20 and released on condition that he stays only at Kadayam, his wife's place.

In 1919, he met Gandhiji in Madras, and again joined as the Assistant Editor of 'Swadeshamitran'. He was attacked by the temple elephant at Triplicane in Madras in July 1921. Though he survived the attack, he suffered a severe stomach ailment and died that year at the young age of 39. The poems he wrote in his short life are still remembered and sung the world over.



चटलेडो आइडी

(मणिपुरी - 135 मिनट)

निर्माता - निर्देशक - मखोनमानी मोंगसाबा;
गीत-मखोनमानी मोंगसाबा, मोइरांगथेम इनाओ,
सुनील नाओरेंम; **संगीत-**सागोलसेम तिजेन्द्र;
कैमरा-चन्द्रा; **पात्र-**नित्याइबी, कविता, आर.के.
ज्ञानरंजन, शुमिला

संध्या और उसकी विधवा माँ का जीवन मुश्किलों में कट रहा था क्योंकि संध्या का भाई राजन अपनी पत्नी के कहने में आकर उनके साथ बुरा व्यवहार करता था। संध्या, शैलेश से मोहब्बत करती थी। शैलेश अपनी विधवा माँ और छोटी बहन के साथ रहता था। संध्या से कुछ मदद लेकर एक मुर्गीखाना शुरू किया लेकिन महामारी

के चलते सारी मुर्गियाँ मर गईं। उसने एक सरकारी नौकरी के लिए अर्जी दी लेकिन पैसा नहीं दे पाने के कारण वह नौकरी नहीं पा सका। उसे यह बात संध्या की सहेली राधा के पिता से मालूम हुई।

संध्या ने अपनी माँ से झूठ बोला कि वह एक डॉक्टर से प्रेम करती है। शैलेश ने वह जगह छोड़ देने का निश्चय किया जिससे संध्या अपनी माँ की मर्जी के अनुसार दूसरे लड़के से शादी कर सके। राजन और उसकी पत्नी को अपने बर्ताव पर पछतावा हुआ पर शादी के बाद ही माँ की मृत्यु हो गई। लेकिन संध्या ने खुद को यही समझाया कि उसे पहले के कर्मों की सजा मिल रही है।

CHATLEDO EIDEE

Manipur/135min

Producer-Director : Makhonmani Mongsaba; **Lyrics :** Makhonmani Mongsaba, Moirangthem Inao, Sunil Naorem; **Music :** Sagolsem Tijendra; **Camera:** Chandra; **Cast :** Nityaibi, Kavita, R.K. Jnanranjan, Shumila.

Rajen under the influence of his wife illtreated his sister Sandhya and widowed mother. Shailesh, who lived with his widowed mother and younger sister, did not hesitate in working hard.

Shailesh, who loved Sandhya, started a poultry farm with some assistance from Sandhya but the chickens perished because of an epidemic. He applied for a government job but was rejected because money changed hands. He learnt this from Sandhya's friend Radha's father who was himself in the Selection Board.

Sandhya had not told her sick mother about her love for Shailesh, and had lied that the person she loved was a doctor. Shailesh went away one day, and Sandhya was married to someone else, even as her mother lay seriously ill. Rajen and his wife had a change of heart and deep remorse for their neglect of the old woman and Sandhya. Sandhya could not forget Sailesh. She reconciled herself to the thought that she was condemned to this fate by her previous karma.



DAMAN

Hindi/126 min

Producer: Ministry of Health and Family Welfare; **Director:** Kalpana Lajmi; **Lyrics:** Bhupen Hazarika, Maya Govind; **Music:** Bhupen Hazarika; **Cast:** Raveena Tandon, Sayaji Shinde, Sanjay Suri, Raima Sen, Ranjan Koshal, Shaan, Bharti Jaffrey, Nippon Goswami, Kalpana Barua, Ishaan Barua, Girija Das, Indira Bania, Jharna Bhishaya, Dinesh Bhishaya

Durga is married off to Sanjoy Hazarika, a rich tea plantation owner in Assam who was opposed to marriage but is otherwise a sadistic womanizer. Durga finds solace in the fact that her brother-in-law Sunil understands her woes. One night, Sanjoy turns sadistic and rapes her. Later when she gives birth to daughter Deepa, he charges Durga of illicit relations with Sunil and in a fit of anger kills Sunil.

Durga runs away to Guwahati to start life anew and gets her daughter educated when Sanjoy wants Deepa to be married though she is young. Deepa, who is opposed to marriage in view of what happened to her mother, falls in love with Kaushik Nath.

But Sanjoy traces them as his father died leaving the property in the name of Deepa. Deepa refuses to transfer the property to her father. On the last day of the festival when the effigies of Durga, the Goddess of Power, are to be immersed in the river, Sanjoy comes to kill his own daughter. This is when Durga moves as if in a trance and kills her husband.

दमन

(हिन्दी - 126 मिनट)

निर्माता-महिला एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, **निर्देशक-**कल्पना लाजमी, **गीत-**भूपेन हज़ारिका, **माया गोविन्द,** **संगीत-**भूपेन हज़ारिका, **पात्र-**रवीना टण्डन, सायाजी शिन्दे, संजय सूरि, राहमा सेन, रंजन कोशल, शान, भारती जाफरी, निष्पान गोस्वामी, कल्पना बरुआ, इशान बरुआ, गिरिजा दाम, इन्दिरा बनिया, ज़रना भिशाया, दिनेश भिशाया

दुर्गा की शादी असम के एक धनी चाय बागान मालिक संजय हज़ारिका से होती है जो यूँ तो शादी के खिलाफ है लेकिन महिलाओं से अवैध सम्बन्ध रखता है। दुर्गा को सिर्फ इसी बात की सात्वना है कि उसका देवर सुनील उसके दुःखों को समझता है। एक रात नशे में उसका पति

उसका बलात्कार करता है। बाद में जब वह एक लड़की को जन्म देती है वह उस पर सुनील के साथ अवैध सम्बन्ध रखने का आरोप लगाता है और नशे की हालत में सुनील को मार देता है।

दुर्गा अपनी 13 वर्षीय बेटी दीपा के साथ भागकर गुवाहाटी आ जाती है जब संजय जबरन दीपा की शादी करना चाहता है। अपनी माँ की हालत देखकर दीपा शादी के खिलाफ है, लेकिन उसे कौशिक नाथ नाम के एक लड़के से प्यार हो जाता है। संजय अपनी पत्नी और बेटी को खूँड लेता है जब उसके पिता अपनी सारी सम्पत्ति दीपा के नाम करने के बाद मर जाते हैं। दीपा सम्पत्ति पिता के नाम करने से मना कर देती है। उत्सव के अन्तिम दिन जब शक्ति की देवी दुर्गा माँ की मूर्तियों को नदी में प्रवाहित करना था, संजय अपनी ही बेटी को मारने पहुँचता है। दुर्गा आगे बढ़ती है और अपने पति को मार देती है।



DEKHA

Bengali/123min

Producer: Ramesh Gandhi; **Director-Camera-Music:** Goutam Ghose; **Cast:** Soumitra Chatterjee, Debasree Roy, Kamal Kanjilal, Indrani Halder, Master Suman Deb

The film is the cinematic expression of the weird penumbra of our educated, civilized society. The seen and the unseen worlds of our protagonist Shashibhushan are inextricably intertwined into a mixed metaphor of modern allegories.

A scion of the fading aristocracy Shashibhushan lost his eyesight almost 17 years ago. He lives out his visual memories and the sounds, smells and touch of the past in his crumbling ancestral mansion in the heart of town. His teacher's daughter Sarama and her 10-year old son Shumon have taken shelter here. The plotline of Sarama's past includes Shashibhushan too.

Another man enters the orbit of their lives on a vacation in the country. Gagan is born blind, never having seen the universe. Shashibhushan's memories include those of his wife and daughter, and turbulent times through which he has lived. Gagan's perceptions of his unseen world and Sarama's fragmented reality coalesce into a symphony.

देखा

(बंगाली - 123 मिनट)

निर्माता-रमेश गांधी; निर्देशक-कैमरा-गौतम घोष; पात्र-सौमित्र चटर्जी, देवश्री रॉय, कमल कांजीलाल, इन्द्राणी हादर, मास्टर सुमन देव

यह फिल्म हमारे सभ्य और शिक्षित समाज की विसंगतियों का चित्रांकन है। शशि भूषण की देखी-अनदेखी दुनिया के माध्यम से फिल्म का कथानक व्यक्त होता है।

समाप्त हो रहे कुलीनतंत्र का वंशज शशि भूषण 17 साल पहले अपनी आंखों की रोशनी खो चुका था। वह शहर के बीचो-बीच बने खण्डर होते अपने मकान में अपनी यादों, आवाजों, गंध और स्पर्श के सहारे जी रहा है। उसके अध्यापक की

लड़की सरामा और उसका दस साल का लड़का शुमोन ने वहीं शरण ले रखी है। सरामा की बीती ज़िन्दगी में शशि भूषण भी शामिल रहा है।

इनकी ज़िन्दगियों में एक आदमी का प्रवेश होता है। गगन, जन्म से ही अन्धा है और उसने कभी भी दुनिया नहीं देखी है। शशि भूषण की यादें उसकी पत्नी और उसकी बेटी के साथ-साथ उसके पुराने वैभवकाल से जुड़ी हैं। जिसमें वह वास्तव में जिया है। अब तक कभी नहीं देखे संसार के बारे में गगन की धारणा और सरामा की बिखरी दुनिया मिलकर एक हो जाते हैं।



घरक्षरंगल

(मलयालम - 79 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-सलीम पादियथ; **संगीत-**मनोज जॉर्ज; **कैमरा-पी.** सुकुमार; **पात्र-सादिक,** सोना नायर, जोस पल्लिस्सेरी, मेनका महेश, मास्टर अरुण

मोनायी को कक्षा से निकाल दिया जाता है क्योंकि उसने स्कूल ड्रेस नहीं पहनी थी। उसके दो मित्रों सिन्धु और सौम्या ने अपनी पुरानी स्कूल ड्रेस को फ्रॉक का निचला हिस्सा निकाल दिया जिससे वह लड़कों की स्कूल ड्रेस जैसा लगे। लेकिन सच्चाई सामने आ गई और मोनायी को विद्यालय से निकाल दिया गया।

उसे मलयालम माध्यम स्कूल में दाखिला मिल जाता है और वह अपनी माँ से झूट बोलता है कि उसे यह स्कूल अच्छा लगा। मोनायी स्कूल जाना बन्द कर देता है जब शिक्षक सुरेन्द्रन की

नौकरी चली जाती है।

साल का काफी हिस्सा निकल जाने के कारण मोनायी माँ का हाथ बंटाने के लिए नौकरी ढूँढने का निश्चय करता है। पास के ही एक खेत का मालिक कुरूप उसकी दृढ़ता को देखकर खुश हो जाता है और उसे गडरिए का काम दे देता है। कुरूप उसे खेती के बारे में भी वो सब बताता है जो वो खुद जानता था। इन दिनों मोनायी में कृषि के काम में रुचि पैदा होती है और वो एक अपना खेत खरीदने का निश्चय करता है। अपने पिता की मृत्यु के बाद बीमे का पैसा मिलने पर मोनायी एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश लेता है, लेकिन जब उसे यह पता चला कि स्कूल फीस के तौर पर काफी बड़ी रकम मांग रहा है, वह पढ़ाई का इरादा छोड़ देता है। वह उस पैसे से कुरूप से जमीन का एक हिस्सा खरीदता है। वह कुरूप को बताता है कि वह मिट्टी और इसके तत्वों से तब तक सीखेगा जब तक उसे सुरेन्द्रन जैसा प्यारा अध्यापक नहीं मिल जाता। वह फावड़े से काम

करना शुरू करता है और ऐसा लगता है जैसे पीछे से उसके पिता की आत्मा उस पर आशीर्वाद को वर्षा कर रही है।

GHARAKARASHANGAL

Malyalam/79min

Producer-Director: Salim Padiyath; **Music:** Manoj George; **Camera:** P. Sukumar; **Cast:** Sadique, Sona Nair, Jose Pallisser, Manka Mahesh, Master Arun Monayi is expelled from his class for not wearing a proper uniform. Fearing his impoverished mother Mary will be hurt, his two classmates Sindhu and Soumya remove the bottom portion of their old uniform frock to make it look like a boy's uniform. But the truth is exposed, and he is dismissed from school despite the desperate pleas of his mother.

Surendran persuades Monayi's mother to send him to a Malayalam Medium School. Monayi lies to his mother that the school is great. But Surendran loses his job when the authorities learn the school is running below its mandatory strength. Monayi stops going to school.

Monayi starts working as a shepherd in Kurup's farm and learns about agriculture. Monayi buys a part of Kurup's land using the money he received from his father's insurance. He starts working with a spade, while his father's soul seems to nod approval in the backdrop.



जानता है मरियम को शादी कर देने की सलाह देता है। करुथैया अपनी बहन के लिए दूल्हा खोज लेता है और शादी के लिए पैसा जुटाने के लिए निर्धारित सीमा से आगे मछली पकड़ने चला जाता है। बड़े जहाज वाले नागज होकर उसकी मछलियां तहस नहस कर देते हैं। कायल उप्पली के जरिए पीटर से

अपने प्यार के बारे में भाई को बताती है।

पीटर कायल से इस शर्त पर शादी करता है कि करुथैया मरियम से शादी करे। जब मरियम गर्भवती होती है तो करुथैया को पता चलता है कि पीटर और उसकी माँ को मरियम के बारे में सब पता था। उसे लगता है कि उसे धोखा दिया गया है। इस बीच सेल्विन पेरियानायगम की लड़की से शादी करने के लिए उसी गाँव वापस आता है। पीटर उसे मारना चाहता है लेकिन करुथैया बीच में आकर पीटर से उसके धोखे के बारे में सवाल पूछता है। अन्ततः दोनों दोस्त मिल जाते हैं।

KADAL POOKKAL

Tamil/152min

Producer: D. Pandijan; **Director-Screenplay:** Bharathi Raja; **Lyrics:** Vairamuthu; **Music:** Deva; **Camera:** B. Kannan; **Cast:** Murali, Manoj Bharathi, Uma, Sindhu, Santhana Bharathi, Pratiksha

Karuthiah and Peter are good friends in Muttom village in Kanyakumari District.

Karuthiah wants his sister Kayal to be married to an educated, employed person. Kayal falls in love with Peter but does not disclose her love. Uppili, a young girl living in the nearby village Uppalam, falls in love with Karuthiah when she comes to sell salt. Peter, who lives with his sister and mother, aims to buy a launch and become a rich man. James Selvin, who has come from Chennai for research about the sea, rapes Peter's sister Mariyam. Knowing this, Karuthiah advises Peter to get his sister married, but Peter refuses.

Fishing areas are divided in accordance with the instruction of the local leader. The fishermen with Kattamaran have to fish within five km from the shore and the launch holders can fish beyond that. When Karuthiah goes to fish beyond the limit to earn more money for his sister's marriage, the launch owners get irritated and destroy Karuthiah's fish. Kayal tells her brother that she loves Peter.

Meanwhile, Peter comes to know of his sister Mariyam's rape. Peter agrees to marry Kayal in return for Karuthiah marrying Mariyam. Both marriages take place but Karuthiah tells Mariyam also about his love for Uppili, and that he knows about her past life. Later when Mariyam is pregnant, he is shocked to learn that Peter and his mother had known about Mariyam's affair. Selvin comes back to the village to marry another girl. Peter tries to kill Selvin but Karuthiah intervenes and questions Peter about his own betrayal to him. Both friends make up.

कडल पूक्कल

(तमिल - 152 मिनट)

निर्माता-डी. पाण्डियन; **निर्देशक-**भारती राजा
गीत-वैरामुथु; **संगीत-देवा;** **कैमरा-बी. कानन;**
पात्र-मुरली, मनोज भारती, उमा, सिन्धु, सन्थान
भारती, प्रतीक्षा।

कन्याकुमारी जिले के मट्टम गाँव के अलग-अलग महत्वाकांक्षी रखने वाले दो मछुआरे करुथैया और पीटर अच्छे दोस्त हैं। करुथैया अपनी बहन कायल की शादी एक पढ़े-लिखे, कामकाजी लड़के से करना चाहता है, लेकिन वह पीटर से प्यार करती है। पड़ोस के गाँव उप्पलम में रहने वाली युवती का प्यार करुथैया से हो जाता है। अपनी बहन और माँ के साथ रहने वाला पीटर अपनी बहन मरियम को आगे पढ़ाई करने से मना कर देता है जिससे वह दुःखी हो जाती है। समुद्र के बारे में शोध करने चेन्नई से आया जेम्स मरियम का बलात्कार कर देता है। पीटर के गुस्सेल स्वभाव को जानते हुए, करुथैया जो सच्चाई



कल का आदमी

(हिन्दी-140 मिनट)

निर्माता-स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय;
निर्देशक-अमोल पालेकर; **संगीत**-अन्जान विश्वास;
कैमरा-देबू देवधर; **पात्र**-किशोर कदम, सीमा विश्वास, सचिन खेडेकर, वर्षा उसांगकर।

आज से लगभग आठ दशक पहले जब जन्म दर के नियंत्रण और महिलाओं के विषय में वैचारिक स्तर पर भी कोई बात नहीं थी, एक व्यक्ति रघुनाथ कर्वे (1882-1953) ने कहा कि महिलाओं को अपने प्रजनन व्यवहार के बारे में निर्णय करने का अधिकार और अपने शरीर पर स्वयं का नियंत्रण होना चाहिए।

सुप्रसिद्ध समाज सुधारक भारत रत्न महर्षि कर्वे

के सबसे बड़े पुत्र रघुनाथ कर्वे का जन्म महाराष्ट्र राज्य के छोटे से गाँव मुरुद में हुआ था। उन्होंने गणितज्ञ छोड़कर अपना समय जन्मदर नियंत्रण और महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य के विषय में लगाया। कर्वे ने गर्भनिरोधक उपायों के बारे में बताया और 1921 में भारत का पहला जन्म नियंत्रक क्लिनिक खोला।

कर्वे ने आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद सत्ताईस वर्षों तक लगातार समाज स्वास्थ्य नाम से किताबें और पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। हालाँकि प्रकाशित सामग्री में कहीं भी अश्लीलता नहीं थी, उन्हें अश्लीलता फैलाने के आरोप के लिए दण्डित किया गया। इन सबके बाद भी आर्थिक तंगी के बावजूद उनकी पत्नी मालती ने उनको पूरा सहयोग और समर्थन दिया।

KAL KA AADMI

Hindi/140min

Producer: Ministry Of Health and Family Welfare; **Director:** Amol Palekar; **Music:** Anjan Biswas; **Camera:** Debu Deodhar; **Cast:** Kishore Kadam, Seema Biswas, Sachin Khedekar, Varsha Usgaonkar

Nearly eight decades ago, when there was no talk of birth control and no awareness of 'female sexuality' even at a conceptual level, Raghunath Karve (1882-1953) envisaged that women should have the power to decide their own reproductive behaviour and have control over their own bodies.

Karve, the eldest son of the well-known social reformist Bharat Ratna Maharshi Karve, was born in the small village of Murud in the state of Maharashtra. A highly educated mathematician, he sacrificed a successful academic career to devote himself to the causes of birth control and women's reproductive health. Karve sought to explore, introduce and popularize contraceptive devices that were non-coercive and started the first birth control clinic in India in 1921.

Karve published books, manuals and a magazine called Samaj Swaasthya (Health of the Society) consistently for twenty-seven years despite financial hardships. Although the published works had no pornographic intent, he faced charges of indecency and obscenity, and was punished on those grounds. However, his wife Malati fully supported him, even bearing the financial responsibility.



KANDUKONDAIN KANDUKONDAIN

Tamil/157 min

Producer: S. Thanu; **Director:** Rajiv Menon; **Music:** A. R. Rehman; **Lyrics:** Vairamuthu; **Camera:** Ravi K. Chandran; **Cast:** Tabu, Aishwarya Rai, Mammooty, Ajith, Pooja Batra, Abbas, Manivannan,

Anitha Rathnam, Srividya, 'Nizalgal' Ravi, Baby Shamli, Raghuvaran, Arvind, Unnikrishna Namboodri, Dino Morea, and (guest artiste) Senthil

Sowmya loves Manohar, an aspiring filmmaker. Her more outgoing sister Meenakshi falls in love with Srikanth, especially as they also share a love for Subramanya Bharati's poetry. But one day Srikanth disappears, and the sisters along with their younger sister Kamla and mother Padma are turned out of their mansion Lakshmi Nivas after her brother Sam and his wife Lalitha inherit the estate following the death of their father.

The four women arrive in Chennai. Sowmya finds a job as a telephone operator in a computer software company. Major Bala, an army officer who left the army after he lost a leg in action, loves Meenakshi - a good singer- and is content to see her happy and finds her a job.

Later, Meenakshi learns that Srikanth married a minister's daughter to get money. Ultimately, Meenakshi realises that she has fallen in love with Major Bala, and Sowmya marries Manohar who has become a director.

कंडुकोंडेन कंडुकोंडेन

(तमिल 157 मिनट)

निर्माता-एस. तनु; **निर्देशक-**राजीव मेनन;
संगीत-ए.आर. रहमान; **गीत-**वैरामुत्तु;
कैमरा-रवि के. चन्द्रन; **पात्र-**तब्बू, ऐश्वर्या राय,
ममूटी, अजित, पूजा बत्रा, अब्बास, मानिवन्न,
अनीता रत्नम, श्रीविद्या, 'निजालमाल' रवि, बेबी
शामली, रघुवरन, अरविन्द, उन्नीकृष्ण नम्बूदरी,
दीनू मोरिआ, सेंथिल (अतिथि)

सौम्या को फिल्मकार बनना चाह रहे मनोहर से प्यार हो जाता है। उसकी बहन मीनाक्षी श्रीकांत से प्यार करती है। एक दिन श्रीकांत अचानक कहीं चला जाता है और इधर दोनों बहनों को छोटी बहन कमला तथा माँ पद्मा के साथ उनका भाई सैम और उसकी पत्नी ललिता लक्ष्मी मैन्शन से बाहर निकाल देते हैं,

क्योंकि उनके पिता की मृत्यु के बाद सारी सम्पत्ति सैम के नाम हो जाती है।

चारों महिलाएं चेन्नई आती हैं, जहां सौम्या एक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर कम्पनी में टेलीफोन ऑपरेटर की नौकरी कर लेती है। युद्ध में पैर गंवाने के बाद सेना छोड़ चुका सेना का अधिकारी मेजर बाला मीनाक्षी से प्यार करता है। वह मीनाक्षी को, जो एक अच्छी गायिका है, नौकरी दिलवा देता है।

बाद में मीनाक्षी को पता चलता है कि पैसा पाने को चाह में श्रीकांत ने एक मंत्री की लड़की से शादी कर ली है। आखिरकार मीनाक्षी को मेजर बाला से प्यार हो जाता है और सौम्या मनोहर के शादी कर लेती है।



सहायता से माया गोपन और आशा को एक कर देती है। तब उसे पता चलता है कि उसके जाने के बाद आशा ने कभी नृत्य नहीं किया। लेकिन अब वो अपने परिवार के लिए खुशी से नाच उठती है।

KOCHU KOCHU SANTOSHANGAL

Malyalam/155min

Producer: P.V. Gangadharan, Suku Nair; **Director:** Sathyan Anthikkad; **Music:** Ilayaraja; **Lyrics:** Kaithapram Damodaran Namboodiri 'Kairali'; **Camera:** Vipin Mohan; **Cast:** Jayaram, Laxmi Gopaldaswamy, Lalu Alex, Kavya Madhavan, Master Kalidas

Gopan, who lives with his son Achu in Goa, works in a Petrol Bunk. Selin, the teenage daughter of Andrews who runs a neighbouring Restaurant, loves Gopan but he does not respond. Nobody knows anything about Achu's mother except his father. One day, Selin comes to Gopan's house when her brother-in-law pesters her. It is then that Gopan reveals his story.

A cameraman in Kerala, Gopan loved and married Asha Lakshmi despite the opposition of her rich parents. Asha went to Delhi to perform as a dancer with Maya Varma. When Asha's fame spread far and wide, the unhappy Gopan left town with his son Achu.

Hearing this, Selin goes back to her house. One day, Maya Varma sees Gopan. With Selin's help, Maya helps to unite Gopan and Asha, and he learns that she never danced once he left her. But now, she joyfully dances for the family.

कोचु कोचु संतोषंगल

(मलयालम - 155 मिनट)

निर्माता- पी.वी. गंगाधरन, सुकु नायर, **निर्देशक-** सत्यन अन्तिककड, **गीत-** कैथाप्रम दामोदरन नम्बूदरी 'कैराली', **संगीत-** इल्लयाराजा, **कैमरा-** विपिन मोहन, **पात्र-** जयराम, लक्ष्मी गोपालस्वामी, लालू एलेक्स, काव्यामाधवन, मास्टर कालिदास

सेलिन, जो एक रेस्तरां चलाती है, पड़ोस में रह रहे गोपन से प्रेम करती है। गोपन, जिसका एक बेटा अचु भी उसके साथ रहता है, इस संबंध से इन्कार करता है। अचु की माँ के बारे में गोपन के अलावा किसी को कुछ पता नहीं है।

जब सेलिन का बहनोई पीटर एक दिन उसका फायदा उठाना चाहता है, वह गोपन के घर भाग

जाती है। तब गोपन अपनी कहानी सुनाता है।

केरल में रह रहे गोपन ने काफी अमीर परिवार की लड़की आशा लक्ष्मी से उसके परिवारवालों की इच्छा के विरुद्ध शादी कर ली। बाद में उनके यहां बेटा पैदा हुआ। एक दिन दिल्ली की प्रसिद्ध नृत्यांगना माया वर्मा उनके शहर में कार्यक्रम करने आईं। जब उसकी साथी नर्तकी को अचानक जाना पड़ गया तो आशा को उसकी जगह लेनी पड़ी। उससे प्रभावित होकर माया ने उसे दिल्ली के एक कार्यक्रम में बुलाया। गोपन इससे नाखुश था लेकिन आशा की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई। आशा की सफलता में खुद को बाधक मानकर वह अपने पुत्र और जोस के साथ वह शहर छोड़ देता है।

यह सुनकर सेलिन वापस चली जाती है। एक दिन माया वर्मा गोपन को देख लेती है। सेलिन की

मत्तदाना

(कन्नड़ - 140 मिनट)

निर्माता-एच.जी. नारायण, आई.पी. माल्लेगौडा;
निर्देशक-टी.एन. सीताराम; **कैमरा-**अशोक कश्यप; **गीत-**डॉ० सिद्धलिंगैया, एच.एस. वेंकटेशमूर्ति; **संगीत-**सी. अश्वथ, वी. मनोहर
पात्र-हेमन्त वशिष्ठ, तारा, अविनाश, वनमाला विश्वनाथ

इसी नाम से 1964 में डॉ० एस.एल. भाइरप्पा द्वारा प्रकाशित उपन्यास पर आधारित फिल्म मत्तदाना, साठ के दशक के अंत और सत्तर के दशक की शुरुआत में गांधी जी के दर्शन का प्रयोग मात्र राजनीतिक स्वार्थों के लिए करने वाले पैसे के लालची लोगों पर तीखा कटाक्ष करती है।

रामलिंगे गौडा एक ईमानदार ठेकेदार हैं, जिनकी सुनन्दा और लक्ष्मी नाम की दो लड़कियां हैं। सुनन्दा का विवाह पहले ही हो चुका है जबकि कला विषयों से स्नातक लक्ष्मी अविवाहित है। पुते गौडा नाम का मंत्री अपने राजनीतिक लाभ के

लिए रामलिंगे को इस्तेमाल करता है। मार्कण्डे गौडा रामलिंगे को पसन्द नहीं करता।

लक्ष्मी गरीबों और जरूरतमन्दों की सेवा में यकीन करने वाले एक आदर्शवादी युवक डॉ० शिवप्पा से प्यार करती है, लेकिन मार्कण्डे शिवप्पा को इस्तेमाल करके आगे बढ़ना चाहता है। इसके चलते लक्ष्मी को काफी दुःख होता है और उसके पिता को शर्मन्दगी उठानी पड़ती है। बेटी के जन्म के समय सुनन्दा की मृत्यु हो जाने पर लक्ष्मी को अपने बहनोई से शादी करना पड़ती है।

मंत्री बनने के बाद मार्कण्डे रामलिंगे का परेशान करता है जिसके कारण रामलिंगे आत्महत्या कर लेता है। पिता के प्रति पति का दुर्व्यवहार देख रही लक्ष्मी अपने पति को छोड़ देती है। बाद में डॉ० शिवप्पा को राजनीति में प्रवेश करने की अपनी गलती का पता चलता है और वो गरीबों की सेवा का संकल्प लेता है।

MATHADANA

Kannada/140min

Producer: H.G. Narayan, I.P. Mallegowda;
Director: T.N. Seetharam; **Camera:** Ashok Kashyap; **Lyrics:** Dr. Siddalingaiah, H.S. Venkatesh Murthy;
Music: C. Ashwath, V. Manohar; **Cast:** Hemanth Vasista, Tara, Avinash, Vanamala Vishwanath

Based on the novel of the same name by Dr.S.L.Bhyrappa published in 1964, Mathadana is a searing critique of the gradual degeneration of Gandhian ideals. Ramalinge Gowda is an honest civil contractor and a family man with two daughters-Sunanda and Lakshmi. Sunanda is married to Putta Thammaiah, a State Government employee, and Lakshmi is unmarried. Putte Gowda-a minister-uses Ramalinge for political gains. Markande Gowda does not like Ramalinge.

The idealistic Dr. Shivappa loves Lakshmi, but breaks off his engagement following a conspiracy by Markande who feels threatened by Shivappa's alliance with Ramalinge. Lakshmi is forced to marry her brother-in-law when Sunanda dies while delivering their daughter.

Ramalinge commits suicide when he is harrassed by Markande who has become a minister. Lakshmi is shattered by his death and she walks out of her husband's home. Later Dr Shivappa realizes his folly in entering politics and vows to serve the poor.



मझा-द रेन

(मलयालम - 145 मिनट)

निर्माता-जी. हरिकुमार, **निर्देशक-**लेनिन राजेन्द्रन, **गीत-यूसफली** केचेरी, जयकुमार, डी.वी. उषा, **संगीत-**रवीन्द्रन, **कैमरा-**एस. कुमार, **पात्र-विजू** मेनन, संयुक्ता वर्मा, जगती श्रीकुमार

मझा कमला दास की कहानी पर आधारित फिल्म है। यह भद्रा की कहानी है जो अपने पिता डॉ० माधवन नायर के बंगलूर छोड़कर गाँव में क्लीनिक खोलने से आराध्य है। लेकिन तभी वहाँ उसकी मुलाकात रामानुज शास्त्री से होती है जिनसे वह संगीत सीखती है। उनसे उसे प्यार हो जाता है।

संगीत और रामानुज से प्यार के कारण यह शहरी लड़की गाँव के जीवन को स्वीकार कर लेती है। डॉ० माधवन नायर को इस बात का पता तब चलता है

जब रामानुज उनके पास अपनी माँ के इलाज के लिए आता है। उस संगीत अध्यापक से अपनी बेटी का विवाह करने के इच्छुक नहीं होने के कारण डॉ० नायर रामानुज के चाचा से उसका विवाह किसी अन्य लड़की से करने के लिए राजी कर लेते हैं। कई वर्ष बाद, भद्रा अब एक डॉक्टर है और अपने कम्प्यूटर इंजीनियर पति चन्द्रशेखरन के साथ अलग-थलग सी चिन्दगी जी रही है। चन्द्रशेखरन को रामानुज के लिए उसके प्यार का पता चल जाता है और इस बात से जिन्दगी में नई परेशानियाँ आ जाती हैं। हालाँकि वो अपने काम से संतुष्ट है लेकिन उसे उसका गुजर समय अक्सर याद आता है। अपने शराबी पति की मृत्यु के बाद वह गाँव जाती है पर वहाँ यह जानकर उसे झटका लगता है कि रामानुज और उसकी पत्नी ज्ञानाम्बल को गले का कैंसर है और वो गा नहीं सकते।

MAZHA-THE RAIN

Malyalam/145min

Producer: G. Harikumar, **Director:** Lenin Rajendran; **Lyrics:** Yusufali Kechery, Jayakumar, D.V. Usha; **Music:** Raveendran; Camera: S. Kumar; **Cast:** Biju Menon, Samyuktha Varma, Jagathy Sreekumar

Mazha is based on a story by Kamala Das. It is the story of Bhadra who is angry at her father Dr Madhavan Nair's decision to leave Bangalore and come to the village to open a clinic. But then she meets and falls in love with Ramanuja Shastri from whom she begins to learn music.

Love for music and for Ramanuja transforms this city-bred girl into accepting her life in the village. Dr Madhavan Nair realises this when Ramanuja comes to him for his mother's treatment. Not wanting his daughter to marry the music tutor, Dr Nair convinces Ramanuja's uncle to get the nephew married to another girl.

Years later, Bhadra who is a doctor is leading an estranged married life with her husband Chandrasekharan, a computer engineer. Chandrasekharan learns about her love for Ramanuja, and this complicates their life further. Though she finds solace in her work, she is constantly haunted by memories of her past. After the death of her alcoholic husband, she goes to the village, but is shocked to learn that both Ramanuja and his wife Jnanambal suffer from throat cancer and cannot sing.



मोक्ष

(हिन्दी - 150 मिनट)

निर्माता-अशोक मेहता, नीरज मेहता;
निर्देशक-कैमरा - अशोक मेहता; **गीत**-जावेद अख्तर; **संगीत**-राजेश रेशन; **पात्र**-अर्जुन रामपाल, मनोषा कोइराला, गुलशन ग्रोवर, कल्पना पंडित

फ़िल्म कानून के उन दोषों को सामने लाती है जिसके चलते एक तेजतर्र वकील सच्चाई के साथ खिलवाड़ कर सकता है।

विक्रम सहगल पेशे से वकील है और एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाहता है जहाँ न्याय के लिए गरीब भी जाएं। वह एक लेख भी लिखता है जिसके बाद लोग उसके पास न्याय मांगने पहुंचते हैं।

लेकिन भाग्य का अजीब खेल है कि विक्रम एक

हत्या के आरोप में जज के सामने खड़ा है। रितिका सान्याल की मौत हो चुकी है। उसकी मौत आत्महत्या जैसी लगती है लेकिन कोर्ट को इसके लिए सबूत चाहिए। विक्रम खुद को इतनी अच्छी तरह बचाता है कि मामला और उलझ जाता है।

विक्रम कहता है कि ऐसा भी हो सकता है कि उसने अपनी संस्था के लिए बैंक लूटने का निश्चय किया हो और रितिका के धोखा देने पर उसका कत्ल कर दिया हो। इस बात से सब दुविधा में पड़ जाते हैं लेकिन जज विक्रम को सबूतों के अभाव में रिहा कर देते हैं। सब खुश हैं सिवाय विक्रम के, क्योंकि उसे पता है कि कानून को कैसे तोड़ा मरोड़ा जा सकता है। उसे लगता है कि वह उसी दिन मर गया था जिस दिन रितिका ने उसे धोखा दिया और उसने रितिका से सम्बन्ध तोड़ लिए थे।

MOKSHA

Hindi/150 min

Producer: Ashok Mehta, Neerja Mehta;
Director-Camera: Ashok Mehta; **Lyrics:** Javed Akhtar; **Music:** Rajesh Roshan;
Cast: Arjun Rampal, Manisha Koirala, Gulshan Grover, Kalpana Pandit

The film aims at exposing the flaws in law that make it possible for a smart lawyer to distort the truth.

Vikram Sehgal, who has trained as a lawyer, wants to set up an institution where the poor can come for help. He even writes an article, which makes many people come to him for justice.

By a strange quirk of fate, Vikram is now standing before a judge, accused of murder. Ritika Sanyal is dead. The death looks like a suicide, and Vikram has defended himself so well that the case has become more confusing.

Vikram himself suggests a theory. Perhaps he needed money desperately for his institution, and decided to loot a bank. He confided in Ritika. But she informed the police. He may have therefore murdered her. Everyone is confused at this theory, but the judge declares Vikram not guilty for want of evidence. But Vikram is sad. For he now knows how law can be twisted. Though not sentenced to death, he feels he died the day Ritika betrayed him and he severed ties with her in the Fort.



MUNNUDI

Kannada/120min

Producer: Navachitra; **Director:** P. Sheshadri; **Lyrics:** Boluvar Mohammed Kuniti, **Music:** V. Manohar; **Camera:** B.S. Shastri; **Cast:** H.G. Dattatreya, Tara, Shivamogga Venkatesh, M.P. Venkarao, C. R. Sashikumar, M.N. Suresh, Mohammed Kulaayi, Sreevatsa, Chayasingh, Nandita, Sudhi Raj

When Arabian traders come to the tiny seaside village Mutthuchera on the Arabian Sea to buy wood, spices and so on, local traders induced poor women to a 'system' in which they marry the Arabians and live with them as their wives in nearby posh hotels, and are divorced when the Arabs want to go back. These women get good money as Meher, as a part of marriage custom, every time they marry.

But Rukhiya and the Arabian she married fall in love with each other. He does not divorce her and promises to return soon to take her back with him. Rukhiya gives birth to daughter Unnisa. Sixteen years pass by but the Arab does not return. Rukhiya continues to wait and wards off pressures and inducements for remarriage. Rukhiya also successfully manages to prevent her daughter Unnisa being married off in the same manner.

मुनुदी

(कन्नड - 120 मिनट)

निर्माता-नवचित्रा; **निर्देशक-**पी. शेषाद्रि; **गीत-**बोलुवर मोहम्मद कुनिति; **संगीत-**वी. मनोहर; **कैमरा-**बी.एस. शास्त्री; **पात्र-एच.जी. दत्तात्रेय, तारा**

जब अरब से व्यापारी अरब सागर में किनारे स्थित छोटे से गाँव मुत्तुचेरा में लकड़ियाँ, मसाले या कुछ और चीजें खरीदने आते हैं यहाँ के स्थानीय व्यापारी अस्थायी पत्नी समेत उन्हें सारी सुख सुविधाएँ मुहैया कराते हैं। गरीब स्थानीय महिलाएँ इसमें शामिल हो जाती हैं जिसके तहत अरब से आने वाले व्यापारियों से उनका निकाह कर दिया जाता है और वो उनके साथ पत्नी के

तीर पर पास के ही अच्छे से हॉटल में रहती हैं। लगभग तीन महीने बाद जब उन व्यापारियों के वापस जाने का समय होता है वो उन्हें 'तलाक' दे जाते हैं। इन महिलाओं को 'मेहर' के तौर पर अच्छी रकम मिलती है।

रुकैया और जिस अरबवासी से उसका निकाह होता है दोनों को आपस में प्यार हो जाता है। वह उसे तलाक नहीं देता और उसे साथ ले जाने के लिए लौटने का वादा करके चला जाता है। रुकैया उन्निसा नाम की लड़की को जन्म देती है। सौलह साल बीत जाते हैं लेकिन अरबवासी नहीं लौटता रुकैया का प्यार और विश्वास इतना मजबूत है कि वह इन्तज़ार करती रहती है और दुबारा निकाह नहीं करती। वह अपनी उन्निसा की ऐसे हालात में शादी को रोकने में भी कामयाब हो जाती है।



निला कालम

(तमिल 133 मिनट)

निर्माता-मीडिया ड्रीम्स प्रा. लि.; निर्देशक-ए.आर. गांधी कृष्णा; गीत-वैरामुथु; संगीत-भरणी, संगीतराजन; छायांकन-एम.बी. पन्नोरसेलम; पात्र-उदयरज, रंजिनि हरिहरन, दिनेश कुमार, ई.रोजा

8 साल का पुल्ली और 12 साल का अमर, चेन्नई में गुरुस्वामी के कार शेंड में काम करते हैं। उनकी मित्रता पास ही में रहने वाली एक फिल्म अभिनेत्री वेणी की दस साल की बेटी नीला के साथ हो जाती है। वेणी को नीला का उन लड़कों के साथ खेलना पसंद नहीं है। इधर राजू, वेम्बन, सुन्दरराज नीला के अपहरण की योजना बना रहे हैं। यहां तक कि वे लोग अमर से फिरौती की चिट्ठी भी लिखवा लेते हैं। उनमें से एक

अपहरणकर्ता अपनी टोपी भूल जाता है।

अगले दिन नीला, अमर और पुल्ली कुत्ते नेन्सी के साथ घर से भाग जाते हैं। वेणी को यकीन है कि उसके पति ने ही नीला का अपहरण किया है जबकि उसका सचिव पट्टाभि उन बच्चों को इसका जिम्मेदार मानता है।

आखिरकार दोनों लड़कों को गिरफ्तार कर लिया जाता है और नीला को घर लाया जाता है। अमर और पुल्ली को बाल सुधार गृह भेज दिया जाता है, लेकिन इसके बाद ये दोनों बच्चे अपराध की दुनिया में चले जाते हैं। नीला अब एक व्यस्त अदाकार बन गई है।

NILAA KAALAM

Tamil/133min

Producer: Media Dreams (P) Ltd;
Director: A.R. Gandhi Krishna; **Lyrics:**

Vairamuthu; **Music:** Bharani, Sangeethrajan; **Camera:** M.V. Paneerselvam; **Cast:** Udayaraj, Ranjini Hariharan, Dinesh Kumar, E. Roja

Pulli, 8, and Amar, 12, work in the car shed owned by Guruswamy in the heart of Chennai city. They make friends with Nilla, the ten-year old daughter of film actress Veni who lives in a posh bungalow nearby. Unknown to them, Raju, Vemban and Sunderraj are planning to kidnap Nilaa for a ransom. They even ask Amar to write a ransom note playfully, which he does for some money. One of the kidnapers leaves behind his hat.

The next day, Nilaa, Amar and Pulli manage to leave the house with her dog Lancy to go on a drive. Seeing the kidnapper's hat which Amar is wearing, Vemban posts the ransom letter as they had planned earlier. When their car is stuck because of shortage of fuel, Nilaa decides to call her father (who has divorced Veni) for help and goes in search of a phone booth. Meanwhile, Veni thinks her ex-husband has kidnapped Nilaa but her secretary Pattabi suspects it is the work of the kids.

Ultimately both the children are arrested and Nilaa is taken home. Amar and Pulli are sent to a juvenile detention home. After a period of two years both escape from the detention home. They see a film poster showing a heroine wearing a sexy dress but fail to recognize it is Nilaa, who has become a busy actress. They are forced into a life of crime.



नुव्वे कावालि

(तेलगू 153 मिनट)

निर्माता-रामोजी राव, **निर्देशक-**के. विजय भास्कर, **गीत-चौ.** सीताराम शास्त्री, भुवनचन्द्र **संगीत-**एस.आर. कोरेश्वर राव, **छायांकन-**हरि बाबू, अनुमोल, **पात्र-**तरुण, रिचा पल्लोद, वी. साई किरन, माधवी श्री

जब मधु बेंगलूर में एक सांस्कृतिक उत्सव में भाग लेने के लिए प्रकाश के साथ जाती है, तब तरुण को महसूस होता है कि वह उससे प्यार करता है। प्रकाश भी मधु से प्यार करता है। तरुण यह सोचकर चुप रह जाता है कि शायद मधु ने उसकी दोस्ती को कभी प्यार की नजर से देखा ही न हो। बाद में, प्रकाश मधु और तरुण की दोस्ती से चिढ़ने लगता है।

प्रकाश की दादी और मधु के मां-बाप उनकी

शादी पक्की कर देते हैं। अब मधु महसूस करती है कि वह तरुण से प्यार करती है। मधु जब तरुण से पूछती है कि उसने अपने प्यार के बारे में उसे पहले क्यों नहीं बताया, तो तरुण बिना कुछ कहे चला जाता है।

तरुण के समझाने पर कि उनका प्यार घरवालों की इच्छाओं के खिलाफ है, मधु और प्रकाश की सगाई हो जाती है। लेकिन बाद में जब मधु, तरुण के उसको लिखे गए पत्र देखती है तो वह महसूस करती है कि वह तरुण के बिना नहीं रह सकती और उससे कहती है कि वह प्रकाश से शादी नहीं करेगी वह अपने मां-बाप को सच बताती है।

जब तरुण एक कैम्प में भाग लेने जा रहा होता है तब रेलवे स्टेशन पर मधु के मां-बाप आते हैं और उससे कहते हैं कि वह वापस लौट आए और मधु से शादी कर लें।

NUUVE KAAVAALI

Telugu/153 min

Producer: Ramoji Rao; **Director:** K. Vijaya Bhaskar; **Camera:** Hari Babu Anumolu; **Lyrics:** Ch. Sitarama Sastry, Bhuvana Chandra; **Music:** S.R. Koteswara Rao; **Cast:** Tarun, Richa Pallod, V. Sai Kiran, Madhavi Sri

Tarun realizes he loves his classmate Madhu when she goes away to a cultural festival in Bangalore with Prakash, who loves her. He is afraid she may never have treated their friendship as love. Later with Tarun's consent, Madhu starts going on dates with Prakash, who feels jealous of Tarun's friendship with Madhu.

Prakash's grandmother and Madhu's parents want the children to marry. Madhu now realizes that she loves Tarun. When an emotionally broken Madhu asks Tarun why he had not proposed to her earlier, Tarun goes away.

When Tarun convinces her that their union would go against the wishes of both families, Madhu gets engaged to Prakash. But later when Madhu sees the letters Tarun he wrote to her, she realizes she cannot live without him and tells him she will not marry Prakash. She reveals the truth to her parents.

When Tarun is about to go to a camp, Madhu's parents meet him at the railway station and say they would like him to return and marry their daughter.



ORU CHERU PUNCHIRI

Malayalam/96min

Producer: Jisha John; **Director:** T. Vasudevan Nair; **Music:** Johnson; **Camera:** Sunny Joseph; **Cast:** Oduvilunnikrishnan, Nirmala Sreenivasan, P.K. Venkuttan Nair, Roslyn James, Master Vignesh.

Krishnakurup had retired as Superintendent of an estate and now lives in the village with his wife Ammalukutty. Their intimacy has weathered time and petty irritations of ordinary life. They quarrel with each other, tease each other and all at the same time care for each other.

Their children who are settled in cities do not appreciate their parents' lifestyle and are anxious to move the old couple to their urban homes. Kurup decides to support his granddaughter who loves a Muslim against the wish of her parents. Their son and daughter-in-law have to consent to the marriage.

Kurup taught Ammalu to be strong for herself and for him, so when he dies, she is grateful that he knew no pain or suffering. She has the strength to contain her grief and assure her children that she can go on living as she has always lived, secure in the knowledge that his spirit will continue to inhabit the piece of earth he loved so deeply, the garden he made for her.

ओरु चेरु पुंचिरी

(मलयालम 96 मिनट)

निर्माता-जिशा जॉन, **निर्देशक-**टी वासुदेवन नायर, **संगीत-**जानसन, **छायांकन-**सनी जोसेफ, **पात्र-**ओदुविलुनीकृष्णन, निर्मला श्रीनिवासन, पी.के. वेनुकुटन नायर, रोस्लीन जेम्स, मास्टर विगनेश

कृष्ण कुरुप, जो एक रियासत का सुपरिटेण्डेंट है, अपनी पत्नी के साथ गांव में रहता है। वे एक दूसरे को ताने देते हैं, झगड़ते हैं लेकिन एक दूसरे का मन से पूरा ख्याल रखते हैं।

लेकिन उनके बच्चे शहर में रहते हैं और वे चाहते हैं कि उनके माँ-बाप उनके साथ आकर रहें। जब कुरुप की पोती एक मुसलमान से प्यार करती है, तो वह उसका साथ देता है और इस

कारण पोती की शादी जहाँ वह चाहती है वहाँ हो जाती है।

वृद्ध दंपति बीच वार्तालाप से पता चलता है कि कैसे वह प्रेम करना सीखी, कैसे उसने अपने आपको परिपक्व बनाया। आज तक उसपर एक बच्चे की तरह निर्भर है। ताकि जब वह मरे तो वह शुक मनाती है कि उसने कोई तकलीफ नहीं सही। उसमें अपने दुख सहने की क्षमता है और अपने बच्चों को धरोसा दिलाती है कि वह अभी जी सकती है, वह सोचती है कि उसकी आत्मा धरती के उम हिससे में हमेशा रहेगी जिसे वह बहुत चाहता था।



पांडव

(अंग्रेजी 90 मिनट)

निर्माता-पेंटामीडिया ग्राफिक्स, **निर्देशक-**उषा गणेश, राजेश वेंकटेश बाबू, **संगीत-**इलियाराजा श्रीडी मॉडलिंग और मोशन कैप्चर तकनीक से युक्त एनीमेशन तकनीक का प्रयोग करके हकीकत से जान पड़ने वाले दृश्यों से 'महाभारत' को पर्दे पर उतारा गया है। मोशन कैप्चर वह तकनीक है जिसके तहत असली कलाकार विशेष पोशाक पहन कर अभिनय करता है तथा कैमरे के माध्यम से कलाकार की गतिविधियों को कैद कर विशेष कम्प्यूटरों में भेज दिया जाता है।

भारत के सबसे बड़े महाकाव्य महाभारत पर

आधारित इस फ़िल्म में धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष कौरवों व पांडवों के बीच महाभारत का युद्ध के रूप में दिखाया गया है। पांडु के पांच पुत्रों के सौ चचेरे भाई कौरव उनके लिए हमेशा परेशानी खड़ी करते रहते हैं। फ़िल्म की शुरुआत उनके जन्म के साथ होती है। कौरवों से पांडवों के झगड़े तथा पांडवों की कृष्ण से मित्रता होती है।

14 साल के बाद बहुत कष्ट सहने के बाद भी कई भाग्यों के फैसले के लिए कुरुक्षेत्र के मैदान पर युद्ध हुआ। पांडव राजकुमार अर्जुन अपने ही भाइयों की हत्या की बात सोच कर दुखी हो जाता है। तब अर्जुन के सारथि के रूप में इस युद्ध में भाग ले रहे श्रीकृष्ण अर्जुन को भगवत गीता का उपदेश देते हैं कि उसे सिर्फ कर्म करना चाहिए और फल ईश्वर पर छोड़ देना चाहिए।

PANDAVAS

English/90 min

Producer: Pentamedia Graphics;
Director: Usha Ganesh, Rajah, Venkatesh Babu; **Music:** Illayaraja

Brought to the big screen using state of the art animation technology involving 3-D modeling and motion capture techniques, the film brings the epic to life on screen with realistic depth and detail and mind-boggling battle scenes. Motion capture is the process of a real actor performing the motions or acting for a 3-D character wearing a special suit. As the

actor moves and performs, the action is captured by these cameras and input into sophisticated computers.

A classic tale adapted from one of India's greatest epic - The Mahabharata - the story depicts the eternal fight between good and evil, between the virtuous and the immoral through the story of the Pandava brothers and their war with the Kauravas. Their hundred-strong Kaurava cousins forever trouble the sons of Pandu, the five strong and honourable Pandava brothers. The film begins from their birth and training as youths with the Kauravas, following the pranks and petty quarrels, and the deception of the Kauravas. Through all their trials, they have for friend and counsel Krishna.

After 14 years in exile where they face innumerable hardships, the Pandavas return only to be faced with cataclysmic events that decided the fate of several dynasties - the battle of Kurukshetra. The battle is more than physical for the Pandava prince Arjuna who is drowned in sorrow at having to kill his own cousins. On the battlefield, Krishna who participates in the war as Arjuna's charioteer, preaches to him the Bhagwat Gita that teaches him that he has to do his duty on earth, leaving the results to God.



पुकार

(हिन्दी 170 मिनट)

निर्माता-सुरिन्दर कपूर, **निर्देशक**-राजकुमार संतोषी, **गीत**-मजरूह सुल्तानपुरी, जावेद अख्तर, **संगीत**-ए.आर. रहमान, **पात्र**-अनिल कपूर, माधुरी दीक्षित, नम्रता शिरोडकर, डैनी, फरीदा जलाल

कश्मीर में एक आतंकवादी चारों तरफ से भारतीय सेना द्वारा घेर लिया गया है। एक राजनीतिज्ञ मिश्रा आर्मी की चेतावनी के बावजूद जंगल में चला जाता है उसका अपहरण कर लिया जाता है और आतंकवादी उसकी जान के बदले में वापस जाने का रास्ता मांगते हैं। कर्नल हुसैन मेजर जयदेव को भेजते हैं जो मिश्रा को छुड़ा कर आतंकवादियों को पकड़ लेता है।

इसी बीच जयदेव के बचपन की दोस्त अंजली जो कि उससे प्यार करती है उससे जलने लगती है क्योंकि वह पूजा से प्यार करने लगता है। इस बात का फायदा उठाकर मिश्रा अंजली के द्वारा जयदेव के

घर से सीक्रेट कोडवर्ड का पता लगा लेता है जिससे आतंकवादी भाग जाते हैं। अंजली ने सोचा था कि उसके ऐसा करने से पूजा के पिता पूजा की शादी जयदेव के साथ नहीं करेंगे।

लेकिन ऐसा करने से जयदेव को एक गद्दार करार देते हुए उसका कोर्ट-मार्शल कर दिया जाता है और उसके पिता आत्महत्या कर लेते हैं। अपनी करनी पर अंजली पछताती है और वह हुसैन को सच बता देती है लेकिन हुसैन का गोलो लग जाती है और वह घायल हो जाता है। मरते समय हुसैन जयदेव को बताता है कि आतंकवादी 15 अगस्त के दिन लाल किले को उड़ाना चाहते हैं तथा प्रधानमंत्री को केवल वह और अंजली मिलकर बचा सकते हैं।

PUKAR

Hindi/170 min

Producer: Surinder Kapur; **Director:** Raj Kumar Santoshi; **Lyrics:** Majrooh

Sultanpuri, Javed Akhtar; **Music:** A. R. Rehman; **Cast:** Anil Kapur, Madhuri Dixit, Namrata Shirodkar, Danny Denzongpa, Farida Jalal, Om Puri, Kulbhushan Kharbanda, Girish Karnad, Shivaji Setam, Rohini Hatthangadi, Govind Namdeo, Anjan Srivastava. (special) Prabhu Deva
An international terrorist in Kashmir is surrounded on all sides by the Indian army. A politician, Mishra, goes to the forest despite the warnings by the army. He is kidnapped and the terrorist demands a free passage in return for the politician's life. Major Jaidev, sent by Colonel Hussain, frees the politician and captures the terrorist. Jaidev suspects Mishra is not as innocent as he seems.

Meanwhile, Jaidev's childhood friend Anjali who loves him is jealous when he falls for Pooja. Taking advantage of this, Mishra makes Anjali find the code word from the house of Jaidev, as a result of which the terrorist is freed. Anjali had expected that this would mean that Pooja's father would not agree to her marriage with Jaidev.

But the result is that Jaidev is branded a traitor and court-martialed, and his father commits suicide. Hurt by what she has done, Anjali tells the truth to Hussain. But Hussain is shot at and wounded. While dying, Hussain tells Jaidev that the terrorist means to blow up Red Fort on August 15. It is now upto Jaidev, and Anjali who has made up with him, to save the Prime Minister.



रिफ्यूजी

(हिन्दी 200 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-जे.पी. दत्ता, **गीत-**जावेद अख्तर, **संगीत-**अनु मलिक, **पात्र-**जैकी श्राफ, सुनील शेट्टी, अनुपम खेर, कुलभूषण खरबन्दा, रीना राय, सुदेश बेरी, अवतार गिल, पुनीत इस्सर, आशीष विद्यार्थी, शादाब खान, मुकेश तिवारी, आरिफ़ जकारिया, पद्मिनी कपिला, राजीव गोस्वामी एवं (नवोदिता) अभिषेक बच्चन और करीना कपूर

यह कहानी भारत पाकिस्तान सीमा पर कच्छ के रन में स्थित एक गांव की है जिसका एक हिस्सा विभाजन के समय पाकिस्तान चला गया था। भारत की तरफ के हिस्से में गांव का मुखिया जान मुहम्मद अपनी पत्नी डायना, बड़े बेटे रिफ्यूजी और छोटे बेटे शादाब के साथ रहता है।

रिफ्यूजी एक बिहारी मुस्लिम परिवार को पाकिस्तान जाने में मदद करने के लिए तैयार हो जाता है। इस परिवार में मुखिया मंसूर आलम उसकी मां, पत्नी उसकी बेटे नाजनीन हैं। बाद में उसकी मां मर जाती है। इस दौरान रिफ्यूजी और नाजनीन में प्यार हो जाता है। पाकिस्तानी रेंजर अशरफ का साथी रिफ्यूजी को आरडीएक्स विस्फोटक के साथ भारत भेज देता है। भारतीय सीमा सुरक्षा बल अधिकारी रघुवीर अशरफ से मिलता है। अशरफ बाद में मान लेता है कि उसका देश भारत में सीमापार आतंकवाद भड़का रहता है। और वे दोनों फैसला करते हैं कि दोनों प्यार करने वालों को मिला दिया जाए।

REFUGEE

Hindi/200 min

Producer-Director: J. P. Dutta; **Lyrics:** Javed Akhtar; **Music:** Anu Malik; **Cast:** Jackie Shroff, Sunil Shetty, Anupam Kher, Kulbhusan Kharbanda, Reena Roy, Sudesh Berry, Avtar Gill, Punit Issar, Ashish Vidyarthi, Shadab Khan, Mukesh Tiwari, Arif Zakaria, Padmini Kapila, Rajeev Goswami, and (introducing) Abhishek Bachchan and Kareena Kapoor

The story is based in a village in the Rann of Kutch on the border, a part of which went to Pakistan at the time of Partition. On the Indian side lives Jaan Mohammed, the village chief, with his wife Aamna, elder son Refugee and younger son Shadaab. He is named Refugee because he was found on the border by Jaan. Expectedly, some persons try to use the simpleton Refugee to smuggle arms into India.

Refugee agrees to help a Bihari Muslim family to go to Pakistan. It comprises of its head Mansoor Alam, his mother, his wife, and daughter Nazneen. Later the mother dies. During the journey, Nazneen and Refugee develop love for each other. Pakistani Officer Ashraf's assistant sends Refugee to India with some RDX explosives. The Indian border officer Raghubir meets Ashraf decide to help the two young lovers to unite.



सायाहन्नम

(मलयालम 89 मिनट)

निर्माता-एम.एस. नज़ीर, निर्देशक-आर. सरत
गीत-प्रभा वर्मा, संगीत-पेरुम्बवूर जी.
रविन्द्रनाथ, एम. जयचन्द्रन, छायांकन-एम.जे.
राधाकृष्णन, पात्र-ओ. माधवन, इब्राहिम कुट्टी,
आनंद, गोमती माधवन, एल्कस कदाविल,
जोमोल, रेम्या नम्बीसन, शारी, जिशु

पूर्व मुख्यमंत्री रहा के.के. माधवन केरल की राजनीति में एक जाना माना नाम है। के.के. सक्रिय राजनीति से संन्यास ले चुका है अपनी पत्नी भारती के साथ रहता है। उनके साथ उसका बेटा सिद्धार्थन और बहू शालिनी अपने बच्चों

अमला (12 साल) एवं रित्विक (15 साल) के साथ रहती है। बच्चे इण्टरनेट की दुनिया में खोए रहते हैं।

के.के. का बेटा सिद्धार्थन मुंबई में एक परमाणु वैज्ञानिक है। इससे के.के. नाखुश है।

जब भारत परमाणु शक्ति बनाने का निश्चय करता है। के.के. अखबारों के जरिए प्रतिक्रिया करता है लेकिन पार्टी के दबाव के कारण अपने विचारों को उसे वापस लेना पड़ता है। वह बिल्कुल अकेला पड़ जाता है उसका बेटा और पार्टी दोनों बम बनाने के समर्थक हैं। लेकिन उसे लगता है कि उसका आदर्शवादी जीवन अब खत्म हो गया। उसकी मृत्यु हो जाती है और अब वह रित्विक के कम्प्यूटर की एक बेवसाइट बन कर रह जाता है।

SAYAHNNAM

Malayalam/89min

Producer: M.S. Nazeer; **Director:** R. Sarath; **Lyrics:** Prabha Varma; **Music:** Perumbavoor G. Ravindranath, M. Jayachandran; **Camera:** M.J. Radhakrishnan; **Cast:** O. Madhavan, Ibrahim Kutty, Anand, Gomathi Mahadevan, Alex Kadavil, Jomol, Remya Nambesan, Shaari, Jishnu

KK Madhavan, a respected figure in Kerala politics and a former Chief Minister who has retired from active politics, lives with wife Bharathy, elder daughter-in-law Shalini who wishes she could spend more time with her husband Siddharthan, and grandchildren Amala, 12, who loves KK and Ritwick, 15, who remains in a world of his own.

KK's elder son Siddharthan is a nuclear scientist working in Mumbai, and younger son Vinayan is a musician. KK had always wanted Siddharthan to be a scientist but is unhappy that his son is working to develop nuclear weapons.

KK is forced by his party to react his views when India decides to go nuclear. But he feels his life as an idealist is over, and is unable to bear all this.



शयनम

(मलयालम 96 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-एम.पी. सुकुमारन नायर,
संगीत-जैरी अमलदेव, छायांकन-के.यू.
मोहनन, पात्र-बाबू एण्टोनी, कल्पना, इन्द्रन्स,
के.जी. देवकी अम्मा

कन्निरिस्तान के पास वाली जमीन साफ की जा रही है क्योंकि कन्निरिस्तान में जगह की कमी है।

यह पता चलता है कि एक असामाजिक तत्व थोमा की मृत्यु एक साल पहले हुई थी लेकिन उसका शरीर नष्ट नहीं हुआ है। यह खबर तुरंत फैल जाती है और इसे देखने लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। थोमा की दोनों पत्नियां मेरी और मरियम चाहती हैं कि थोमा को संतों की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। वे थोमा के शव पर अपना दावा जताती हैं। तनाव खत्म करने के लिए विकर

कहता है कि शव को दोबारा चर्च के सम्मान सहित दफनाना चाहिए। लेकिन दोनों महिलाएं इसे संत घोषित किए जाने से कम पर राजी नहीं हैं।

विकर चर्च की सलाहकार समिति को विचार के लिए बुलाता है। समिति के सदस्य बताते हैं कि थोमा ने कैसे दस कमाण्डों को मारा था। लेकिन मेरी अपनी कहानियां सुनाना शुरू कर देती है। इससे समिति कोई निर्णय नहीं कर पाती। विकर मेरी को बाहर निकाल देता है। मेरी जादू करने की बात कह कर बाहर निकल जाती है। कन्निरिस्तान में उत्सव का माहौल होता है, बहुत से लोग परिस्थिति का फायदा उठा कर अपने स्वार्थ सिद्ध करने में लग जाते हैं। तभी बारिश होती है और कई दिनों तक चलती है।

SAYANAM

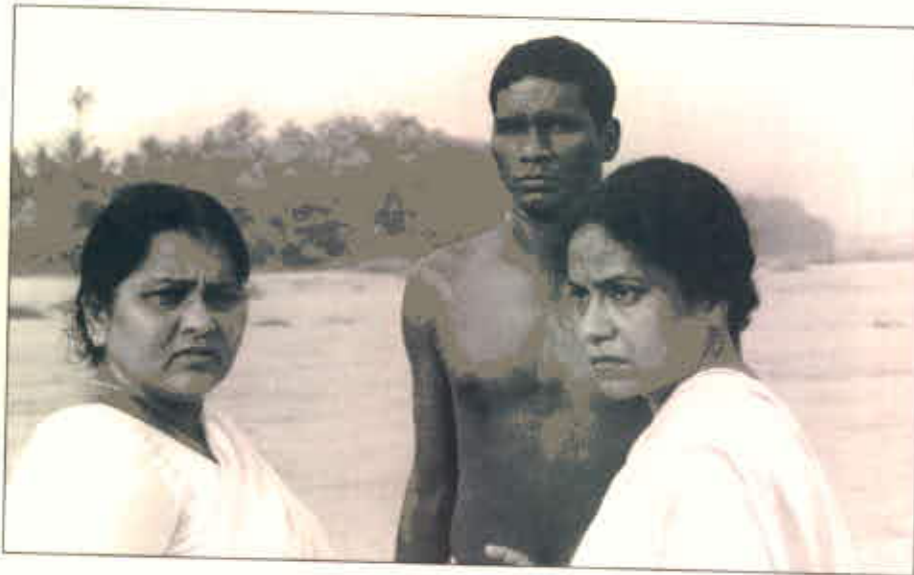
Malayalam/96min

Producer-Director: M.P. Sukumaran Nair;
Music: Jerry Amaldev; **Camera:** K.U. Mohanan; **Cast:** Babu Antony, Kalpana, Indrans, K.G. Devaky Amma

The vicar of the local church wants to clear the land adjoining the cemetery, which is short of space.

It is noticed during the digging that the coffin of Thoma, an antisocial who was buried one year earlier, has not decayed. The news spreads like wildfire and people pour in to witness this. Mary and Mariyam, the two wives of Thoma want that Thoma should be elevated to the order of Saints. To diffuse tension, the Vicar proposes burial of the body of Thoma for a second time with church honours. But the wives are in no mood to accept anything less than sainthood.

The Vicar calls for a church advisory committee meeting to discuss the matter. Each of the members narrates a story from their experience about how Thoma violated the Ten Commandments one by one. But Mary barges into the meeting and starts telling her stories. As a result, the committee is unable to come to a decision. The Vicar asks her to leave the hall immediately. Mary claims she will perform magic and leaves the hall. By now the graveyard becomes a festival ground and small groups start exploiting the situation to satisfy vested interests. Finally rain comes, and it rains for days.



शान्तम

(मलयालम 95 मिनट)

निर्माता-पी.वी. गंगाधरन; **निर्देशक**-जयराज;
कैमरा-एस. रवि वर्मन; **गीत-संगीत**-कैथाप्रम
डी नम्बूदरी; **पात्र**-आई.एम. विजयन, सीमा
विश्वास, के.पी.एस. ललिता, लीना कुमार,
कलामण्डलम गोपी, अतुल वीनू, नारायणी,
मदाम्बु कुन्नुकुट्टन, एम.जी. शशि।

राजनैतिक कार्यकर्ता वेलायुद्धन अपने मित्र राघवन को अपनी पार्टी के आदेश पर मार देता है। मारे गए तथा मारने वाले दोनों ही लड़कों की माँ भारत पुन्हा नदी के किनारे स्थित तिरूनावाया मन्दिर अन्तिम संस्कार के लिए पहुँचती हैं।

इस बाँच मारे गए लड़के की पार्टी के लोग उसकी मौत का बदला लेने का निश्चय करते हैं। मन्दिर का पुजारी जानना चाहता है कि आखिर

किसका दुःख बड़ा होगा-नारायणी का जिसका लड़का मारा गया या कार्तीयायनी का जिसका लड़का किसी भी समय मारा जाने वाला है?

इस पूरे मामले में वहाँ पर मौजूद एक पुरुष तिरूनावाया में नारायणी से मिलता है और उसे समझाता है कि अगर वह मारने वाले लड़के की माँ कार्तीयायनी को माफ कर दे तो पूरी दुनिया को उसके इस कदम से प्रेम और शांति का संदेश मिलेगा। नारायणी को लगता है कि वेलायुद्धन वहाँ अपनी भूल का प्रायश्चित्त करने आया है।

दोनों माताएँ मिलकर खून के प्यासे नवयुवक को समझाती हैं और उसके दिल से बदले की भावना निकाल देती हैं। उनकी पूरी दुनिया के नाम भावनात्मक अपील होती है शांति की - ऐसी शांति जो तूफान भरे हृदय में पहुँचकर उसे भी शांत कर दे।

SHANTHAM

Malayalam/95min

Producer: P.V. Gangadharan; **Director:** Jayaraj; **Camera:** S. Ravi Varman; **Lyrics-Music:** Kaithapram, D. Namboodiri; **Cast:** I.M. Vijayan, Seema Biswas, KPAC Lalitha, Lena Kumar, Kalamandalam Gopi, Athul Vinu, Narayani, Madambu Kunjukuttan, M.G. Sasi

Two young men are slowly drawn into rival political movements. Velayudhan is commanded to kill Raghavan in the name of the cause. The gruesome killing takes the toll of both their families and the mothers of both the murdered boy and the murderer arrive at the Thirunavaya temple on the banks of the river Bharatha Puzha where the bereaved gather to perform the funeral rites.

Meanwhile, the members of the murdered boy's party want to avenge his death. The priest poses a difficult question-who grieves more: Narayani, the mother of the son who died so cruelly, or Karthiyayani, the mother of the son who is going to be killed at any moment?

Observer and participant in this drama, 'he', the nameless man whom Narayani encounters, convinces her that she, and through her the whole world, can find calmness in the midst of such suffering if she forgives Karthiyayani for being the mother of her son's murderer. She realizes that he too has come to Thirunavaya to try and atone for the wrong he has done.



SNIP!

English/Hindi/110 min

Producer-Director: Sunhil Sippy; **Music:** Ashutosh Pathak, Dhruv Ghanekar. **Cast:** Sophiya Haque, Sohrab Ardeshir, Saurabh Shukla, Makrand Deshpande, Nikhil Chinappa, Archana Puran Singh, Nadira, Vekeana Dhillon

Beautician Tara is summoned to the house of former film star Monty Kapoor who wants a completely new look. While cutting his hair, she snips his ear with her scissors. Monty is so shocked after seeing his blood that he dies and she is terrified the police will be after her.

This is seen by dreaded criminal Munna who was sheltered in the flat by Monty after he killed Tafazul Sheikh alias Tofu who entrusted him with all his savings, and the police and rival don Vellu are after him. Munna takes shelter in Tara's one-room apartment in return for his silence. Abdul, the egg deliveryman, is told by Munna to come to Tara's apartment to get the money Monty owed him. Poor Tara has to spend the night with Johnny - her boyfriend - as she cannot spend it in her own flat where Munna is sleeping.

Munna feels guilty for his treatment of Tara and summons her home. But Monty's body is discovered. All this leads to confusion.

स्निप!

(अंग्रेजी / हिन्दी 110 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-सुनील सिप्पा; **संगीत-**आशुतोष पाठक, ध्रुव घानेकर; **पात्र-**सोफिया हाक, सोहराब आर्देशिर, सौरभ शुक्ला, मकरन्द देशपाण्डे, निखिल चिनप्पा, अर्चना पूरन सिंह, नादीरा, वेकिआना डिल्लन।

ब्यूटी सैलून में काम करने वाली तारा पूर्व फ़िल्म कलाकार मोंटी कपूर के यहां जाती है क्योंकि उसे अच्छा दिखना है। उसके बाल काटते समय तारा से मोंटी का कान कट जाता है और वह अपना खून देखते ही मर जाता है। तारा डर जाती है कि अब पुलिस उसे नहीं छोड़ेगी।

मोंटी के फ्लैट में ही छुपा खतरनाक अपराधी-मुन्ना यह सब देख लेता है। मुन्ना ने तफज्जुल

शेख उर्फ टोफू को मार दिया है और इसलिए वह छुप रहा है। मुन्ना चुप रहने की कीमत के रूप में तारा के घर में रहने लगता है। टोफू अण्डा लाने वाले अब्दुल को अपने बकाया पैसे तारा के घर से लेने की सलाह देता है। बेचारी तारा को अपने प्रिय दोस्त जॉनी के साथ रात बितानी पड़ जाती है क्योंकि मुन्ना उसके फ्लैट में शराब पीकर खरोंटे ले रहा था।

बाद में मुन्ना को अपने व्यवहार पर दुःख होता है और वह उसे घर बुला लेता है। उसी दौरान मोंटी का शव बरामद होता है और जॉनी तारा के पास भागता है। उधर अब्दुल वेल्लू के दिल का सदस्य बन जाता है और वह भी मुन्ना के पीछे भी पड़ जाता है। इन सबसे काफी गड़बड़ी पैदा हो जाती है।



UTSAB

Bengali/124min

Producer: Tapan Biswas, Sutapa Ghosh; **Director:** Rituparno Ghosh; **Lyrics:** Rabindranath Tagore; **Music:** Debajyoti Mishra; **Camera:** Avik Mukhopadhyay; **Cast:** Prosenjit Chatterjee, Rituparna Sengupta, Ratul Shankar Ghosh, Mamata Shankar, Arpita Pal, Madhabi Mukherjee, Binit Ranjan Moitra, Pradeep Mukherjee, Alakananda RoyA

Bhagbati stays alone in a stately home a few hours' drive from Calcutta as all her children are away, but they always get together during the Durga Puja festival. This year's Puja is special as Bhagbati's younger daughter Keya is coming for the first time since her marriage three years ago. The story is related through Joy, the college-going amateur moviemaker son of elder daughter Parul.

But there is tension as a long-alienated cousin has made a tempting offer to buy up the house, throwing up issues that are considered taboo.

The alcoholism of Keya's husband Arun, a disillusioned political activist and failed artist, is another point of tension. The cousins Joy and Shampa are close, but Parul wonders if history will repeat itself. Asit the younger son has problems on the job front but he does not want his wife to know anything about it. Will Puja pass off peacefully?

उत्सव

(बंगाली 124 मिनट)

निर्माता-तपन विश्वास, सुतपा घोष, **निर्देशक-**रितुपर्णो घोष, **गीत-**रवीन्द्र नाथ टैगोर, **संगीत-**देवज्योति मिश्रा, **कैमरा-**अविक मुखोपाध्याय, **पात्र-प्रसेनजित चटर्जी,** रितुपर्ण सेनगुप्ता, रातुल शंकर घोष, ममता शंकर, अर्पिता पाल, माधवी मुखर्जी, विनीत रंजन मोइत्रा, प्रदीप मुखर्जी, अलकान्दा रॉय

कलकत्ता से कुछ दूर भगवती एक बड़े से घर में अकेली रहती है। उसके सारे बच्चे उससे दूर रहते हैं पर सब दुर्गा पूजा के मौके पर इकट्ठे होते हैं। इस बार की पूजा उस घर के लिए खास थी क्योंकि भगवती की छोटी बेटी कया तीन साल पहले हुई शादी के बाद पहली बार घर आ रही थी। कहानी जाँय से भी जुड़ी हुई है। जाँय कॉलेज

जाने वाला, गैर व्यावसायिक फिल्म बनाने वाला और सबसे बड़ी लड़की पारुल का लड़का है।

घर में तनाव है क्योंकि काफी समय से अलग रह रहा चचेरा भाई घर खरीदने की कोशिश कर रहा है और इससे वे मुद्दे फिर उठ खड़े होते हैं जिन पर बातचीत नहीं की जा रही थी।

पहले किसी समय राजनीति से जुड़े रहे और असफल कलाकार कया के पति अरुण की शराब पीने की आदत एक और परेशानी खड़ी करती है। दोनो चचेरे भाई जाँय और शाम्पा काफी निकट हैं लेकिन पारुल सोचती है कि क्या इतिहास दोहराएगा? छोटे लड़के की नौकरी में समस्याएं आती हैं लेकिन वह अपनी पत्नी को इस बारे में कुछ भी बताना नहीं चाहता। क्या पूजा शान्तिपूर्वक बीतेगी?



VANATHAI POLA

Tamil/152min

Producer: V. Ravichanran; **Director:** Vikraman; **Camera:** Arthur A Wilson; **Lyrics:** Viveka; **Music:** S.A. Rajkumar; **Cast:** Vijayakanth, Meena, Prabhudeva, Anju Aravind, Livingstone, Kousalya

The young Vellaichamy is looking after his family consisting of a grandmother and three young brothers Muthu, Shanmugam and Selvam, still in school. Vellaichamy refuses to marry Radha who insisted on sending his brothers to boarding school, and so loses a partnership with her brother Dharmalingam.

Sundaram, a rich industrialist in Chennai, rejects Muthu's match for his daughter Gowri, as the boy is a cook. Muthu gets a job as a cook in Sundaram's house. Gowri later recognizes Muthu and insists on marrying him. Shanmugam - now a police officer - gets married to Sumathi, daughter of Vellaichamy's friend. Shanmugam resigns his job on being asked to arrest Vellaichamy for a crime he has not committed.

Dharmalingam agrees to a marriage between his daughter Nandini and Vellaichamy's youngest brother Selvam who is a doctor, but says Vellaichamy will not take part in the marriage ceremony. But both Selvam and Nandini look for him desperately as the marriage is on. A man with whom Nandini's marriage had been fixed earlier kidnaps her. Muthu and others rescue her, and also find Vellaichamy in a train.

वानतईपोला

(तमिल 152 मिनट)

निर्माता-वी. रविचन्द्रन; **निर्देशक-**विक्रमन; **गीत-**विवेका; **संगीत-**एस.ए. राजकुमार; **कैमरा-**आर्थर ए विल्सन; **पात्र-**विजयकान्त, मोना, प्रभुदेवा, अन्जू अरविन्द, लिविंगस्टोन, कौशल्या

युवा वेल्लाइचैमी अपनी दादी और स्कूल जाने वाले तीन छोटे भाइयों मुत्थु, षण्मुगम और सेल्वम को देखभाल करता है। वेल्लाइचैमी के सम्बन्ध धर्मलिंगम से उस समय टूट जाते हैं जबकि वह उसकी बहन राधा से विवाह करने से मना कर देता है क्योंकि वह उसके तीनों भाइयों को बोर्डिंग स्कूल में भेजने के लिए कहती है।

धनी उद्योगपति सुन्दरम् अपनी लड़की गौरी से मुत्थु के विवाह का प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है।

क्योंकि लड़का बावर्ची है। मुत्थु को सुन्दरम् के घर में खानसामे नौकरी मिलती है जहां उसे गौरी पहचान लेती है और शादी की हठ करती है। अब एक पुलिस अधिकारी बन चुके षण्मुगम को शादी वेल्लाइचैमी के एक दोस्त की लड़की सुमति से हो जाती है। षण्मुगम अपने भाई वेल्लाइचैमी को झूठे इल्जाम में गिरफ्तार करने से इनकार कर देता है और इस्तीफा दे देता है।

धर्मलिंगम अपनी लड़की नन्दिनी का विवाह वेल्लाइचैमी के सबसे छोटे भाई सेल्वम से करने के लिए मान जाता है बशर्ते वेल्लाइचैमी शादी में हिस्सा न ले। शादी में सेल्वम और नन्दिनी दोनों ही वेल्लाइचैमी का बेसब्री से इन्तजार करते हैं। एक व्यक्ति जिससे नन्दिनी की शादी पहले तय हुई थी उसका अपहरण कर लेता है। मुत्थु और अन्य लोग उसे बचाते हैं वेल्लाइचैमी को ट्रेन में पाते हैं।



वेत्रीकोडि कट्टु

(तमिल 152 मिनट)

निर्माता-डी. पाण्डियन, निर्देशक-चेरन,
गीत-वैरामुत्तु, संगीत-देवा, कैमरा-प्रियन,
पात्र-पार्थिवन, मुल्ली, मीना, मालविका, वी.एम.टी,
चाली, मनोरमा

यह फिल्म युवकों को विदेश जाने की बजाए अपने ही देश में काम करने की सलाह देती है। एक धनी व्यक्ति को लड़की वल्ली अपने मा-बाप की इच्छा के विरुद्ध एक गरीब परिवार के लड़के मुत्तु से शादी कर लेती है। वल्ली के दबाव डालने पर मुत्तु काफ़ी पैसा जुटाकर दुबई में नौकरी पाने की लालसा में एक एजेंट से मिलने चैनई जाता है।

उसी को तरह एक और गरीब व्यक्ति शेखर भी उस एजेंट के पास आता है। लेकिन वह एजेंट अबुबकर

पैसे के साथ भाग जाता है। लॉज और खाने का पैसा नहीं चुका पाने के कारण पुलिस मुत्तु, शेखर और पलानी को गिरफ्तार कर लेती है।

शेखर और मुत्तु दोस्त बन जाते हैं और एक दूसरे का घर ठीक करने का निश्चय करते हैं। इसी मुताबिक शेखर वल्ली के पास जाता है और यह बताता है कि मुत्तु दुबई में है और ने उसे घर आने के लिए कहा था, उधर मुत्तु भी शेखर के घर जाकर ऐसा ही करता है। शेखर वहां मुत्तु की पत्नी वल्ली, उसकी दोनों बहनों और उसके पिता का ध्यान रखता है। वह वल्ली को मदद से एक छोटा सा रेस्तरां भी खोल लेता है। उधर शेखर के घर पहुंचकर मुत्तु उन्हें बेहद गरीबी की हालत में पाता है। वल्ली के गर्भवती होने पर शेखर पर आरोप लगने लगते हैं। वह कौयम्बटूर में वल्ली के ऑपरेशन के बाद ही जाता है।

VETRI KODI KAATU

Tamil/152 min

Producer: D. Pandian; **Director:** Cheran;
Lyrics: Vairamuthu; **Music:** Deva;
Camera: Priyan; **Cast:** Parthipan, Murali,
Meena, Malawika, V.M.T. Charlie,
Manorama

The film seeks to advise young men to invest in their own country instead of going abroad. Valli, a rich man's daughter, marries Muthu who is from a poor family against her parents wish. Pestered by her, Muthu goes to Chennai to meet the Agent with huge money in order to get a job in Dubai.

Like him Sekar who is from a poor family comes to the same Agent with money. But, Abubucker, the Agent who took the money absconds. Now Muthu, Sekar and Palani another poor young man who also lost his money are arrested by the police for not paying for the lodge and food given to them.

Sekar and Muthu become friends and work out a plan to set each other's house in order. Accordingly, Sekar goes to Valli, telling her that her husband in Dubai told him to come to the house, while Muthu does the same in Sekar's house. Sekar has to take care of Muthu's wife Valli, his two sisters and his father. He sets up a small restaurant and Valli also helps him. On reaching Sekar's village Muthu finds the poor status of the family. But when Valli is found to be pregnant, Sekar is accused.



ZUBEIDA

Hindi/Urdu/169 min

Producer: Farooq Rattonsej; **Director:** Shyam Benegal; **Lyrics:** Javed Akhtar; **Music:** A. R. Rehman; **Cast:** Rekha, Karisma Kapoor, Manoj Bajpai, Amrith Puri, Shakti Kapoor, Surekha Sikri-Rege, S. M. Zaheer, Rajit Kapur, Harish Patel, Lilette Dubey, Seema Bhargava, Smriti Mishra, Rahul Maharya

Riyaz is a journalist brought up by his maternal grandmother Faiyazi Begum. Searching for the real truth about his mother Zubeida who had become a star with just one film in 1952, Zubeida annoyed her father Suleman Seth when she acted in the film 'Banjara Dancer' without his permission. Later, she was forcibly married to Mehboob, son of Seth's friend Sajid Masud who had come from Pakistan. In time, Zubeida gave birth to Riyaz. But she was divorced when Sajid wanted to go back to Pakistan as he was not happy in India.

Zubeida then married the already married Maharaja Vijayendra Singh of Fatehpur, and was renamed Meenakshi Devi. Vijayendra stood for elections with his first wife Mandira Devi by his side. All this - and the fact that her brother-in-law Rahul was making advances-made Zubeida very angry and she insisted on going with Vijayendra-much to his annoyance-to Delhi, though Mandira was all ready to leave. The plane crashed and they were both killed.

जुबैदा

(हिन्दी/उर्दू 169 मिनट)

निर्माता-फारूक रतोनसे, **निर्देशक-**श्याम बेनेगल, **गीतकार-**जावेद अख्तर, **संगीत-**ए.आर. रहमान, **पात्र-रेखा,** करिश्मा कपूर, मनोज बाजपेई, अमरीश पुरी, शक्ति कपूर, सुरेखा सिकरी, एस.एम. जहीर, रजत कपूर, हरीश पटेल, लिलैट दुबे, सीमा भार्गव, स्मृति मिश्रा, राहुल माहाराय

रियाज एक पत्रकार है जिसे उसकी नानी फ़ैयाजी बेगम पालती-पोसती है। 1952 में एक ही फिल्म से स्टार बन गई अपनी मा जुबैदा के बारे में सच्चाई जानने के दौरान उसे पता चलता है कि बिना आज्ञा 'बन्जारा डांसर' फिल्म में अभिनय करने से उसके पिता सुलेमान सेठ नाराज हो गये थे। बाद में सेठ के पाकिस्तान से आए मित्र

साजिद मसूद के पुत्र महबूब से जुबैदा की जबरदस्ती शादी कर दी गई। इस बीच जुबैदा ने रियाज को जन्म दिया, लेकिन उनका तलाक हो गया जब साजिद ने पाकिस्तान वापिस जाने की इच्छा व्यक्त की।

इसके बाद जुबैदा का विवाह पहले से ही विवाहित फतेहपुर के महाराजा विजयेन्द्र सिंह से हो गया और उसे नया नाम मोनाक्षी देवी दिया गया। विजयेन्द्र चुनाव के लिए खड़ा हुआ और उसकी पहली पत्नी मन्दिरा देवी ने उसके साथ इसमें काम किया। इन सबसे और देवर राहुल की बुरी नीयत के चलते जुबैदा गुस्सा हो गई और दिल्ली जाने के लिए कहने लगी, जबकि मन्दिरा जाने को तैयार थी। हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया और दोनों मारे गये।

कथासार : Synopses :
गैर कथाचित्र Non-Feature Films



ए मेमोरी आफ दी सी

(अंग्रेज़ी/35 एम/40 मिनट)

निर्माता-रोबिन मजुमदार; निर्देशक-लीगिया मैथ्यूज़

यह फिल्म मालाबार के तटीय इतिहास को दर्शाता है। इस फिल्म का उद्देश्य यह दिखाना है कि किस प्रकार समुद्रों के द्वारा मानवता और संस्कृति को आकृति प्रदान की गई, समुद्री लड़ाइयों के बारे में अब भी चर्चा क्यों हो रही है। कालीकट का मसाला व्यवसाय यह दिखाता है कि इसने अपने साथ कैसे लोगों को एकीकृत कर यहां की संस्कृति को पुनर्परिभाषित कर दिया है। सैकड़ों वर्ष पहले लकड़ी की बनी 'हाऊस बोट' का

निर्माण पूर्णतः स्वदेशी बूढ़े गिरी की कला पर आधारित है। इन हाऊस बोटों के कारण ही हमारा मसाला व्यापार संभव हो सका था। कालिकट के 'जमोरिन' वास्कोडिगामा के यहां पहुंचने के समय अपने परिवार की भूमिका के बारे में चर्चा करते हैं। कुंजली मरक्कर्स का इतिहास रहा है कि इसने मालाबार को 80 वर्षों तक पुर्तगालियों के चंगुल से बचाया था। इसके लिए उन्होंने छापामार युद्ध का स्वदेशी तरीका अपनाया था। एक बूढ़े नाव-निर्माता का कहना है कि 'हाऊस बोटों' के निर्माण की कला अब हमेशा के लिए समाप्त होने के करीब है।

A MEMORY OF THE SEA

English/35 m/40 min

Producer : Roabin Mazumdar;

Director : Lygia Mathews

This film looks at the Malabar Coast's long maritime history to show how the sea has shaped humanity and civilizations, why seabattles are still discussed and why some native Indian skills evolved over generations will be lost if more attention is not paid to this heritage. Calicut's spice trade shows how it brought with it a people and a culture that re-defined the region. The centuries old wooden dhow-building industry, which made the spice trade possible, is based on indigenously evolved carpentry skills passed on from father to son by the master carpenters of Beypore. The Zamorin of Calicut talks of the crucial role his family played in this sea-front kingdom when the first colonialist, Vasco da Gama, arrived. Then there is the legend of the Kunjali Marakkars who defended the Malabar from Portuguese cannon-power for almost 80 years using only indigenous methods of guerrilla warfare. An old boat-builder talks about the building of dhows and how this carpentry heritage is about to be lost forever.

अजीब घर

(हिन्दी/एनिमेशन/35 एमएम/18 मिनट)

निर्माता- भारतीय बालचित्र समिति;
निर्देशक- राजेश अग्रवाल; गीत- योगेश;
संगीत- उषा खन्ना; कैमरा- भास्कर सारनाईक

लखी, मोती और नाथू तीन मछुआरे हैं जो अपनी पत्नियों के साथ एक बड़े परिवार की तरह रहते हैं। उनकी केवल एक शिकायत है कि उन लोगों की झोपड़ी छोटी है। एक दिन वे लोग एक झेल को अपनी ओर बढ़ते देखते हैं और झेल को अपनी तरफ बढ़ने से रोकने के लिए अपना सारा भोजन समुद्र में फेंक देते हैं। अचानक तूफान

उठता है और झेल उन लोगों को अपने पेट में छिप जाने की सलाह देती है। उनका पेट करीब-करीब एक कंदरे की तरह है। तूफान से सुरक्षित तीनों दोस्त भोजन पर टूट पड़ते हैं और नाचने, गाने लगते हैं। लेकिन इससे झेल को तकलीफ महसूस होती है और सभी को पेट से बाहर फेंक देती है।

AJEEB GHAR

Hindi/Animation/35mm/18min

Producer: Children's Film Society, India;
Director: Rajesh Aggarwal; **Camera:**
Bhaskar Sarnaik; **Lyrics:** Yogesh; **Music:**
Usha Khanna

Lakhi, Moti and Nathu are three fishermen who with their wives live like one big happy family. Their only complaint is that their hut is small. Out at sea one day they see a huge whale closing in on them. So they throw all their food into the sea to keep the whale away. Suddenly, a storm starts and the whale suggests they hide inside his stomach. The stomach is almost like a huge tunnel. Safe from the storm, the three friends feast on the food and dance and sing. But that makes the whale uncomfortable and it throws everyone out.

अक्कारेनिन्नु

(मलयालम/35 एमएम/65 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-टी. सुनील कुमार

अरब के रेगिस्तान में घटक रहा रफी जब घर नहीं पहुंचता है तो उसके परिजन उसके बारे में जांच पड़ताल शुरू कर देते हैं। वे लोग रफी को ढूँढ निकालते हैं लेकिन वह एड्स से पीड़ित होता है। यह सूचना गांव में जंगल की आग की तरह फैल जाती है और गांववासी रफी के गांव में आने का विरोध करते हैं। लोगों का मानना है कि उसे गांव में आने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। जब वह पहुंचता है तो वह अपने घर जाने में असमर्थ हो जाता है। कोई भी उसे मदद नहीं करता। लेकिन स्कूल शिक्षक वेनुमास उसे अपने पास रख लेते हैं। जब गांववासी इस बात पर क्रुद्ध हो जाते हैं तो वेनुमास लोगों को 'एचआईवी' के तथ्यों की



जानकारी देते हैं। उनके इस प्रयास से गांव के लोग रफी को अपने घर जाने की अनुमति दे देते हैं।

AKKARENINNU

Malayalam/35 mm/65 min

Producer-Director: T. Sunil Kumar;

When Rafi failed to reach home after years

of toiling in the Arabian deserts, his family members started making enquiries. They discovered Rafi suffers from Acquired Immuno-Deficiency Syndrome (AIDS). The news spreads like wildfire and people are opposed to Rafi living in the village, deciding he should not be allowed to come. When he arrives, he is unable to go to his house and no one helps him. But schoolteacher Venumash gives him shelter. When the villagers show their anger, Venumash explains facts about HIV to the people. Because of his efforts, the villagers allow Rafi to go back to his house.

बालगंधर्व

(मराठी/35 एमएम/35 मिनट)

निर्देशक-हेमन्ती बनर्जी; **कास्ट**-चारुदत्त

यह फिल्म थियेटर के महान पुरुष नारायण श्रीपद राजहंस के जीवनवृत्त पर आधारित है। श्री राजहंस का जन्म वर्ष 1989 में पुणे में हुआ था। यह फिल्म उनकी पुरानी तस्वीरें एवं फिल्म क्लिपों को चित्रित करता है। अस्सी वर्षीया गायिका और अपने जमाने की अदाकारा ज्योत्सना भोले, थिएटर और फिल्म एक्टर मोहन आगासे और लेखिका सुलभा तर्निकार जैसे लोगों ने बालगंधर्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। महिलाओं की भूमिका करते वक्त उनके सौंदर्य और उनकी महिमाका बखान इस फिल्म की देन है। इस फिल्म में यह भी बताया गया है कि उनके प्रशंसक किस प्रकार पुरुषों की भूमिका में उन्हें नापसंद किया करते थे। इस फिल्म में उनके गानों के सांगश भी प्रस्तुत किए गए हैं। डॉ. आगासे अर्द्ध-नारीश्वर के भारतीय सिद्धांत के बारे में बताते



हैं और बालगंधर्व इसका पूर्ण उदाहरण है। थिएटर के इस बादशाह ने अपने पहनावे, आमूषणों और व्यापक हेयर स्टाइल के साथ महाराष्ट्र में नाट्य संगीत के क्षेत्र में तीन दशकों तक एकछत्र आधिपत्य रखा।

BALGANDHARVA

Marathi/35 mm/35 min

Director: Haimanti Banerjee; **Cast:** Charudutt

This is a biographical film about the theatre legend, who was born in Pune in 1898 and given the name Narayan Sreepad Rajhans. The film shows his old photographs and film clips. Several people like the octogenarian singer and actress of yesteryears Jyotsna Bhole, theatre and film actor Mohan Agashe and writer Sulabha Ternikar give their views about Balgandharva. The film tells about his grace and beauty when enacting roles of women and how his fans rejected him in the roles of men. The film also has extracts of his songs. Dr. Agashe speaks about the enchanting Indian concept of ardhanareshwar and how Balgandharva truly epitomized it and shows Prabhat Studio where Balgandharva worked. Three decades of Natya Sangeet in Maharashtra had been completely captured by this king of theatre with his sparkling costumes, ornaments, sets, and elaborate hairstyles.

भोर

(बंगाली/35 एमएम/31 मिनट)

निर्माता-सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट; **निर्देशक** - रितुबरना चुदगर
मुकम्मल गरीबी और यातनाओं के बीच रहकर दो भाई-बहन अपने खुशी के क्षणों को याद करते हैं और वे लोग उस पुराने मकान में पहुंचते हैं जहां वे रहते थे लेकिन वहां आजकल एक बूढ़ा आदमी रहता है। वह उन दोनों को वहां एक रात बिताने की अनुमति देता है। वे लोग केवल अपने खुशी के क्षणों को याद करने वहां पहुंचे हैं, लेकिन भाग्य में कुछ और ही लिखा था।



BHOR

Bengali/35 mm/31 min

Producer: Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata; **Director:**

Rithubhama Chudgar

Living in abject poverty and humiliation in an unfriendly city, a brother and sister recall the days when they were happy and contended. This takes them to the old house in which they lived in the suburbs which is now deserted except for one old man who allows them to spend one night there. They went there only to recall happy memories, but the past has something else in store.

देवनर्तकन

(मलयालम/35 एमएम/30 मिनट)

निर्माता-केरल राज्य चलचित्र अकादमी;

निर्देशक-सुधीश गोपालाकृष्णन

यह फिल्म उत्तरी केरल धार्मिक कला 'थेय्यम' के जाने माने कलाकार कोडाक्कट कन्नान पेरुवन्नान के बारे में है। थेय्यम के इतिहास के सर्वोत्तम कलाकार आदिमणिकंदन की अगली पीढ़ी के इस कलाकार ने कला के हर क्षेत्र में अपनी पकड़ बनाई है। पेरुवन्नान ने थेय्यम की कलात्मक मूल्यों और महत्वों को संरक्षित रखने में अपना योगदान दिया। साथ ही इस और विषय का ध्यान आकृष्ट कराया है। उनके पिता कुट्टिअम्मु मनक्कडन भी थेय्यम से जुड़े कलाकार और जाने-माने आयुर्वेदिक वैद्य थे। और इसीलिए पेरुवन्नान ने बचपन से ही स्थानीय तौर पर चिकित्सा का गुण भी सीखा है। वह



प्रसिद्ध बाल रोग विशेषज्ञ हैं। साथ ही 'दौरा आने' से संबंधित इलाज के लिए प्रसिद्ध हैं।

DEVANARTHAKAN

Malayalam/35 mm/30 min

Producer: Kerala State Chalchitra Academy;

Director: Sudish Gopalakrishnan;

The film is about Kodakkatt Kannan Peruvannan, one of the best-known artistes of Theyyam, the performing ritual art of North Kerala. He has supreme command in every sphere of the art, being in the lineage of Adi Manikandam who was the most outstanding performer in the history of Theyyam. Peruvannan has contributed a great lot in conserving and disseminating the essence and artistic values of this practice and bringing global attention to it. His father Kuttiampu Manakkadan was also a maestro of Theyyam and a well-known Ayurvedic physician, and so Peruvannan learnt the esoteric lessons of local medical practice from childhood. He is famous for his pediatrics and treatment for epilepsy.

फ्राम दी लैंड आफ बुद्धिज्म टू दी लैंड आफ बुद्ध

(अंग्रेजी/35 एमएम/20 मिनट)

निर्माता-कुलदीप सिन्हा, फिल्म डिवाजन

निर्देशक-शालिनी शाह

यह फिल्म भारत में रह रहे तिब्बतवासियों की संस्कृति, रीति-रिवाजों और सामाजिक-आर्थिक परंपराओं को चित्रित करती है।



FROM THE LAND OF BUDDHISM TO THE LAND OF BUDDHA

English/35 mm/20 min

Producer: Kuldip Sinha, Films Division;

Director: Shalini Shah;

The film depicts the realistic and pictorial depiction of the culture, traditions and socio-economic traditions of Tibetans in India.

इंफिल्ट्रेटर्स

(अंग्रेजी/16 एमएम/52 मिनट)

कार्यकारी निर्माता-निर्देशक-उर्मी चक्रवर्ती

यह फिल्म भारत-बंगलादेश सीमा पर घुसपैठ की समस्या को उजागर करती है। इस समस्या को मानवीय संदर्भ में सुलझाने की आवश्यकता है।



INFILTRATORS

English/16 mm/52 min

Executive Producer-Director: Urmi Chakraborty

The film highlights the infiltrators problem on the India-Bangladesh border, the illegal migration of Bangladeshis into India and the urgent need to address this issue on humanitarian grounds.

लोकप्रिय

(हिन्दी-अंग्रेजी/35 एमएम/25 मिनट)

कार्यकारी निर्माता-निर्देशक-अरुण वसंत खोपकर; संपादक-संकल्प मेशराम

लोकप्रिय हिन्दी फिल्म संगीत का संगम है। इसे फिल्म पोस्टर्स, म्यूजिक शॉप के लोगों, डिस्कोथेक्स में नृत्य करने वालों और मुंबई की नुक्कड़ों पर फिल्माया गया है। इसमें हिन्दी फिल्म के संगीत निर्देशकों में सर्वाधिक सम्मानित नाशद अली, फिल्मों के गीतकार तुषार भाटिया, तौफिक कुरैशी और संगीत-निर्देशक वीजू शाह का व्यापक इंटरव्यू शामिल किया गया है। उन लोगों ने हिन्दी फिल्म संगीत के प्रारंभ, विभिन्न गीतकारों के योगदान, फिल्म निर्माता राजकपूर, पंडित रवि शंकर, फिल्मी संगीत पर संगीत से जुड़ी विभिन्न संस्कृतियों, इलेक्ट्रानिक्स के महत्व और मार्केट की स्थितियों के बारे में जानकारी दी है।



LOKAPRIYA

Hindi-English/35 mm/28 min

Executive Producer-Director: Arun Vasant Khopkar; Editor: Sankalp Meshram

Lokapriya deals with confluence in Hindi Film Music. This is done through shots of illuminated film posters, people in music shops, people dancing in discotheques, and on the streets of Mumbai. There are extensive interviews of Naushad Ali,

doyen of the Hindi film music directors; Tushar Bhatia, a film composer and scholar; Taufique Qureshi, a performer; and music director Viju Shah. They speak about the beginnings of Hindi film music from performances of mythology on stage, the work and contribution of different composers, filmmaker Raj Kapoor, Pandit Ravi Shankar, the influence of various musical cultures on film music, the importance of electronics over visuals, and market conditions.

महानंदा

(बंगाली/35 एमएम/45 मिनट)

निर्माता-फिल्म प्रभाग

निर्देशक-मणिक दास

लैला बीबी के पास अनु नामक साढ़े चार वर्ष का एक बेटा है और वह गर्भवती भी है। वह गर्भपात करना चाहती है लेकिन उसकी सास जोहरा बीबी और उसका पति ऐजुदी इसके खिलाफ हैं। वह अपने पति को बताती है कि उसे चार बार स्वतः गर्भपात हो चुका है। तब उसका पति उसकी डाक्टरों जांच के लिए सहमत हो जाता है। वह एक बच्ची को जन्म देती है जिसका नाम नीलोफर रखा जाता है। गांव की परिषद में लैला को डायन (जादूगरनी) की संज्ञा दी जाती है। लोग उसपर पत्थर मारना शुरू कर देते हैं। पति और बच्चों के साथ लोगों के भय से भागते-भागते वह महानन्दा नदी में कूद जाती है। वहां



वह अपने बेटे अनु को भी खो देती है। नीलोफर को लैला की सहेली मधु के पास पालन-पोषण के लिए भेजा जाता है और वह कालांतर में डाक्टर बन जाती है। मधु उसे अपने ही गांव में डाक्टरों पेशा करने की सलाह देती है।

MAHANANDA

Bengali/35 mm/45 min

Producer: Films Division; **Director:** Manik Das

Laila Bibi already has one four-and-a-half year old son Anu and is pregnant. She wants to abort, but her mother-in-law Johra Bibi and husband Aijuddi are opposed to this. She tells him of the four miscarriages she had, and so he finally agrees to go for a medical check-up. She gives birth to a girl, Nilofer, but undergoes tubectomy. In the Village Council, Laila is termed a witch and while running away with her husband and children from the people who are stoning her, they jump into the river Mahananda, where she loses her son Anu. Nilofer is sent for upbringing to Laila's friend Madhu, and gradually becomes a doctor. She is advised by Madhu to work in the village to which she belongs.

मीना झा

(हिन्दी/35 एमएम/38 मिनट)

निर्माता - सत्यजीत रे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता; निर्देशक-अंजलिका शर्मा

बिहार से कोलकाता आने वाली मीना झा और पूर्णतः शहरी बंगाली आयशा बनर्जी दोनों एक कान्वेंट स्कूल में दोस्त हैं। आयशा अपनी कृतियों के सपनों में खोई रहती है और उसके लिए प्रयासरत भी रहना चाहती है लेकिन मीना एक कम दिमाग वाली लड़की है जो अपने दोस्त पर विश्वास करती है। यह फिल्म एक दूसरे के



अनुभवों, यादगार क्षणों, सपनों और वास्तविकताओं को विभिन्न रूपों में दर्शाता है।

MEENA JHA

Hindi/35 mm/38 min

Producer: Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata; **Director:** Anjalika Sharma

Meena Jha, who came to Kolkata from Bihar, and Ayesha Banerjee who is a thoroughbred urban Bengali, are friends in a Convent School. Ayesha lives in a dream world of her own creation and always wants something to stimulate her, but Meena is a simpleton who believes her friend. The film is a collage of shared experiences, memories, dreams and realities in a city just waking up to satellite television with its confused images.

पश्मीना रॉयल

(अंग्रेजी/इस्टमैन कलर/35

एमएम ब्लो अप/25 मिनट)

निर्माता-निर्देशक-बप्पा राय; **कैमरा-**अदीप टंडन
कश्मीरी बुनकारी कशीदाकारी के प्रसिद्ध इतिहास में पश्मीना से सुंदर और दूसरा उदाहरण नहीं है। मुगल शासन काल से शुरू होकर अफगान, सिख और डोगरा शासनकालों तक अपनी प्रसिद्धि बिखेरने वाली कला का विकास 300 वर्षों तक हुआ और इसका चरमोत्कर्ष 'यूरोपियन रायल्टी' के समय था। बुनाई तो येन-केन प्रकारेण जारी रहा लेकिन बुनकारी कला धीरे-धीरे गायब हो गयी। असली 'कानी' तकनीक का स्थानीय सोजनी या कशीदाकारी तकनीक ने ले लिया। लेकिन हमें जम्मू कश्मीर स्टेट हैंडलूम डेवलपमेंट कारपोरेशन का शुक्रगुजार होना चाहिए



कि पश्मीना पूर्णतः हाथ से बुना गया है तथा इसकी गुणवत्ता वर्षों पूर्व बनु गये पश्मीना की तरह ही बरकरार है और अस्तित्व खो रहे कला को बचाने में मददगार है।

PASHMINA ROYALE

English/Eastman Colour/35mm blow up/
25 min

Producer-Director: Bappa Ray; **Camera:** Adeep Tandon;

Nothing epitomises the glorious history of Kashmiri craftsmanship as warmly and beautifully as Pashmina. A legacy of the Moghuls, it evolved over three hundred years under the patronage of four different dynasties -the Moghuls, the Afghans, the Sikhs and the Dogras - reaching its zenith with European royalty. While the fabric survived, the craft gradually perished. The original kani technique has been replaced by the sozni or embroidery technique. But thanks to the Jammu and Kashmir State Handloom Development Corporation, pashmina wool is handspun and handwoven in Kani Village in the same painstaking way that it has been for hundreds of years.

रसिकप्रिया

(अंग्रेजी-हिन्दी/35 एमएम/29 मिनट)

निर्माता - संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय;

निर्देशक - अरुण बसंत खोपकर

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के समागम पर आधारित यह फिल्म टिप्पणी से परे है। यह फिल्म तस्वीरों व आकृतियों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के इतिहास को प्रतिबिंबित करता है। फिल्म निर्माता ने पुरानी भीमबेटका गुफाओं, मौलिक उपकरणों और ध्वनियों, गुफा पेंटिंग, वैदिक मंत्रोच्चारण से निकले संगीत के सुरों और ध्रुपद का भी समायोजन किया है। ध्रुपद पर पारसी, अरबी, अफगानी और तुर्की संगीत के प्रभावों ने ख्याल गायिकी को जन्म दिया।



इसमें तराना, राग काफी विभिन्न घरानों और संगीत के नाद का भी मूल्यांकन इसमें दिखाया गया है।

RASIKPRIYA

English-Hindi/35 mm/29 min

Producer: Joint Secretary, Ministry for

External Affairs; **Director:** Arun Vasant Khopkar

This film on the confluence of Hindustani classical music has no commentary and traces the history of this music through images. The filmmaker shows old Bheembetka caves, primitive instruments and sounds, cave paintings, the first musical note by way of Vedic chanting, and evolution of Dhrupad classical devotional music. The advent of Muslim rule with influences of Persian, Arabic, Afghani, and Turkish music into dhrupad gave birth to the khayal. The elements including the climate influenced music as in raga Basant. The evolution of the tarana, raga Kaafi, the various Gharanas, and the vibrancy of the music is also shown.

स्क्रिबल्स ऑन अक्का

(कन्नड़-हिन्दी-अंग्रेजी/35 एमएम/60 मिनट)
निर्माता-फ्लेविया एग्नेस; स्क्रिप्ट और निर्देशन-मधुश्री दत्ता; गीत निर्माण-इलायाराजा; कैमरा-ए मुकुल किशोर व आर.वी. रमानी; संपादन-श्यामल कर्मकार; पार्श्व संगीत-शांतनु मित्रा; कलाकार-सीमा विश्वास, सावित्री हेसनाम

यह छोटी फिल्म बारहवीं सदी की कवि महादेवी अक्का के बारे में है। उनकी मूल कविताएं महिलाओं पर आधारित हैं। भगवान की खोज में घरेलू जीवन त्यागनेवाली महादेवी अक्का ने वस्त्र भी त्याग दिया था। यह फिल्म ऐसे तथ्यों का अर्थ और इस प्रकार के कलाकारों का साहित्यिक कार्य प्रस्तुत करता है। यह फिल्म विद्रोह, स्त्रीत्व और



त्याग को परिलक्षित करता है।

SCRIBBLES ON AKKA

Kannada-Hindi-English/35 mm/60 min

Producer: Flavia Agnes; **Script & Direction:** Madhusree Dutta; **Song Composition:** Illayaraja; **Camera:** A Mukul Kishore, R V Ramani; **Editing:**

Shyamal Karmakar; **Background music:** Shantanu Mitra; **Main artistes:** Seema Biswas, Sabitri Heisnam

This short film is about the twelfth century ascetic poet Mahadevi Akka. Her radical poems were written with the female as a metaphor. Mahadevi Akka, while leaving the domestic arena in search of God, also abandoned clothing. The film explores the meaning of this denial through visual arts and literary works of contemporary artists. The film is a celebration of rebellion, femininity and legacy down nine hundred years.

दी लैंडस्केप

(केवल संगीत/35 एमएम/2.5 मिनट)

निर्माता-बंकिम, फिल्म डिवीजन;
निर्देशक-रवि जाधव

प्रकृति ने हमें इतना सब कुछ दिया है। लेकिन आदमी के पास कृतज्ञता का अभाव है अपनी लालसा की पूर्ति के लिए मनुष्य सुंदर प्राकृतिक संरचना का विनाश कर अपनी कब्र स्वयं खोद रहा है।



THE LANDSCAPE

Only music/35 mm/2.5 min

Producer: Bankim, Films Division;
Director: Ravi Jadhav;

Nature has given so much. But man has no gratitude. By his greed, he is tearing the beautiful landscape and digging his own grave. The film is a visual narration of nature's beautiful landscapes turning into modern urban horrors.

टी नेस्ट

(बंगाली/35 एमएम/38 मिनट)

निर्माता-सुमित्र मित्रा एवं श्रेयोसी दास; **स्क्रिप्ट एवं निर्देशन**-सुप्रियो सेन; **कैमरा**-प्रेमेन्दु विकास चाकी; **साउण्ड रिकार्डिंग**-अब्दुल रज्जाक; **संपादन**-देवकांत चक्रवर्ती; **संगीत**- कनिष्का सेन एवं नील दत्ता; **सारउण्ड री-रिकार्डिंग**-चिन्मय नाथ

यह फिल्म विश्व जैव संरक्षण कोष की खोज के आधार पर जतिन महतो के हृदय गिर्द घूमती है। पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के केदुआ गांव में रहने वाले महतो हर साल अपने बगीचे में जून में आने वाले हजारों स्टीकर्स चिड़ियां पक्षियों की देखभाल करता है तथा पक्षियों की मेजबानी करता है। यह पक्षी जतिन के घर के पास की



कालोनियों में गर्भाधान एवं प्रजनन क्रिया करते हैं।

THE NEST

Bengali/35 mm/38 min

Producer: Sumit Mitra & Sreyoshi Das;
Script & Direction: Supriyo Sen;
Camera: Premendu Bikash Chaki; **Sound**

recording: Abdul Rajjak; **Editing:** Debkanta Chakraborty; **Music:** Kanishka Sen & Neel Dutta; **Sound re-recording:** Chinmoy Nath

The film made as a result of a World Wildlife Fund investigation tells the extraordinary story of Jatin Mahato, who lives in Kendua village in Midnapur District of West Bengal. Jatin and his family tend and play host to thousands of open-billed storks who arrive in the month of June in Jatin's garden and breed virtual colonies in the trees adjacent to the house. Jatin and his ancestors have been tending these seasonal guests with care and respect.

ट्राइबल वुमेन आर्टिस्ट

(हिन्दी/35 एमएम/17 मिनट)

निर्माता-कुलदीप सिन्हा, फिल्म डिवीजन

निर्देशक-ब्रज भूषण

यह फिल्म बिहार के हजारीबाग की आदिवासी महिलाओं की कार्यकुशलता उनके पेंटिंग्स द्वारा प्रस्तुत करती है। यह पेंटिंग पारंपरिक रेखाचित्रों के आधार पर बनी होती है।



TRIBAL WOMEN ARTISTS

Hindi/35 m/17 min

Producer: Kuldip Sinha, Films Division;
Director: Braj Bhushan

The film depicts the creative instincts and abilities of tribal women of Hazaribagh in Bihar through the paintings, drawing and sketches done traditionally.

तुलसी

(समाचार पत्रिका)

(अंग्रेजी/35 एमएम/13 मिनट)

निर्माता-भानुमूर्ति अलुर, फिल्म प्रभाग
निर्देशक-राजगोपाल राव

यह फिल्म बहुमूल्य वातावरण संरक्षण के लिए वनों को फिर से उगाने से संबंधित तुलसी के निष्काम और स्वार्थ रहित अभियान की कहानी को दर्शाता है।



TULASI

(NEWS MAGAZINE 438)

English/35 mm/13 min

Producer: Bhanumurthy Alur, Films Division; **Director:** Rajgopal Rao

The film portrays the story of a lone crusader: the aged tribal woman Tulasi's single-handed selfless crusade against deforestation and the resultant participation of people in preserving forests.

वैदिक गणित

(अंग्रेजी/35 एमएम/10 मिनट)

निर्माता-भानुमूर्ति अलुर फिल्म प्रभाग
निर्देशक-के. जगजीवन राम

वैदिक गणित वेदों से व्युत्पन्न प्राचीन विज्ञान है। वैदिक गणित की शिक्षा प्राप्त करने से अनेक लाभ हैं। गणना करने के अनेक तरीकों एवं साधारण विधियों के परिणामस्वरूप गणित पढ़ाते वक्त परेशानी समाप्त हो जाती है।



VEDIC MATHEMATICS

English/35 mm/10 min

Producer: Bhanumurthy Alur, Films Division; **Director:** K. Jagjivan Ram

Vedic Mathematics is an ancient science derived from the Vedas. There are various advantages of learning Vedic Mathematics. Their simplicity and several methods of calculations relieve the anxiety faced in teaching mathematics all over the world.

वर्मी कल्चर

(हिन्दी/35 एमएम/9 मिनट)

निर्माता-कुलदीप सिन्हा, फिल्म प्रभाग
निर्देशक-ए.आर. शरीफ

इस फिल्म में अर्थवर्म्स के बारे में बताया गया है जो मानव और जंतुओं द्वारा छोड़े गए कार्बनिक बेकार पदार्थों से अपना भोजन लेता है। यह बेकार कार्बनिक पदार्थ कार्बनिक खाद के रूप में बदल जाता है जिसे वर्मी कंपोस्ट कहते हैं।



VERMI CULTURE

(NEWS MAGAZINE 424)

Hindi/35 mm/9 min

Producer: Kuldip Sinha, Films Division;
Director: A. R. Sharief

This film depicts earthworms, which feed on organic debris to eliminate the organic waste accumulated by other animals and human beings. The organic waste, which is converted into organic manure, is known as Vermicompost.

वियरिंग द फेस

(अंग्रेजी/35 एमएम/14 मिनट)

निर्माता-बंकिम फिल्म प्रभाग;
निर्देशक-जोशी जोसेफ

इस फिल्म के सहारे मणिपुर के रिक्शाचालकों द्वारा नकारों से अपना चेहरा छिपाने के कारणों को प्रदर्शित किया गया है। मणिपुर का सामाजिक परिधान, आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकता और सामूहिक समरसता को चश्मदीदगवाह के रूप में इस फिल्म में बताया गया है।



WEARING THE FACE

English/35 mm/14 min

Producer: Bankim, Films Division;
Director: Joshy Joseph

This film has probed the face behind the masked faces of the Manipuri Rickshaw Pullers in a humane manner. The social fabric, the collective psyche and the economic and political realities of Manipur emerge as a resultant of this lens-eyewitness account.

